16 जून 2025
सोमवार

केशव टाइम्स
डिजिटल संस्करण

आपकी आवाज

बाबा साहब का अपमान पड़ा भारी, राज्य एससी एसटी आयोग ने लालू यादव पर लिया संज्ञान

4

प्रमुख खबरें : दिल्ली ■ पटना ■ बक्सर ■ शाहाबाद ■ मगध ■ सारण ■ मिथिलांचल ■ चंपारण ■ पूर्वांचल ■ लखनऊ

कहर बनकर गिरी आकाशीय बिजली, एक ही परिवार के चार लोगों समेत 7 की मौत

एजेंसी/प्रयागराज

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज, संभल और बिजनौर जिलों में रविवार को आकाशीय बिजली गिरने से कुल सात लोगों की मौत हो गयी। कई अन्य घायल हो गये। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। प्रयागराज के यमुना नगर इलाके में कथित तौर पर आकाशीय बिजली गिरने से एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। एक अधिकारी ने बताया कि घटना शनिवार देर रात बारा तहसील के सोनवर्षा हल्लाबोर गांव में उस समय की है जब विरेंद्र वनवासी अपने परिवार के साथ छप्पर के नीचे सो रहे थे तभी आकाशीय बिजली गिरी। अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) विनीता सिंह ने बताया कि झुलसने के कारण विरेंद्र, उनकी पत्नी पार्वती, बेटी राधा और बेटी करिश्मा की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। सम्भल के गुन्नौर तहसील क्षेत्र में रविवार को आकाशीय बिजली गिरने से 18 वर्षीय युवती की मौत हो गई जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए। गुन्नौर की एसडीएम वंदना मिश्रा ने बताया कि मोलनपुर डांडा में अतर सिंह अपने परिजनों के साथ खेत में काम कर रहे थे तभी आकाशीय बिजली गिरने से उनकी बेटी रत्नेश कुमारी (18) की मौत हो गई जबकि उनका बेटा राजेश (32) और पुत्रवधू किशनावती (28) घायल हो गई।

सोनिया गांधी की तबीयत बिगड़ी, दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में भर्ती

जांच

- सोनिया गांधी पेट से संबंधित समस्या के कारण उन्हें गैस्ट्रो विभाग में भर्ती कराया गया है और वह डॉक्टरों की निगरानी में हैं
- फरवरी माह में भी उनकी तबियत हुई थी खराब

केटी न्यूज/नई दिल्ली

कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी की तबीयत रविवार को कथित तौर पर बिगड़ने के बाद उन्हें दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूत्रों से पता चला है कि डॉक्टरों की एक टीम उनकी हालत पर कड़ी निगरानी रख रही है। हालांकि, अस्पताल की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक मेडिकल बुलेटिन जारी नहीं किया गया है। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी आज दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल पहुंचीं। कुछ विशेष जांच और परीक्षण के लिए उन्हें यहां आना पड़ा। बता दें कि सोनिया गांधी पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रही हैं। इससे पहले 7 जून को भी सोनिया गांधी की तबीयत बिगड़ गई थी जिसके बाद उन्हें शिमला के अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सोनिया गांधी 78 साल की हो गई हैं जिसके चलते उन्हें उम्र संबंधित समस्याएं भी परेशान करती हैं। इससे पहले भी फरवरी में उन्हें सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उस समय उन्हें पेट की समस्या हुई थी। उनका पूरा करने के बाद उन्हें अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया था। इसके बाद वह स्वस्थ्य चल रही थी। लेकिन, अचानक रविवार की देर शाम उन्हें तकलीफ हुई। उसके बाद उन्हें सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हालांकि अस्पताल ने अभी तक कोई बुलेटिन जारी नहीं किया है। वहीं 2022 में सोनिया गांधी को कोरोना संक्रमण भी हुआ था जिसके बाद वह काफी दिनों तक बीमार रही थीं। बता दें कि सोनिया गांधी ने अमेरिका में गर्भाशय के कैंसर का भी इलाज करवाया था।

पूर्व में शिमला के अस्पताल में भी हुई थी भर्ती

पूर्व में शिमला में बेचैनी की शिकायत के बाद सोनिया गांधी को अस्पताल ले जाया गया था। विशेषज्ञ डॉक्टरों की एक टीम उनकी चिकित्सकीय जांच कर रही थी। आईजीएमसी के एक वरिष्ठ डॉक्टर ने पुष्टि की कि सोनिया गांधी को जांच के लिए अस्पताल लाया गया था और उनकी पूरी चिकित्सकीय जांच की गई। उनका रक्तचाप थोड़ा बढ़ा हुआ था, लेकिन उनकी हालत स्थिर बताई गई। हिमाचल प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री धनी राम शांडिल और मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना भी अस्पताल पहुंचे थे। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू, जो ऊना के दो दिवसीय दौरे पर थे, ने भी अपना दौरा बीच में छोड़कर शिमला लौट आए थे। हालांकि बाद में उनकी स्थिति में सुधार हो गया था। वह नई दिल्ली वापस लौट आई थी। इसके बाद पूरी तरह से स्वस्थ्य थी।

खबरें फटाफट

महाराष्ट्र के कई हिस्सों में भारी बारिश से आठ की मौत

मुंबई। महाराष्ट्र के कई हिस्सों में भारी बारिश से आठ लोगों की मौत हो गई है। इनमें से अधिकतर मौतें आकाशीय बिजली गिरने की वजह से हुई हैं। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। मौसम विभाग ने तटीय जिलों रत्नागिरी और रायगढ़ के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। पालघर, ठाणे और सिंधुदुर्ग के साथ-साथ पुणे, सतारा और कोल्हापुर के घाट इलाकों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल की टीमें राहत और बचाव कार्यों के लिए तैनात की गई हैं।राज्य आपदा प्रबंधन की रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 24 घंटों में सुबह 11 बजे तक रत्नागिरी में सबसे अधिक 88.1 मिमी बारिश हुई। इसके बाद रायगढ़ में 65.3 मिमी, सिंधुदुर्ग में 43.8 मिमी, ठाणे में 29.6 मिमी और यवतमाल में 27.5 मिमी बारिश दर्ज की गई। कोकण क्षेत्र की प्रमुख नदियों में से रत्नागिरी जिले की जगबुड़ी नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। आपदा प्रबंधन की रिपोर्ट के अनुसार, नदी के किनारे बसे खेड़, अलसुरे, चिंचघर और प्रभुवाडी गांवों पर खतरा बढ़ सकता है अगर जलस्तर और अधिक बढ़ता है। अधिकारियों के अनुसार, राज्य के अलग-अलग हिस्सों में अब तक कुल आठ लोगों की जान जा चुकी है।

कुंडमाला, मावल तहसील का है प्रसिद्ध पर्यटन स्थल, रविवार को भारी बारिश के बाद नदी का बढ़ा गया जलस्तर

पुणे के इंद्रायणी नदी पर बने लोहे का पुल ढहने से 6 की मौत, 30 से अधिक पर्यटक बहें, पीएम ने घटना की ली जानकारी

- पुल की गुणवत्ता पर उठ रहे सवाल
- एनडीआरएफ की टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर बचाव कार्य किया शुरू

एजेंसी/पुणे

महाराष्ट्र के पुणे जिले के कुंडमाला क्षेत्र में रविवार को इंद्रायणी नदी पर बना लोहे का पुल अचानक ढह गया। जिससे अफरा-तफरी मच गयी। इस हादसे में 6 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई वही 30 से ज्यादा पर्यटक पानी के तेज बहाव में बह गए। पुल की जर्जर स्थिति और भारी भीड़ के कारण यह हादसा हुआ। बता दें कि कुंडमाला, मावल तहसील का यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, जहां रविवार को भारी बारिश के कारण नदी का जलस्तर बढ़ गया था। लोहे के पुल पर उस वक्त करीब 100 लोग मौजूद थे, जो नदी के बढ़ते जलस्तर और बहाव को देखने आए थे। तभी अचानक पुल का एक हिस्सा पानी के तेज बहाव में ढह गया। लोहे के पुल पर चढ़े पर्यटक भी नदी में गिर कर बहने लगे। इस दौरान मौके पर अफरा-तफरी की स्थिति बन गई। लोग अपनी-अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन 6 लोग इस कोशिश में नाकाम हो गये। उनकी मौके पर ही मौत हो गयी। वही दो दर्जन से ज्यादा लोग पानी की तेज बहाव में बहते चले गये। इस घटना के बाद लोगों का कहना है कि पुल पहले से ही जर्जर स्थिति में थी। पर्यटकों की भारी भीड़ और पानी के तेज बहाव के चलते लोहे का पुल सहन नहीं कर सका और वह पानी की तेज धारा से बह गया। अब इस पुल की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। घटना की सूचना मिलते ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने अधिकारियों से संपर्क किया और बचाव कार्यों की निगरानी की। एनडीआरएफ की टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर बचाव कार्य शुरू किया। अब तक 6 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि कई अन्य घायल हैं वही कुछ लोग लापता हो गये हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और कहा कि लापता लोगों की तलाश के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने पुल के ढहने के कारणों की जांच के आदेश दिए हैं और कहा है कि दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। सीएम ने निर्देश जारी करते हुए कहा है कि पहले सभी घायलों का प्राथमिक उपचार किया जाए। किसी तरह कोई कमी नहीं होनी चाहिए।

तेलंगाना: गोदावरी नदी में पांच युवकों की डूबकर मौत

तेलंगाना के निर्मल जिले में रविवार को एक दर्दनाक हादसे में पांच युवकों की गोदावरी नदी में डूबने से मौत हो गई। पुलिस ने इस घटना की पुष्टि की है। यह हादसा प्रसिद्ध मंदिर नगर बसर में उस समय हुआ जब वे सभी नदी में पवित्र स्नान के लिए उतरे थे। मृतक सभी एक ही परिवार के सदस्य थे और हैदराबाद के चिंताल इलाके के निवासी थे। यह परिवार मूल रूप से राजस्थान से है और कुल 18 लोग बसर स्थित सरस्वती मंदिर में दर्शन और नदी स्नान के लिए आए थे। स्नान करते समय कुछ युवक गहरे पानी में चले गए और डूबने लगे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, युवकों को पानी की गहराई का अंदाजा नहीं था। बताया जा रहा है कि हाल ही में ऊपरी क्षेत्रों में हुई बारिश के कारण गोदावरी नदी का जल स्तर बढ़ गया था, जिससे हादसे की आशंका और अधिक हो गई। मृतकों की पहचान राकेश, विनोद, मदन, रुतिक और भरत के रूप में हुई है, जिनकी उम्र 20 वर्ष से कम बताई जा रही है। सभी शवों को स्थानीय सरकारी अस्पताल में भेजा गया है।

गौरीकुंड में हेलीकॉप्टर क्रैश, 5 लोगों की मौत

रुद्रप्रयाग। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के गौरीकुंड क्षेत्र में केदारनाथ धाम से फाटा जा रहा आर्यन कंपनी का हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया, जिसमें सवार पांच लोगों की मौत हो गई है। हादसा सुबह 5:30 बजे हुआ और प्रारंभिक जांच में खराब मौसम को कारण बताया जा रहा है। एनडीआएएफ की टीम तुरंत मौके पर पहुंचीं और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया है। हेलिकॉप्टर नोडल अधिकारी राहुल चौबे और जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने हादसे की पुष्टि की है। स्थानीय नेपाली मूल की महिलाओं, जो गौरीकुंड के जंगल में घास काट रही थीं, उन्होंने क्रैश की सूचना दी। हेलिकॉप्टर केदारनाथ से फाटा हेलीपैड की ओर जा रहा था, लेकिन घने कोहरे और खराब दृश्यता के कारण यह हादसा हो गया। मलबे में फैले धुएं का गुबार दूर से दिखाई दे रहा था। अभी तक मृतकों की पहचान नहीं हो सकी है और पुलिस-प्रशासन शवों को निकालने और उनकी शिनाख्त में जुटा है। मृतकों की संख्या में इजाफा भी संभव है।

अमेठी में एंबुलेंस-पिकअप की भीषण में बिहार के 5 लोगों की मौत

अमेठी। उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर एक दिल दहलाने वाला हादसा हुआ है। शुकुल बाजार थाना क्षेत्र के माइल स्टोन 59.70 के पास एक एम्बुलेंस और तेज रफ्तार पिकअप की आमने-सामने टक्कर में बिहार के पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया है। एम्बुलेंस में सवार लोग लखनऊ के एक निजी अस्पताल से अपने परिजन का शव लेकर बिहार लौट रहे थे। जानकारी के मुताबिक एम्बुलेंस लखनऊ से बिहार की ओर जा रही थी, शुकुल बाजार के पास सामने से आ रही पिकअप से उसकी जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि एम्बुलेंस पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार छह लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर मौजूद राहगीरों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। जिसके बाद बाजार शुकुल पुलिस, यूपी एक्सप्रेसवेज इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी की टीम और स्थानीय प्रशासन ने राहत कार्य शुरू किया। पांच लोगों की जान कुछ देर में ही चली गई, जबकि एक घायल को बाजार शुकुल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया, जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। बाजार शुकुल थाना प्रभारी अभिनेश कुमार ने बताया कि मृतकों की पहचान की कोशिश जारी है और उनके परिजनों को सूचना दे दी गई है।

छुट्टी नहीं मिलने पर बीएसएफ कांस्टेबल ने सहकर्मी को मारी 13 गोलियां, हुई मौत

एजेंसी/मुर्शिदाबाद

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के समसेरगंज इलाके में सीमा सुरक्षा बल के एक जवान ने अपने ही साथी की गोली मारकर हत्या कर दी। यह घटना ड्यूटी के दौरान हुई। मारे गए जवान का नाम रतन लाल सिंह था, जो राजस्थान का रहने वाला था और 55 साल के थे।

बताया जाता है कि आरोपी जवान का नाम शिवम कुमार मिश्रा है, जो छत्तीसगढ़ से है और 29 साल का है। वह चार साल पहले बीएसएफ में भर्ती हुआ था और रतन लाल को रिपोर्ट करता था। पुलिस के मुताबिक, झगड़ा इसलिए हुआ क्योंकि मिश्रा को अपनी गर्भवती पत्नी से मिलने के लिए छुट्टी नहीं मिल रही थी। इसी गुस्से में आकर उसने अपनी सर्विस राइफल से 13 राउंड फायर कर दिए। कई गोलियां रतन सिंह के पेट में लगीं। पीड़ित को जंगीपुर उप-मंडलीय अस्पताल भेजा गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

केन्या से केरल पहुंचे पांच भारतीयों के शव, अफ्रिकी देश में छुट्टी मनाने के दौरान सड़क हादसे में गई थी जान

एजेंसी/तिरुवनंतपुरम

केन्या में सड़क हादसे में जान गंवाने वाले पांच भारतीयों के शव रविवार को केरल पहुंचे। सभी भारतीय छुट्टियां मनाने केन्या गए थे और वहां न्यांदरुआ काउंटी में सड़क हादसे का शिकार हो गए। मृतकों के शव कतर से आई उड़ान से यहां नेदुम्बस्सेरी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे। मृतकों में डेढ़ और सात साल के दो बच्चे भी शामिल हैं। उद्योग मंत्री पी राजीव, अधिकारियों तथा मृतकों के रिश्तेदारों ने शव प्राप्त किए। उद्योग मंत्री ने पार्थिव शरीर पर पुष्प चढ़ाए और राज्य सरकार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। मृतकों में जसना (29), उनकी बेटी रूही मेहरीन (1.5), गीता शोजी इसाक (58), रिया एन (41) और उनकी बेटी तीरा रोड्रिग्स (7) शामिल हैं। उन्होंने कहा कि पीत ज्वर टीकाकरण प्रमाण पत्र को लेकर समस्या सामने आई थी, लेकिन मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने मामले में हस्तक्षेप किया और इसे माफ कराने में मदद की। रिश्तेदारों को प्रोटोकॉल के अनुसार अंतिम संस्कार की व्यवस्था करने के सामान्य निर्देश दिए गए थे। मंत्री ने तीन घायल व्यक्तियों से भी मुलाकात की है और उन्हें शीघ्र ही अस्पताल में भर्ती कराया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि मृतक मूवट्टुपुझा, मावेलिककारा और पलक्कड़ के रहने वाले हैं।

वन्य जीव संरक्षण गणना प्रदेश की योगी सरकार की प्राथमिकता में है शामिल

उत्तर प्रदेश में वार्षिक वन्य जीव गणना पूरी, जल्द रिपोर्ट होगी जारी

एजेंसी/लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार प्रदेश के वन्य जीवों के संरक्षण को लेकर गंभीर है। इसी कड़ी में प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों, वन्य जीव विहारों और बफर जोन क्षेत्रों में वार्षिक वन्य जीव गणना का काम 26 मई से 14 जून तक सम्पन्न हो चुका है। अब इस सर्वेक्षण की फाइनल रिपोर्ट जून के अंत तक जारी की जाएगी। वन्य जीवों की संख्या और उनके स्वास्थ्य की जानकारी जुटाने के उद्देश्य से की जाने वाली इस गणना में इस बार विशेष रूप से बारहसिंघा, काला हिरन, चिंकारा, गैण्डा, घड़ियाल, भालू और तेंदुआ शामिल रहे. इसके अलावा हिरन, सांभर, चीतल, नीलगाय, पाढ़ा (बकरी जैसा जंगली जानवर), बंदर और लंगूर जैसे आम शाकाहारी जीवों की भी गिनती की गई। उत्तर प्रदेश का वन क्षेत्र राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 6.15 प्रतिशत है। यह न केवल जैव विविधता को बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, वर्षा संतुलन और वन्य जीवों के सुरक्षित आवास का भी आधार है। दुधवा नेशनल पार्क, कतरनियाघाट, सोहगीबरवा, चंद्रप्रभा और हस्तिनापुर वन्य जीव विहार जैसे क्षेत्रों में सैकड़ों प्रजातियों के जीवों का बसेरा है। इन्हीं क्षेत्रों में हर साल वन्य जीवों की गिनती की जाती है ताकि उनकी आबादी की स्थिति का सही अनुमान लगाया जा सके और संरक्षण की योजना बनाई जा सके. प्रमुख वन संरक्षिका अनुराधा वेमुरी ने बताया कि प्रदेश में यह गणना तीन बार-26 मई, 2 जून और 9 जून को कराई गई. इसके लिए वन कर्मियों के साथ स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षित कर प्रगणक टीमें बनाई गईं। इसके बाद वैज्ञानिक तरीके से डेटा का विश्लेषण कर वन्य जीवों की असली संख्या तय की जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रदेश के सभी मंडलों के मुख्य वन संरक्षकों ने अपने-अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट विभाग को सौंप दी है।

16-06-2025 Final_16-06-2025 Final.qxd 6/15/2025 10:56 PM Page 2

नीट की परीक्षा में बक्सर की छात्राओं ने लहराया परचम, बक्सर की जीविशा को मिला 99.7 पर्सेंटाइल

♦ जिले की तीन व एक प्रवासी समेत कुल चार छात्रों को मिली है सफलता, डॉक्टर बन समाज की सेवा करना चाहते है सभी

केटी न्यूज/डुमरांव

मेडिकल में नामांकन के लिए आयोजित नीट की परीक्षा में जिले की तीन व एक प्रवासी समेत कुल छात्रों ने अपने प्रतिभा का परचम लहराया है। छात्रों के इस प्रदर्शन से एक तरफ उनके परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई है तो दूसरी तरफ छात्रों ने अपनी प्रतिभा से पूरे जिले को गौरवान्वित किया है।

इसी क्रम में कृषि कालेज डुमरांव के कर्मचारी प्रदीप कुमार सिंह की पुत्री सुहानी सिंह ने नीट की परीक्षा में बाजी मार अपना और अपने परिवार का मान बढ़ाया है। उससे जब बात की गई तो उसने बताया की आरंभिक शिक्षा पूर्णिया से ग्रहण करने के बाद मैट्रिक एवं इंटर की परीक्षा वर्ष 2023 मे वाराणसी के टीबीएन कालेज से उर्त्तीण की। बाद में नीट की परीक्षा की तैयारी में जुट गई। वाराणसी के आकाश नामक को कोचिंग संस्था से नीट की प्रतियोगिता परीक्षा को पढ़ाई करते हुए इस साल वर्ष 2025 के चार मई को एनटीए द्वारा आयोजित नीट की प्रतियोगिता परीक्षा में मैं शामिल हुई थी, अब सबकुछ आपके सामने है। वहीं पुत्री की इस सफलता पर माता सविता देवी व पिता प्रदीप कुमार सिंह ने प्रसन्नता जाहिर की है। वहीं सुहानी सिंह ने इस सफलता का श्रेय अपने माता पिता को दी तो दादा के आशीष का परिणाम बताया।

वहीं बक्सर शहर की चीनी मिल निवासी प्रदीप कुमार एवं त्रिलोचना देवी की पुत्री जीविशा कुमारी ने नीट 2025 की परीक्षा में परचम लहराते हुए 99.715 पर्सेंटाइल प्राप्त कर सिर्फ क्वालीफाई ही नहीं किया, बल्कि पूरे जिले का नाम भी रौशन किया है। इनका ऑलइंडिया रैंक 6063 है तो ओबीसी में 2438 रही है। यह सफलता उसने अपने प्रथम प्रयास में ही हासिल किया है। इसके पिता प्रखंड कर्मी तो माता शिक्षिका हैं। जीविशा ने बताया कि वह एक अच्छी डॉक्टर बन समाज की सेवा करना चाहती है। जीविशा की माने तो मेडिकल सेक्टर में उसे शुरू से ही रूचि थी।

वहीं, दूसरी ओर डुमरांव के पुराना भोजपुर निवासी ग्रामीण चिकित्सक डा. भोला केशरी के सुपुत्र सौरव केशरी ने 2025 के नीट परीक्षा में सफलता पाई है, जिसका रैंक 5603 रहा है और उसे सरकारी मेडिकल कॉलेज मिला है।

वहीं, सौरव की सफलता से पूरा परिवार आह्लादित हो उठा है। सौरव के पिता को इस बात का गर्व है कि अभी तक लोग उन्हें ग्रामीण चिकित्सक के तौर पर ही जानते थे, लेकिन अब उनके पुत्र की गिनती एमबीबीएस डॉक्टर के रूप में होगी। उन्होंने बताया कि सौरव को सरकारी कॉलेज मिला है। वहीं, सौरव ने बताया कि वह बचपन से ही अपने पिताजी को देखकर डॉक्टर बनने की सोंचा था, इसी के तहत नीट परीक्षा के लिए कठिन परिश्रम किया था, जिसका परिणाम काफी सुखद रहा।

सत्यापन नहीं कराने पर अनुज्ञप्तिधारियों को लाइसेंस होगा रद्द

नावानगर। आगामी विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर जिला प्रशासन सक्रिय हो गया है। इसी क्रम में नावानगर प्रखंड के अनुज्ञप्ति धारकों के शस्त्रों एवं कारतूसों का शत-प्रतिशत भौतिक सत्यापन की प्रक्रिया भी शुरू होने वाली, जिसको लेकर चौकीदारों को भी सूचना दे दी गई है। इस संबंध में बक्सर समाहरणालय के जिला शस्त्र शाखा द्वारा एक पत्र जारी कर प्रखंड अंतर्गत आने वाले चारों थानों के प्रभारी व अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए हैं। भौतिक सत्यापन का यह अभियान 21 जून से 27 जून तक चलेगा, जिसमें नावानगर, सिकरौल, बासुदेवा एवं सोनवर्षा थाना को शामिल किया गया है। सत्यापन कार्य को सुचारु रूप से संपन्न कराने के लिए संबंधित थानों में दंडाधिकारियों की भी नियुक्ति की गई है। मिली जानकारी के अनुसार नावानगर थाना में स्थानीय सीओ, सिकरौल थाना में स्थानीय बीडीओ,बासुदेवा थाना में सीओ ईटाढ़ी तथा सोनवर्षा थाना में सीओ केसठ को दंडाधिकारियों के रुप में रहेंगे और

सत्यापन कार्य की निगरानी करेंगे। निर्धारित तिथियों को संबंधित अनुज्ञप्तिधारियों को अपने शस्त्र एवं कारतूस सहित स्थानीय थाना में उपस्थित होना अनिवार्य होगा। जिला प्रशासन ने निर्देश जारी कर स्पष्ट किया है कि सत्यापन में अनुपस्थित पाए जाने पर अनुज्ञप्ति रद्द की जा सकती है।

अपनी मां का इलाज कराने गए पूर्व उपचेयरमैन से जीएनएम ने की बदसलूकी

डॉक्टर के कहने के बावजूद जीएनएम ने रजिस्ट्रेशन से किया मना, नहीं दी पर्ची

केटी न्यूज/डुमरांव

♦ ऑपरेटर को भी एक्सरे करने से किया था मना

♦ जिले के वरीय अधिकारियों व स्वास्थ्य मंत्री से शिकायत करेंगे भाजपा नेता

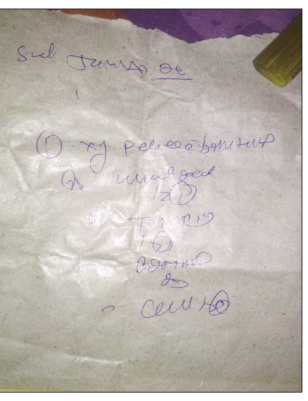

डुमरांव अनुमंडलीय अस्पताल में सामान्य मरीजों के साथ इलाज में लापरवाही व भेदभाव की बातें कई बार सामने आ चुकी है, लेकिन अब अस्पतालकर्मियों का दुस्साहस इतना बढ़ गया है कि सत्तारूढ़ दल के नेताओं से भी दुर्व्यवहार करने व संवेदनहीनता दिखाने से बाज नहीं आ रहे है। जिससे अस्पताल में आम मरीजों के गुणवत्तापूर्ण इलाज पर प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है।

ताजा मामला डुमरांव भाजपा के पूर्व नगर अध्यक्ष चुनमुन प्रसाद वर्मा के साथ हुआ है। वे रविवार को अपनी 90 वर्षीय मां का इलाज कराने अस्पताल गए थे। उनकी मां को पैर में चोट लग गया था। इस दौरान वहां ड्यूटि पर तैनात जीएनएम अनिल कुमार ने रजिस्ट्रेशन करने से साफ मना कर दिया और कहा कि आज रविवार है, आप कल आइए।

केशव टाइम्स से बातचीत के दौरान चुनमुन ने बताया कि उक्त जीएनएम ने संवेदनहीनता व कर्तव्यहीनता के साथ ही उनके साथ अभद्रता भी की। इसके बाद वे ड्यूटि पर मौजूद डॉ. बिरेन्द्र कुमार से मिल गुहार लगाए। उनकी बात सुन तथा मरीज की अवस्था व जख्म को देखते हुए डॉक्टर ने तत्काल जीएनएम को रजिस्टेज्शन करने को कहा, लेकिन जीएनएम ने डॉक्टर की बात को भी अनसुना कर दिया और साफ कहा कि आज मैं किसी के कहने पर भी रजिस्ट्रेशन नहीं करूंगा। इसके बाद डॉक्टर ने एक सादे पर्ची पर मरीज का दवा व एक्सरे लिख दिया। शुरू में तो एक्सरे वाला भी रजिस्ट्रेशन की पर्ची मांग रहा था, लेकिन डॉक्टर के कहने पर वह एक्सरे करने को राजी हुआ। इस दौरान उक्त जीएनएम एक्सरे वाले को भी मना कर रहा था, लेकिन वह बोला कि मुझे डॉक्टर साहब बोले है।

जीएनएम की लापरवाही से गई थी मासूम की जान: भाजपा नेता ने कहा कि वे इसकी शिकायत सीएस, डुमरांव एसडीएम, बीस सूत्री अध्यक्ष व उपाध्यक्ष तथा बक्सर जिलाधिकारी के साथ ही राज्य के स्वास्थ्य मंत्री से भी करेंगे। फिलहाल उन्होंने कई अधिकारियों के व्हाट्सऐप पर अपना आवेदन भेजा है, जिसमें जीएनएम अनिल पर संवेदनहीनता, कर्तव्यहीनता व अभद्रता करने के आरोप लगाए है। इतना ही नहीं अपने आवेदन में उन्होंने जिक्र किया है कि इसी जीएनएम के लापरवाही के चलते दो दिन पहले यूपी के चंदौली निवासी धर्मेन्द्र राय के अबोध बच्चे की इलाज के अभाव में मौत हो गई थी। इस दौरान उसकी मां इलाज करने की गुहार लगाती रह गई थी। जबकि अस्पताल ने अपने रिकार्ड में दर्ज किया था कि बच्चा मरा हुआ ही आया था।

बोले भाजपा प्रवक्ता संवेदनहीन कर्मियों की मंत्री से होगी शिकायत: वहीं, इस मामले में भाजपा के जिला प्रवक्ता शक्ति राय ने कहा कि ऐसे कर्मियों के कारण ही सुशासन की सरकार बदनाम हो रही है। उन्होंने कहा कि एक 90 वर्षीय वृद्धा के इलाज में लापरवाही व संवेदनहीनता बर्दाश्त के काबिल नहीं है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्यकर्मियों की ऐसी संवेदनहीनता बर्दाश्त नहीं की जाएगी, बल्कि जल्दी ही पटना जाकर स्वास्थ्यमंत्री मंगल पांडेय से मिल ऐसे संवेदनहीन कर्मियों को बर्खाश्त करने की मांग करेंगे।

सरकार को बदनाम कर रहे है ऐसे कर्मी

चुनमुन ने कहा कि वे चुप बैठने वाले नहीं है। एक तरफ राज्य सरकार स्वास्थ्य सुविधाओं को आधुनिक बना रही है, ताकी मरीजों को गुणवत्तापूर्ण इलाज मिल सकें। दूसरी तरफ लापरवाह कर्मियों के कारण मरीजों का रजिस्ट्रेशन तक नहीं हो पा रहा है। ऐसे में सवाल उठता है कि जब सत्तारूढ़ दल के नेताओं व सामाजिक कार्यकताओं को भी डुमरांव अनुमंडलीय अस्पताल में इलाज के लिए भटकना पड़ रहा है तो आम लोगों का इस अस्पताल में क्या हश्र हो रहा होगा। गौरतलब हो कि इसके पहले सोमवार को रेडियोलाजिस्ट की लापरवाही के चलते ढाई घंटे तक अल्ट्रा साउंड कक्ष बंद पड़ा था। इस मामले में मीडिया में खबर प्रकाशित होने के बाद सीएस ने उक्त कर्मी पर कार्रवाई के निर्देश दिए है, लेकिन अभी तक उसपर कार्रवाई भी नहीं हुई है कि एक और कर्मी की लापरवाही सामने आ गई है।

उक्त कर्मी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी

“ अभी तक पीड़ित का लिखित आवेदन नहीं मिला है। आवेदन मिलने पर उक्त कर्मी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। एक स्वास्थ्यकर्मी के लिए मानवीय संवेदनाओं का ख्याल रखना भी बहुत जरूरी होता है। ऐसी लापरवाही की छूट नहीं दी जाएगी।

– शिव कुमार प्रसाद चक्रवर्ती, सीएस, बक्सर

एक नजर

सूचना : अनुमंडल अस्पताल में मरीजों के रजिस्ट्रेशन के लिए मोबाइल लाना जरूरी

डुमरांव। स्थानीय अनुमंडल अस्पताल में इलाज के लिए जा रहे हैं तो मोबाइल साथ लेकर जाएं। बिना मोबाइल के रजिस्ट्रेशन में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। महिला और पुरुष मरीजों का अलग-अलग रजिस्ट्रेशन होगा। बुधवार को 295 मरीजों ने अपना रजिस्ट्रेशन कराया। ओटीपी आने के बाद काउंटर से एक टोकन नंबर दिया जाता है। उसके बाद उस मरीज को संबंधित डॉक्टर इलाज करते है। अनुमंडल अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. गिरीश कुमार सिंह ने बताया कि एक बार मोबाइल के जरिये आभा यानि आयुष्मान भारत हेल्थ एकाउंट एप पर रजिस्ट्रेशन हो जाने से मरीज का हेल्थ कार्ड ऑनलाइन हो जाता है। उसके बाद पर्ची लाने की जरूरत नहीं है। बस वह मोबाइल होना चाहिए, जिसके नंबर से रजिस्ट्रेशन किया गया है। बिना मोबाइल वाले मरीज को परेशानी होती है। हालांकि उनके लिए भी अलग से पर्चा बनाया जाता है। उन्होंने बताया कि तापमान का पारा चढ़ने के बाद लोगों में सर्दी, खांसी और बुखार से परेशानी बढ़ी है। इन दिनों लगातार अस्पताल में आने वाले रोगियों की संख्या में इजाफा हुआ है। अगर कोई व्यक्ति बिना मोबाइल के इलाज कराने पहुंच रहे है तो उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उस व्यक्ति का आभा पर रजिस्ट्रेशन नहीं होने से अगली बार आने पर उन्हे फिर से नया पर्चा बनाना जरूरी होगा, जबकि मोबाइल से रजिस्टर्ड कराने वालों को ऐसी परेशानी नहीं है। इसके अलावा ऐसे व्यक्ति को पर्चा बनाने के लिए ज्यादा इंतजार करना पड़ रहा है।

दो अलग-अलग स्थानों पर मारपीट की घटना में दो घायल

नावानगर। सोनवर्षा थाना क्षेत्र के दो अलग-अलग स्थानों पर हुई मारपीट की घटनाओं में दो लोग घायल हो गए। दोनों मामलों में संबंधित व्यक्तियों ने सोनवर्षा थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। मिली जानकारी के अनुसार पहली घटना सोनवर्षा बाजार की है, जहां चार लोगों ने पनिहारी गांव निवासी रूपेश कुमार अपने दुकान पर थे। तभी चार लोगों ने पहुंच उसके साथ मारपीट की। इस संबंध में रूपेश कुमार ने नीतीश कुमार समेत दो नामजद और दो अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। वही दूसरी घटना सारा गांव की है, जहां संजय लाल के साथ तीन नामजद लोगों द्वारा मारपीट की गई। इस मामले में संजय लाल ने प्रमोद यादव सहित तीन लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराई है। इस संबंध में थानाध्यक्ष नवीन कुमार ने बताया कि दोनों मामलों की जांच की रही है और आगे की कार्रवाई जारी है।

वंशवाद की जिससे बू आये, मैं उसका विरोधी हूं: रवि

केटी न्यूज/डुमरांव

15 जून को डुमरांव में जदयू के पूर्व प्रखंड अध्यक्ष बीरेन्द्र कुशवाहा की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। इसका संचालन सत्येन्द्र झा ने किया, मुख्य अतिथि के रूप मे जदयू के पूर्व डुमरांव विधानसभा प्रभारी रवि उज्ज्वल कुशवाहा मौजूद रहे।

उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मैं डुमरांव विधानसभा चुनाव लड़ूंगा यह तय है, मुझे सभी समाज का साथ मिल रहा है। उन्होंने कहा कि की मै वंशवाद का विरोध करता हूं और पार्टी से उम्मीद है कि इस चुनाव मे पार्टी वंशवाद नहीं करेगी। रवि ने कहा की रानी के पेट से राजा पैदा हो वो जमाना चला गया, यदी कोई सोच रहा है कि बाप दादा के दम पर मैं चुनाव जीत जाऊंगा उसको मैं मुंह तोड़ जबाब दूगां। मेरे साथ सभी जाति समीकरण के लोग है, यदि कोई सोच रहा है कि 2025 विधानसभा में बाबा पिता के दम पर निकाल लूंगा तो वो जान ले की पूरा समाज उसके विरुद्ध खड़ा है, जिससे वंशवाद की बू आ रही है।

रवि उज्ज्वल ने बताया की मै राजनीतिक जीवन

2007 से ही शुरू किया हूं, यदि कोई सोच ले की कोई दबा के निकल जायेगा तो मुश्किल है। डुमरांव विधानसभा 2025 का चुनाव लड़ना तय है। उन्होंने कहा कि यदि पार्टी वंशवाद पर ध्यान देती है तो पार्टी को नुकसान होना भी तय है, मैं अपने फैसले पर अडिंग हूं।

बैठक में पप्पू मौर्य, गुरूदयाल सिंह, सरदार कुशवाहा, मिथिलेश कुशवाहा, गोपाल सिंह, तरूण कुमार, विदेशी कुशवाहा, अजय सिंह, देवानंद कुशवाहा, तेज नारायण कुशवाहा, दशरथ कुशवाहा, अरविन्द कुमार, अजय लाल कुशवाहा, अभिषेक झा, संजीव झा, नवीन झा, सुमित झा इत्यादि लोग मौजूद थे।

ठनका गिरने से मवेशी की मौत, किशोर घायल

नावानगर। स्थानीय प्रखंड क्षेत्र में रविवार देर शाम परमेश्वरपुर एवं दफाडीहरी गांव में ठनका गिरने की घटनाएं सामने आईं। जिसमें एक भैस की मौत हो गई, वहीं एक किशोर घायल हो गया। बताया जाता है कि दफाडीहरी गांव के बधार स्थित एक पेड़ पर ठनका गिरा, जिसकी चपेट में आने से नीचे बंधी एक दुधारु मवेशी की मौके पर ही मौत हो गई। मृत दुधारु मवेशी की पहचान स्थानीय पशुपालक गर्जन सिंह की बतौर की गई है। दूसरी घटना परमेश्वरपुर डेरा गांव में हुई, जहां ठनका शिवकुमार राय के घर के समीप गिरा। हालांकि इस घटना में कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ, लेकिन घर के अंदर मौजूद एक किशोर को हल्की चोटें आईं। घायल किशोर का इलाज निजी चिकित्सक के यहां चल रहा है।

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से बूझा घर का इकलौत चिराग

♦ मुफस्सिल थाना क्षेत्र के सोनपा प. डेरा गांव के बधार की है घटना, भैंस चराने गया था किशोर

केटी न्यूज/चौसा

आकाशीय बिजली गिरने से एक किशोर की मौत हो गई है। मृतक अपने माता-पिता का इकलौता संतान था। मामले की सूचना मिलते ही स्वजनों में शोक की लहर दौड़ गई है। घटना रविवार की दोपहर मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत सोनपा पंचायत के पश्चिम डेरा गांव के बधार की है।

मृतक की पहचान स्थानीय गांव निवासी रामशंकर यादव के 16 वर्षीय पुत्र आकाश कुमार के रूप में हुई है। इस दर्दनाक घटना से पूरे गांव में मातम पसरा गया है। जबकि पीड़ित परिवार का रो-रो कर बुरा हाल है। मिली जानकारी के अनुसार, वह रविवार की दोपहर बधार में भैंस चराने गया था। इसी दौरान अचानक मौसम बिगड़ गया और बारिश के साथ तेज गर्जना होने लगी। तभी एक जोरदार आकाशीय बिजली गिरी, जिसकी चपेट में आकर आकाश गंभीर रूप से झुलस गया। इसकी जानकारी मिलते ही ग्रामीण पहुंचे व किशोर को उठा चौसा सीएचसी लाए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

घटना की सूचना मिलते ही मौके पर मुफस्सिल थाने की पुलिस पहुंची तथा शव को कब्जे में पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल बक्सर भेजने की कार्रवाई में जुट गई। वही, प्रभारी सीओ ने तत्काल राजस्व कर्मचारी को मौके पर भेजा। बताया जाता है रामशंकर यादव की दो पुत्रियां और आकाश ही उनका इकलौता पुत्र था। उसकी असमय मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। गांव के लोग भी इस हृदयविदारक घटना से सदमे में हैं और परिवार को ढांढस बंधा रहे हैं। आकाश कुमार की आकस्मिक मौत से न सिर्फ उसका परिवार, बल्कि पूरा गांव गमगीन है। ग्रामीणों ने प्रशासन से मुआवजे की मांग की है। प्राकृतिक आपदाएं कब, कहां और किस पर कहर बरपा दें, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।

मुफस्सिल थानाध्यक्ष शंभू कुमार भगत ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि आकाशीय बिजली की चपेट में आने से एक किशोर की मौत हुई है। उन्होंने कहा कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है।

आठ दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ के दौरान बोले

ईश्वर के नाम का स्मरण करने मात्र से ही कलयुग में मिलती है मनुष्यों को मुक्ति

केटी न्यूज/केसठ

प्रखंड के दसियांव गांव में चल रहे आठ दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ से माहौल भक्तिमय बन गया है। कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. रमेश चंद्र द्विवेदी ने किया।

भगवत कथा में पं दयानंद मिश्र ने कथा के माध्यम से ज्ञान की अमृतवर्षा कर रहे हैं।कथा के दौरान रविवार उन्होंने कलियुग में मानव जीवन के लिए मुक्त का आधार को लेकर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने भागवत का शाब्दिक अर्थ को विस्तार से बताया तथा भगवत नाम संकीर्तन का बखान किया। उन्होंने कहा कि मन को शांत करने के लिए न कोई मंत्र-तंत्र है और न कोई यंत्र है। मन को शांत रखना या मन को अशांत रखना मनुष्य के स्वयं के वश में है। यह केवल संकल्प शक्ति से ही संभव है। सीमा व मयार्दा का उल्लंघन न करते हुए मनुष्य को एक आदर्श जीवन बिताना ही मयार्दा का पालन करना है। नारायण का नाम सुख प्रदान करनेवाला होता है। वही दैनिक दिनचर्या को मर्यादित तरीके से व्यतीत करना चाहिए। आत्ममंथन से भगवान के दर्शन का मार्ग प्रशस्त होता है। आज पूरी दुनिया क्षणिक सुख के लिए कई तरह के गलत व अनैतिक काम कर रही है। मनुष्य को यदि सुख और शांति का जीवन व्यतीत करना है,तो कलियुग में प्रभु नारायण का संस्मरण करने की जरूरत है। नारायण का नाम समस्त सुख प्रदान करता है।

उन्होंने बताया कि भगवान विष्णु अपने भक्तों पर हर रूप और हर स्वरूप से कृपा बरसाते हैं और इसीलिए वो जगत के पालनहार कहलाते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार पानी का जन्म भगवान विष्णु के पैरों से हुआ है। पानी को नीर या नर भी कहा जाता है। भगवान विष्णु भी जल में ही निवास करते हैं। इसलिए नर शब्द से उनका नारायण नाम पड़ा है। इसका अर्थ ये है कि पानी में भगवान निवास करते हैं। इसीलिए भगवान विष्णु को उनके भक्त 'नारायण' नाम से बुलाते हैं। उन्होंने कथा के माध्यम से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

मौके पर विकास कुमार, सौरभ कुमार, गौरव कुमार, संजय पाठक, मंटु मिश्र रमावती देवी, नीलम देवी, प्रद्युम्न कुमार, अमित कुमार, त्रिपुरारि कुमार, प्रमोद कुमार समेत आसपास के गांव के श्रद्धालु और आमलोग मौजूद थे।

CAMBRIDGE SCHOOL DUMRAON
Affiliated to C.B.S.E., Delhi, Up to (10+2)- Aff. No. 330723, SCHOOL No. 65720
Harnahi Road, Dumraon, Buxar - 802119
8210918840, 7319972175, 6393686958 www.cambridgeschooldumraon.com facebook.com/CAMBRIDGEDUMRAON
A CO-EDUCATIONAL SCHOOL FROM NURSERY TO STD. XII
ADMISSION NOTICE FOR STD. XI (SCIENCE & COMMERCE STREAMS)
OUTSTANDING PERFORMANCE OF OUR STUDENTS IN AISSE (Std. X) & AISSCE (Std. XII) CBSE BOARD EXAMS 2025
SCHOOL TOPPER- STD. XII
SARTHAK RAJ MISHRA 92%
SUBJECT WISE HIGHEST MARKS IN STD. XII
Chemistry : 98 Biology : 91
English Core : 97 Physics : 91
Physical Education : 96 Business Studies : 86
Mathematics : 92 Economics : 83
TOPPERS- STD. X
1st KHUSHI KUMARI 95.2%
2nd ANSH RAJ SINGH 94.8%
2nd PRAGATI KUMARI 94.8%
2nd SHREYA RAJ 94.8%
3rd ANMOL RAJ VATS 94%
3rd MOHIT KUMAR SINGH 94%
SUBJECTWISE HIGHEST MARKS
• Mathematics : 100 • Sanskrit : 100 • Social Science : 97
• Science : 100 • English : 95 • Hindi : 94
INFORMATION
The Information & Admission Cell at the JUNIOR WING,Dr. Jagnarayan Singh Hospital Campus, will remain open on all working days (Mon. - Sat.) from 9:00 am - 01:00 pm also during Summer Vacation.
LIMITED SEATS. HURRY UP!!!
REGISTRATION IS GOING ON FOR ADMISSION TO CLASS XI (SCIENCE & COMMERCE STREAMS) FOR THE ACADEMIC SESSION 2025-26. CLASSES WILL START FROM 23 JUNE, 2025.
SCHOLARSHIP SCHEME
• CANDIDATES WITH 90% & ABOVE WILL BE GIVEN HALF FREESHIP (50% REBATE IN ADMISSION FEE AND MONTHLY TUITION FEE) FOR BOTH CLASSES XI & XII. OTHER CHARGES ARE PAYABLE FOR BOTH CLASSES.
• INTEGRTION OF FOUNDATION CLASSES FOR NEET AND JEE MAINS IN CURRICULUM.
CHAIRMAN- MR. T.N. CHOUBEY

अपराधियों ने दिनदहाड़े बस यात्री पर धारदार हथियार से किया हमला, स्थिति नाजुक

केटी न्यूज/रोहतास

♦ पुलिस ने त्वरित कार्रवाई कर एक आरोपी को किया गिरफ्तार, दो फरार

जिले के राजपुर थाना क्षेत्र के राजपुर में चौक स्थित बस स्टैंड में राजपुर के ही रहने वाले एक युवक को बदमाशों ने चाकू मार जख्मी कर दिया है। इससे युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया, जिसका इलाज चल रहा है। वहीं, मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार भी किया गया है, लेकिन अभी दो फरार चल रहे हैं। पीड़ित जख्मी स्वर्गीय छतीस माली के पुत्र चंदन माली बताया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार चंदन माली बस स्टैंड से डिहरी ऑनसोन की ओर जाने वाली बस को पकड़ कर जैसे ही सीट पर बैठा था। उसी दरमिया न राजपुर गांव के ही निवासी ईदु मियां के तीन बेटे अचानक बस में घुस कर इन लोगों द्वारा ताबड़तोड़ चंदन माली के ऊपर धारदार हथियार से हमला कर दिया गया। जिसके बाद बस में यात्रियों के बीच हड़कंप मच गया। आनन फानन में बस से उतर यात्रियों ने बाजार में शोर मचाना शुरू कर दिया।

लोगों द्वारा बताया गया अपराधी द्वारा रविवार की सुबह करीब 10 बजे धारदार हथियारों से ताबड़तोड़ इतना हमला किया गया कि चंदन माली नामक युवक के पेट की चर्बी बाहर आ गई। जिस घटना के बाद बस स्टैंड से बहुत ही बुरी हालत में उसको राजपुर सरकारी अस्पताल में पहुंचाया गया। जहां से जख्मी युवक को फर्स्ट ऐड करते हुए उसको जिला सदर अस्पताल सासाराम के लिए रेफर कर दिया गया। लेकिन चिकित्सकों द्वारा इलाज उपरांत उसे बेहतर इलाज के लिए वाराणसी रेफर कर दिया गया है। जिसकी स्थिति अभी नाजुक है। इस घटना से राजपुर बाजार में लोगों के बीच बहुत ही भय का माहौल कायम हैं।

मामले में दो आरेपी अभी फरार: इस संबंध में राजपुर थानाध्यक्ष शशि भूषण रॉय ने बताया कि घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय पुलिस घटनास्थल पहुंच आजाद मियां अपराधी को धारदार हथियार के साथ गिरफ्तार कर लिया गया है। जबकि इसमें शामिल अन्य दो फरार अपराधी आजाद मियां के ही भाई बताए जा रहें। इनकी जल्द गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही हैं। स्थानीय बाजार में तरह की घटना से लोगों द्वारा पुलिस के कार्यशैली पर उंगली उठनी शुरू हो गई है। क्योंकि मुख्य चौक पर व्यस्तता रखने के बावजूद भी पुलिस की मौजूदगी की नदारत रहती है। जिसके कारण अपराधियों के हौसले बुलंद है। वहीं लोगों में पुलिस के खिलाफ आक्रोश व्याप्त है।

खबरें फटाफट

मारपीट का आरोपी गया जेल

रोहतास। जिले के दिनारा थाना क्षेत्र के अकोढ़ा गांव निवासी गुड्डू पांडेय को दिनारा पुलिस ने मारपीट के एक मामले में गिरफ्तार कर लिया है। थानाध्यक्ष विनय कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि आरोपी के विरुद्ध दिनारा थाना में कांड संख्या 280/25 के तहत मामला दर्ज था। गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त के घर से ही गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद उसे आगे की कानूनी कार्रवाई लिए न्यायालय भेज दिया गया।

28 लीटर शराब बरामद जब्त

रोहतास। जिले के कछवां थाना क्षेत्र के इब्राहिमपुर नहर के समीप कछवां पुलिस ने एक बार फिर अवैध शराब कारोबार पर करारा प्रहार किया। गुप्त सूचना के आधार पर की गई छापेमारी में पुलिस ने मौके से 28 लीटर देसी महुआ शराब बरामद की। हालांकि पुलिस को आता देख तस्कर वहां से भागने में सफल रहा। थानाध्यक्ष पंकज कुमार पासवान ने बताया कि फरार तस्कर की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है।

चलती ट्रेन में अधेड़ की मौत से मची अफरातफरी, लोगों ने हार्ट अटैक से मौत की जताई आशंका

संदेहास्पद स्थिति में कैपिटल एक्सप्रेस ट्रेन में मिला नालंदा के मजदूर का शव

केटी न्यूज/आरा

♦ दानापुर-पीडीडीयू रेलखंड पर घटी घटना
♦ पोस्टमार्टम के बाद शव को नालंदा ले गए परिजन

दानापुर-पीडीडीयू रेलखंड पर गाड़ी संख्या (03319) के कोच नंबर 16 जेनरल बोगी में चलती ट्रेन में संदेहास्पद स्थिति में नालंदा निवासी अधेड़ की मौत हो गई। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा-तफरी मची रही। जानकारी के अनुसार मृतक नालंदा जिला के कराई परशुराय थाना क्षेत्र के बेरवा गांव निवासी स्व. सुखाड़ी महतो के 60 वर्षीय पुत्र अवधेश प्रसाद है।

वह पेशे से मजदूर थे एवं असम में स्थित साबुन फैक्ट्री में काम करते थे। घटना के संबंध में बताया जाता है कि वह शुक्रवार को असम से गाड़ी संख्या (03319) कैपिटल एक्सप्रेस ट्रेन के कोच नंबर 16 जेनरल बोगी में सवार होकर वापस घर लौट रहे थे। उसी बीच चलती ट्रेन में उनकी मौत हो गई। इधर मृतक के जीजा संतोष ठाकुर ने बताया कि वह असम में स्थित साबुन फैक्ट्री में काम करते थे और शुक्रवार को ट्रेन पर सवार होकर वापस गांव लौट रहे थे। तभी चलती ट्रेन में ही उनकी मौत हो गई। इसके बाद रेल पुलिस द्वारा इसकी सूचना उन्हें दी गई। सूचना पाकर परिजन आरा सदर अस्पताल के पोस्टमार्टम गृह पहुंचे इसके पश्चात पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। इसके बाद परिजन उनके शव को दाह-संस्कार के लिए वापस नालंदा ले गए। जबकि पुलिस द्वारा बनाए गए मृत्यु समीक्षा रिपोर्ट के अनुसार मृतक की मौत स्वाभाविक मौत होना प्रतीत होता है। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट हो पाएगा। बताया जाता है कि मृतक के परिवार में पत्नी संजू देवी व दो पुत्र सन्नी, रविशंकर एवं एक पुत्री विनीता है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। इस घटना के बाद मृतक की पत्नी संजू देवी परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

खड़ी ट्रक में सारण के चालक की मौत

आरा। सकड्डी-नासरीगंज मार्ग पर जिले के चांदी थाना क्षेत्र के तापा मोड़ के समीप संदिग्ध स्थिति में खड़ी ट्रक में चालक की मौत हो गई। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा तफरी मची रही। इसके बाद स्थानीय ग्रामीण ने इसकी सूचना चांदी थाना पुलिस को दी।

सूचना पाकर चांदी थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने इसकी सूचना मृतक के परिजनों को दी। इसके पश्चात पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। जानकारी के अनुसार मृतक सारण जिला के दाउदपुर थाना क्षेत्र के वेलदारी गांव निवासी स्व.रामायण साह के 50 वर्षीय पुत्र राज किशोर साह है एवं वह पेशे से ट्रक चालक थे। मृतक के मौसेरे भाई ने बताया कि वह दो दिन पूर्व अपने घर से ट्रक पर बालू लोड करने के लिए चांदी आए थे। इसी बीच यह घटना घट गई। इसके बाद चांदी थाना पुलिस ने इसकी सूचना दी गई।

घटना की जानकारी पाकर परिजन सदर अस्पताल परिसर के पोस्टमार्टम गृह पहुंचे और शव को दाह-संस्कार के लिए वापस गांव ले गए। बताया जाता है कि मृतक अपने पांच भाई व दो बहन में तीसरे स्थान पर थे। उनके परिवार में मां देवकाली देवी,पत्नी रामवती देवी एवं एक पुत्र रौशन साह है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। इस घटना के बाद मृतक की मां देवकाली देवी, पत्नी रामवती देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल था।

एक नजर

मानसून की बेरूखी और नहरों में पानी नहीं आने से किसान की बढ़ी परेशानी

केसठ। मानसून की बेरुखी ने एक बार फिर किसानों की चिंता बढ़ा दी है। केसठ प्रखंड के सैकड़ों किसान धान की बीज बुवाई की तैयारी में जुटे हैं, लेकिन बारिश नहीं होने और नहरों में पानी नहीं आने से खेतों की सिंचाई एक बड़ी चुनौती बन गई है। गांव-गांव में किसान निजी डीजल पंप सेटों या बिजली पंप का सहारा लेकर खेतों में पानी भरने को मजबूर हैं। इससे उन्हें अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ रहा है। धान की बुआई का समय शुरू हो चुका है, लेकिन अब तक नहरों में पानी नहीं छोड़ा गया है, जिससे किसान सरकार से नाराज नजर आ रहे हैं। स्थानीय किसानों का कहा हैं कि हर साल समय पर नहर से पानी नहीं आता है, मजबूरी में जेब से पैसा लगाकर पंप चला रहे हैं। किसानों का कहना है कि बिजली भी कटती रहती है। सरकार ने वादा किया था कि किसानों को सिंचाई में सुविधा मिलेगी, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। केसठ प्रखंड की नहरें या तो सूखी हैं या फिर वर्षों से उनकी मरम्मत नहीं हुई है। बरसात से पहले इन नहरों की सफाई तक नहीं की गई, जिससे किसानों में आक्रोश है। स्थानीय किसानों ने प्रशासन से मांग की है कि तुरंत नहरों में पानी छोड़ा जाए और सिंचाई की व्यवस्था सुदृढ़ की जाए, ताकि किसानों को राहत मिल सकें।

तिवाय गांव में बीच रास्ते में ही गड़ा है बिजली का खंभा, कभी भी हो सकती है दुर्घटना

चौसा। स्थानीय प्रखंड के रामपुर पंचायत के वार्ड 10 स्थित तिवाय गांव में बिजली कंपनी की लापरवाही से कभी भी हादसा हो सकता है। बता दें कि इस गांव में स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय जाने वाले मुख्य रास्ते के बीचोबीच बिजली कंपनी ने वर्षों पहले एक पोल गाड़ दिया था, जिसे आज तक हटाया नहीं गया है। जिस जगह पर पोल गड़ा है वह निचले तबके की आबादी है तथा त्रिमुहानी है। जिसके एक तरफ पक्की सड़क, दूसरी तरफ पेवर ब्लाक व तीसरी तरफ ईंट सोलिंग से सड़क बनाई गई है। इसी जगह विद्यालय का गेट भी है। जिससे हर दिन सैकड़ो मासूम बच्चें पढ़ने जाते है। बिजली कंपनी की लापरवाही यही नहीं थमी है बल्कि उक्त विद्यालय के बीचोबीच से 11 हजार पॉवर को तार क्रास कराया गया है। जिससे कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि बीच रास्ते से पोल व स्कूल के बीच से उच्च क्षमता का धारा प्रवाहित तार हटाने के लिए स्थानीय अधिकारियों से लगायत एजक्यूटिव ऑफिसर तक से गुहार लगाई जा चुकी है, लेकिन समस्या का समाधान नहीं मिला है। ग्रामीण श्रीनाथ रजक, अक्षय लाल, संजय शाह, खेदु राजभर, सुभाष रजक पप्पू राय आदि ने बताया कि बिजली कंपनी की लापरवाही से कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। वहीं, ग्रामीणों का कहना है कि बीच रास्ते से पोल हटाने के लिए बिजली कंपनी के दलाल नजराना की मांग कर रहे है। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से इस समस्या के समाधान की मांग की है।

बारिश के होते ही बिक्रमगंज में लोगों ने ली राहत की सांस

केटी न्यूज/बिक्रमगंज

रविवार को बिक्रमगंज में दोपहर के समय घंटों देर तक झमाझम बारिश होते ही लोगों में दिखी खुशी। जिसके बाद लोगों को चिलचिलाती धूप और उमस भरी गर्मी से बड़ी राहत मिली। बीते कई दिनों से लगातार तापमान में वृद्धि और तेज धूप के कारण आमजन जीवन बेहाल था।

रविवार को अचानक बदले मौसम ने लोगों को सुकून पहुंचाया। बारिश के कारण जहां तापमान में गिरावट आई, वहीं वातावरण में ठंडक घुल गई। लोग घरों से बाहर निकल बारिश का आनंद लेते नजर आए। छोटे बच्चे गलियों और छतों पर नाचते-झूमते दिखे। दुकानदारों व राहगीरों के चेहरों पर भी खुशी साफ झलक रही थी। लोग बारिश से प्रसन्न नजर आए और गर्मी से मिली राहत को लेकर संतुष्ट दिखे। स्थानीय निवासी मुन्ना कुमार गुप्ता,रवि कुमार ने बताया कि पिछले कई दिनों से पंखा-कूलर भी बेअसर लग रहा था। लेकिन आज की बारिश ने मानों जान में जान ला दी। जिस संदर्भ में सविता देवी,रुक्मिणी देवी ने कहा कि गर्मी के कारण खाना बनाना भी मुश्किल हो रहा था, लेकिन अब मौसम सुहाना हो गया है।

घर से काम पर निकले पिकअप चालक की बगीचे से मिली लाश, हत्या की आशंका

केटी न्यूज/आरा

जिले के गड़हनी थाना क्षेत्र के सहंगी गांव में घर से निकले पिकअप चालक का शव बरामद हुआ। उसका शव गांव में मुसहर टोली के पश्चिम स्थित बगीचे से शनिवार की शाम बरामद हुआ। मृतक के शरीर पर बाएं हाथ व दाहिने हाथ के केहुनी के पास खरोंच एवं ललाट पर गमछा का दाग पाया गया है। इस कारण परिजनों ने हत्या कर शव को फेंके जाने की आशंका जतायी जा रही है। घटना को लेकर आसपास के इलाके में सनसनी मच गयी है।

जानकारी के अनुसार मृतक गड़हनी थाना क्षेत्र के सहंगी गांव वार्ड चार निवासी रामनाथ गिरी 30 वर्षीय पुत्र विनय गिरी है। वह पेशे से पिकअप चालक है। इधर, मृतक के भाई आनंद गिरि ने बताया कि शनिवार की सुबह करीब नौ बजे वह घर से बोलकर करने के लिए थे कि मैं काम पर जा रहा हूं। इसी बीच शाम करीब चार बजे गांव के एक लड़के द्वारा फोन कर उन्हें सूचना दी गयी कि उनका शव गांव के मुसहर टोली के पश्चिम स्थित बगीचे में पड़ा है। सूचना पाकर परिजन वहां पहुंचे। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। वहीं दूसरी तरफ मृतक के भाई ने उसको मार उसके शव को फेंके जाने की आशंका जतायी है। उसने किसी भी व्यक्ति पर आशंका एवं आरोप नहीं लगाया है।

इधर, पुलिस के बनाये गये पीएम रिपोर्ट के अनुसार मृतक चालक की मौत अस्वाभाविक मृत्यु होना प्रतीत होता है। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट हो पायेगा। बताया जाता है कि मृतक अपने चार भाई व दो बहन में पांचवें स्थान पर था। उसके परिवार में पत्नी लक्ष्मी देवी व दो पुत्र शिवम एवं अनुज है एवं मृतक की पत्नी लक्ष्मी देवी गर्भवती है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है।

उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने डॉ. भीम राव अंबेडकर के मूर्ति का किया अनावरण, बोले...

बाबा साहेब ने भारत का संविधान लिख पूरे विश्व में अपने ज्ञान का लोहा मनवाया

केटी न्यूज/रोहतास

जिले के चेनारी विधानसभा क्षेत्र में रविवार संत शिरोमणि रविदास सम्मेलन सम्मान समारोह का हुआ आयोजन। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व मंत्री सह वर्तमान विधायक मुरारी प्रसाद गौतम ने की। शिवसागर ब्लॉक में आयोजित कार्यक्रम के अवसर मुख्य अतिथि बिहार राज्य उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी का लोगों ने फूल-माला पहना अंगवस्त्र से सम्मानित किया।

अवसर पर उपमुख्यमंत्री ने भारत के संविधान रचयिता डॉ. भीम राव अंबेडकर की मूर्ति का श्रद्धा पूर्व अनावरण किया। उन्होंने उनके जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर जिन्हें बाबा साहेब आंबेडकर के नाम से भी जाना जाता है। वह एक भारतीय न्यायविद, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्होंने दलितों और अन्य सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और भारतीय संविधान के निर्माण में ऐतिहासिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिन्हें प्रारंभिक जीवन और शिक्षा का शुभारंभ अपने जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू, मध्य प्रदेश से की। वह एक दलित परिवार में जन्मे थे और उन्हें बचपन से ही सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा। बाबा साहेब विपुल प्रतिभा के छात्र थे। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स दोनों ही विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियां प्राप्त कीं तथा विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में शोध कार्य भी किये थे। वहीं अपनी अलौकिक शिक्षाविद से भारत का संविधान लिख पूरे विश्व अपने ज्ञान का लोहा मनवाया। जो आज रविदास समाज सहित सभी समाज के लोगों के लिए मार्गदर्शक के पात्र है।

दूसरी तरफ आयोजित कार्यक्रम को लेकर लोगों में नाराजगी देखी गई। लोगों ने कहा कि यह मंच विधानसभा से जुड़े राजनीति सम्मेलन का मंच था।

जिसमें बाबा साहेब के मान सम्मान का विशेष ख्याल नहीं रखा गया। यहां तक की कार्यक्रम आए हुए प्रतिनिधियों को भी मंच पर जगह नहीं दी गई।

मौके पर उपस्थित लोगों में मायूसी छाई रही।

THE AMITY SCHOOL

School - U DISE Code No. 10301709511

शाहाबाद का गौरव

Std. - L.K.G. TO 10+2

Full Fledged English Medium, Co-Educational, Based on C.B.S.E., Curriculum, New Delhi

NH.319, SONVARSHA (BUXAR)

Contact No.: 7485041132, 7739060430, 7762051256, 9931732561

Admission Open 2025-26

"निजू सिंह फ्री एजुकेशन स्कीम" के तहत 12 टॉपर्स छात्रों का 50% स्कूल फीस मुफ्त

Best Teaching Faculties In Bihar

"हरेन्द्र सिंह, शांति सिंह फ्री एजुकेशन स्कीम फॉर आर्फन" के तहत 06 अनाथ छात्रों का स्कूल फीस बिल्कुल मुफ्त

1. English Spoken Class
2. Smart Class
3. Computer Lab
4. Science Lab
5. Library
6. Maths Lab
7. CCTV Camera
8. Dance, Song & Yoga Special Classes
9. All Subjects Projects Exhibition
10. School Transport for All Routes
11. Outdoor and indoor Sports Facility
12. Inter School Competition.

ADMISSION FREE
RE ADMISSION FREE

The School Requires trained, qualified and experienced Teachers in the subjects Science, Maths, English,Social Science, Hindi, Computer Science, Painting, Music,

Minimum Qualification

Fooding & Lodging Free For Teachers

TGT- Bachelor Degree With B.Ed
PRT- Basic Trained with Bachelor Degree and T.E.T.
Salary- As per C.B.S.E.Norms (Smart Salary in Bihar)
Interview 25.03.2025 to 31.03.2025 at 10:00 am (Venue- In School Premises)

Amrendra Rajesh
Director
The Amity School

16-06-2025 Final_16-06-2025 Final.qxd 6/15/2025 10:56 PM Page 4

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के नए अध्यक्ष बने मृत्युंजय कुमार झा

- विधिवत तरीके से बोर्ड का किया पदभार ग्रहण
- गुरुकुल पद्धति को आधुनिक शिक्षा प्रणाली से जोड़ा जाएगा

केटी न्यूज/पटना

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना को आज नया नेतृत्व मिला है। मृत्युंजय कुमार झा ने बोर्ड के अध्यक्ष पद का विधिवत कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर बोर्ड के सचिव नीरज कुमार, परीक्षा नियंत्रक उपेन्द्र कुमार समेत सभी कर्मचारी उपस्थित रहे।कार्यभार ग्रहण समारोह में बोर्ड के माननीय सदस्य निवेदिता सिंह, अनुरंजन झा एवं धनेश्वर प्रसाद कुशवाहा ने भी भाग लिया। वेदपाठ के साथ गणमान्य अतिथियों ने नए अध्यक्ष का स्वागत किया। मृत्युंजय झा ने कार्यभार ग्रहण करते ही संस्कृत विद्यालयों की बेहतरी के लिए एक स्पष्ट और दूरदर्शी योजना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि संस्कृत शिक्षा को राज्य की मुख्यधारा में लाने और इसे समृद्ध करने के लिए सभी स्तरों पर प्रयास किए जाएंगे। कार्ययोजना की मुख्य बातें इस प्रकार हैं। जिसमें मुख्य रूप से संस्कृत विद्यालयों में पठन-पाठन की व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाएगा। पाठ्यक्रम का आधुनिकीकरण कर गुरुकुल पद्धति को आधुनिक शिक्षा प्रणाली से जोड़ा जाएगा। छात्रों में भारतीय संस्कृति और संस्कारों की पहचान विकसित की जाएगी। डिजिटल संसाधनों के प्रयोग से बोर्ड की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जाएगा।

648 मान्यता प्राप्त संस्कृत विद्यालय होंगे विकसित

राज्य के 648 मान्यता प्राप्त संस्कृत विद्यालयों की आधारभूत संरचना को मजबूत करने का प्रयास होगा। छात्र संख्या में वृद्धि हेतु विशेष जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। नामांकन एवं परीक्षा परिणामों में पारदर्शिता लाने के लिए पोर्टल आधारित नामांकन की व्यवस्था होगी। नियमित सत्र संचालन और समय पर परीक्षाओं के आयोजन को प्राथमिकता दी जाएगी। संस्कृत विद्यालयों की जमीन को अतिक्रमण मुक्त करने हेतु विशेष अभियान चलेगा। समाज के सभी वर्गों तक संस्कृत पहुंचाने हेतु नि:शुल्क दस दिवसीय संस्कृत सम्भाषण प्रशिक्षण वर्ग चलाया जाएगा। झा ने सभी संस्कृत विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों एवं कर्मियों से अपील की कि वे संस्कृत के संरक्षण, संवर्धन एवं पुनर्स्थापन में सक्रिय भूमिका निभाएं। उन्होंने संकेत दिया कि शीघ्र ही एक निरीक्षण दल गठित कर राज्य के सभी संस्कृत विद्यालयों की स्थिति का मूल्यांकन किया जाएगा और उपस्करहीन विद्यालयों की रिपोर्ट तैयार कर सरकार से समन्वय स्थापित किया जाएगा। बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना की स्थापना वर्ष 1981 में की गई थी।

संतोष कुमार सुमन फिर बने हम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष

बांका । बांका के होटल फ्रैंड ग्रांड में हिंदुस्तान आवाम मोर्चा सेकुलर की राष्ट्रीय परिषद की बैठक रविवार को हुई। इस दौरान हम पार्टी के संरक्षक जीतनराम मांझी ने बूथ स्तर पर पार्टी को मजबूत करने की बात कही। राष्ट्रीय परिषद की बैठक में मंत्री संतोष कुमार सुमन को निर्विरोध रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। वही कई नेताओं को भी बड़ी जिम्मेदारी दी गयी। इस बैठक में आगामी विधानसभा चुनाव की रणनीति पर चर्चा की गई और दलितों पिछड़ों और वंचितों के लिए पार्टी को मजबूत बनाने का संकल्प लिया गया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री सह पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी और राष्ट्रीय अध्यक्ष सह राज्य मंत्री संतोष कुमार सुमन उपस्थित हुए। हिंदुस्तान आवाम मोर्चा की राष्ट्रीय परिषद की बैठक आयोजित की गई। जिसमें लघु जल संसाधन मंत्री डा. संतोष कुमार सुमन फिर से राष्ट्रीय निर्वाचित हुए। जबकि राजेश कुमार पाण्डेय प्रधान महासचिव बनाए गए। वहीं काम्ता ऋषियाषण कोषाध्यक्ष बनाए गए।

जेडीयू के संजय झा की दोनों बेटियों को सुप्रीम कोर्ट में राज्य सरकार का वकील नियुक्त हुई

जमाई आयोग ही बना दीजिये मुख्यमंत्री नीतीशजी : तेजस्वी

- भूंजा पार्टी के नेता और अधिकारियों ने पत्नी, दामाद और बेटी सबको सेट कर लिया

केटी न्यूज/पटना

आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने नीतीश कुमार पर बेहद तीखा हमला बोला। तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में हाल में गठित हुए बोर्ड-निगम और आयोग में नेताओं के दामादों को सेट करने के बजाय नीतीश कुमार को एक जमाई यानि दामाद आयोग का ही गठन कर देना चाहिये। तेजस्वी यादव ने आरोप लगाया कि नीतीश कुमार के प्रधान सचिव ने अपनी पत्नी को महिला आयोग में सेट करा लिया, वहीं जेडीयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष की दोनों बेटियों को सुप्रीम कोर्ट में राज्य सरकार का वकील नियुक्त कर लिया गया है। खास दामाद आयोग बना दीजिये। तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में अभी कई आयोग और बोर्ड-निगम का गठन किया गया है. उनमें स्व. रामविलास पासवान के दामाद मृणाल पासवान, जीतन राम मांझी के दामाद देवेंद्र मांझी और मंत्री अशोक चौधरी के दामाद सायण कुणाल को जगह दिया गया है। तेजस्वी ने कहा कि नेताओं के दामादों को अगल-अलग जगह देने के बजाय नीतीश कुमार को जमाई आयोग ही बना देना चाहिये। उसमें नीतीश कुमार की भूंजा पार्टी के सदस्यों के साथ साथ उनके खास अधिकारियों के दामादों को जगह दे देना चाहिये। बता दें कि रामविलास पासवान के दामाद और चिराग पासवान के जीजा मृणाल पासवान को अनुसूचित जाति आयोग में अध्यक्ष बनाया गया है। इसी आयोग में जीतन राम मांझी के दामाद देवेंद्र मांझी को उपाध्यक्ष बनाया गया है। वहीं, अशोक चौधरी के दामाद सायण कुणाल को बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड का सदस्य बनाया गया है।

संजय झा की बेटियों को सुप्रीम कोर्ट में वकील बनाया गया : तेजस्वी यादव ने आरोप लगाया कि जेडीयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा की दो बेटियों को सुप्रीम कोर्ट में बिहार सरकार का वकील बना दिया गया है। दोनों को बिहार सरकार का एडवोकेट ऑन रिकार्ड बनाया गया है. जिन वकीलों के पास 20-20 साल का अनुभव होता है,

सुप्रीम कोर्ट में जानबूझ कर केस हारेगी बिहार सरकार

तेजस्वी यादव ने कहा कि क्या सुप्रीम कोर्ट में वकील बनाने के लिए बिहार सरकार को कोई दूसरा काबिल वकील नहीं मिला। सुप्रीम कोर्ट में बेहद गंभीर मामलों की सुनवाई होती है। वहां आरक्षण, जातीय जनगणना, गंभीर अपराध, बड़े भ्रष्टाचार जैसे मामलों की सुनवाई होती है। क्या जेडीयू के कार्यकारी अध्यक्ष की बेटियां ऐसे केस लड़ने में सक्षम हैं। तेजस्वी यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अचेतावस्था में हैं। वे सरकार नहीं चला रहे हैं। बिहार के असली सीएम तो डीके बॉस हैं। तेजस्वी के कहने का मतलब था मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार। उन्होंने कहा कि डीके बॉस की पत्नी को महिला आयोग का सदस्य बनाया गया है। बताया गया है कि वे शिक्षाविद हैं। क्या बिहार में कोई दूसरा कोई शिक्षाविद नहीं है।

अपराधियों ने कैमूर में महिला पुलिसकर्मी को मारी गोली

कैमूर। बेखौफ अपराधियों ने एक महिला पुलिसकर्मी को गोली मार दी। घायल पुलिसकर्मी को भभुआ सदर अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उसे वाराणसी के ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया। महिला पुलिसकर्मी अपने ड्यूटी पर मधेपुरा जाने के लिए कुदरा से ट्रेन पकड़ने के लिए अपने पति के साथ बाइक से रेलवे स्टेशन जा रही थी, तभी बुलेट पर सवार दो अपराधियों ने पीछे से गोली मार दी। घायल महिला पुलिसकर्मी सरिता कुमारी कुदरा में किराए के मकान में रहती थी। वह भीतरी बांध करमचट थाना की निवासी है।

बाबा साहब का अपमान पड़ा भारी, राज्य एससी एसटी आयोग ने लालू यादव पर लिया संज्ञान

केटी न्यूज/पटना

राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के खिलाफ राज्य अनुसूचित जाति आयोग ने कड़ी कार्रवाई के संकेत देते हुए 15 दिन के भीतर स्पष्टीकरण मांगने का आदेश जारी किया है। आयोग ने आरोप लगाया है कि हाल ही में अपने जन्मदिन के अवसर पर लालू प्रसाद यादव द्वारा सोशल मीडिया पर बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के एक फोटो का अपमान किया गया है, जो देशभर में व्यापक रूप से देखा और चर्चा का विषय बना हुआ है। आयोग ने स्पष्ट किया है कि डॉ. भीमराव अंबेडकर केवल अनुसूचित जाति के ही नहीं, बल्कि पूरे देश के संविधान निमार्ता एवं समाज के सम्मानित नेता हैं। उनके प्रति की गई अपमानजनक हरकत पूरे देश की सामाजिक भावना को ठेस पहुंचाती है और यह संवैधानिक मूल्यों के भी विरुद्ध है। राज्य अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष ने कहा कि डॉ. अंबेडकर के अपमान को सहन नहीं किया जाएगा। यह न केवल एक व्यक्ति के खिलाफ अपमान है, बल्कि पूरे समाज के खिलाफ एक गंभीर चुनौती है। इसलिए आयोग ने लालू प्रसाद यादव से 15 दिन के भीतर विस्तृत स्पष्टीकरण मांगा है। आयोग ने कहा है कि यदि स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं पाया गया, तो अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार अधिनियम के तहत उचित कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इसके अंतर्गत मुकदमा दर्ज कर सख्त कार्यवाही की जाएगी। इस मामले पर विपक्ष और सामाजिक संगठनों की भी नजर है। कई दलों और सामाजिक कार्यकताओं ने इस घटना की निंदा करते हुए सख्त कदम उठाने की मांग की है। वहीं, राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता ने इस मामले में कोई तत्काल प्रतिक्रिया नहीं दी है। डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर भारत के संविधान निमार्ता, समाज सुधारक और दलितों के महान नेता माने जाते हैं। उनका सम्मान भारतीय लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की नींव है। पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया पर उनके खिलाफ अपमानजनक पोस्ट और वीडियो की बढ़ती संख्या ने सामाजिक विवाद को जन्म दिया है।

हाइवा की टक्कर से नगर निगम के जमादार की मौत

गयाजी। गयाजी में हाइवा की टक्कर से जमादार की मौत हो गई है। तेज रफ्तार हाईवा ने स्कूटी सवार को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि स्कूटी सवार की मौत हो गई। इसके बाद गुस्साए लोगों ने हाइवा में आग लगा है।

घटना विष्णुपद थाना क्षेत्र के घुघरीटांड़ बाईपास पर रविवार शाम की है। मृतक की पहचान माड़नपुर देवी स्थान मोहल्ला के रहने वाले प्रकाश दास के रूप में हुई है। वे गया नगर निगम में जमादार के पद पर कार्यरत थे। एक महीने पहले ही उनकी पोस्टिंग वार्ड नंबर-46 में हुई थी। वह ड्यूटी खत्म कर अपने घर माडनपुर को लौट रहे थे। हाइवा चालक मौके से फरार हो गया। गुस्साए लोगों ने पहले तो सड़क जाम कर प्रदर्शन शुरू किया, फिर देखते ही देखते हाईवा में आग लगा दी।

जन सुराज के संयोजक प्रशांत किशोर ने दरभंगा के मनीगाछी में बड़ी रैली को किया संबोधित

छठ के बाद बदलेगी बिहार की सूरत : पीके

- युवाओं को कम से कम 10 से हजार रुपये प्रति महीने कमाई के लिए रोजगार की व्यवस्था कर देंग
- महिलाओं और पुरुष को मिलने वाली 400 रुपये की वृद्धा पेंशन में वृद्धि का होगा प्रयास

केटी न्यूज/दरभंगा

जन सुराज के संयोजक प्रशांत किशोर ने दरभंगा के मनीगाछी में बड़ी रैली को संबोधित करने पहुंचे। जहां कार्यक्रताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। पीके ने रैली को संबोधित करते हुए दो, बड़ी घोषणाएं करते हुए कहा कि इस वर्ष छठ के बाद आगामी विधानसभा के चुनाव में अपने बच्चों की खातिर जन सुराज की सरकार बनाएं। छठ के बाद जनता राज बनेगा तो कार्तिक महीने से सरकार बनते ही सबसे पहले महिलाओं और पुरुष को मिलने वाली 400 रुपये की वृद्धा पेंशन में वृद्धि करते हुए दिसम्बर से सभी 60 वर्ष से ऊपर की महिलाओं को 2000 हजार रुपये मिलने लगेंगे।

बच्चों के लिए वोट दीजिए : दूसरी बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि सरकार बनने के एक वर्ष के अंदर बिहार के युवाओं को कम से कम 10 से हजार रुपये प्रति महीने कमाई के लिए रोजगार की व्यवस्था कर देंगे। जिससे बिहार के युवाओं को गुजरात अन्य प्रदेशों में नही जाना पड़ेगा। आगे सभा को सम्बोधित करते हुए पीके ने कहा कि इस विधानसभा के चुनाव में जब वोट देने जाना है, संकल्प करके अपने बेटे प्रशांत किशोर की बात माने किसी नेता और किसी पार्टी के लिए नहीं जात-पात और हिन्दू मुसलमान के लिए नहीं, नीतीश, नरेंद्र मोदी, प्रशांत किशोर के लिए नहीं। आप अपने बच्चों के लिए वोट दीजिए।

रोजगार की बात : प्रशांत किशोर ने कहा कि शिक्षा रोजगार के लिए दीजिये। सभा को संबोधित करते हुए पीके ने लोगों से कहा कि छठ के बाद आपको और जनता का राज बनेगा तो इसका पहला संकल्प है कि बिहार के अस्पताल की हालत जब सुधरे तब सुधरे।

स्कूलों की हालत कैसी भी रहे। जब बने। लेकिन साल भर के अंदर जिनका भी बच्चा गया है, मजदूरी करने बाहर और जो युवा पढ़ लिखकर बेरोजगार बैठे हैं। उन्हें सरकारी नौकरी मिले न मिले लेकिन साल भर के अंदर सभी के लिए 10 से 15 हजार रुपये रोजी रोजगार की व्यवस्था यहीं बिहार में करके दिया जाएगा। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर लगातार बिहार के विभिन्न इलाकों का दौरा कर रहे हैं। युवाओं से खास तौर पर उत्साह के साथ मिल रहे हैं। दरभंगा पहुंचे पीके ने लोगों से ऐसी बात कही कि लोग ताली बजाने लगे। पीके ने दावा किया कि वो दिन दूर नहीं, जब बिहार में जनता का राज आने वाला है। उन्होंने कहा कि लोगों को रोजगार के लिए पलायन नहीं करना होगा।

संक्षिप्त समाचार

बराबनी पुलिस ने चोरी गए 40 मोबाइल फोन उनके असली मालिकों को लौटाए

चित्तरंजन, एजेंसी। बराबनी थाना क्षेत्र से चोरी और गुम हुए कुल 40 एंड्रॉयड मोबाइल फोन को पुलिस ने बरामद कर असली मालिकों को लौटाया है। शनिवार दोपहर को बराबनी थाना परिसर में आयोजित एक सादे समारोह में फोन वापस किए गए। इस अवसर पर आसनसोल-दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट की एसीपी ईप्सिता दत्ता और बराबनी थाना प्रभारी दिव्येंदु मुखर्जी समेत कई पुलिस अधिकारी मौजूद थे। मोबाइल वापस पाने वाले निरंजन कोरा और नंदन रॉय ने बताया कि पिछले वर्ष दिसंबर में उनका मोबाइल फोन खो गया था। उन्होंने थाना में सामान्य डायरी दर्ज कराई थी। पुलिस की त्वरित कार्रवाई के चलते उन्हें उनका फोन वापस मिल गया। उन्होंने खुशी जाहिर करते हुए बराबनी पुलिस का आभार व्यक्त किया। एसीपी ईप्सिता दत्ता ने बताया कि बराबनी थाना क्षेत्र में गुमशुदा मोबाइल की कई जीडी दर्ज थीं। इन मामलों की छानबीन में साइबर सेल की मदद ली गई और फोन बरामद कर लिए गए।

तीन दिनों में 1,344 लोग बिजली चोरी में पकड़े गए, भरना होगा 2.33 करोड़ का जुर्माना

रांची, एजेंसी। राज्य में बिजली की चोरी बदस्तूर जारी है। स्थिति यह है कि झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड के प्रबंध निदेशक अविनाश कुमार के निर्देश पर चलाए जा रहे छापेमारी अभियान में तीन दिनों में ही 1,344 लोग बिजली चोरी पकड़े गए। 11 से 13 जून तक चलाए गए अभियान में कुल 109 टीम द्वारा 10,770 परिसर में छापेमारी की गई। इसमें 1,344 लोग बिजली चोरी करते पकड़े गए। इनके विरुद्ध 2.33 करोड़ का जुर्माना कर संबंधित थानों में प्राथमिकी भी दर्ज कराई गई है। सबसे अधिक डालटनगंज में चोरी के मामले सामने आए हैं। डालटनगंज सर्किल में 136, हजारीबाग में 135 तथा रांची सर्किल में 134 घरों में लोग बिजली चोरी करते पकड़े गए हैं।

खासमहल में बनेगा नया मेडिकल कॉलेज, अधिकारियों ने जगह का किया निरीक्षण

जमशेदपुर, एजेंसी। जमशेदपुर के खासमहल स्थित सदर अस्पताल के पास स्वास्थ्य विभाग द्वारा नया मेडिकल कॉलेज खोला जायेगा। खासमहल में 25 एकड़ में बनने वाले इस मेडिकल कालेज का स्थल निरीक्षण करने के लिए शनिवार को स्वास्थ्य विभाग के ज्वाइंट सेक्रेटरी ललित मोहन शुक्ला पहुंचे। उन्होंने सदर अस्पताल के पीछे मौजूद स्थान को देखा। इसके साथ ही अस्पताल परिसर में बन रहे 100 बेड का प्रीफैब्रिकेडेड अस्पताल को देखा। उन्होंने अस्पताल को जल्द से जल्द शुरू कराने का निर्देश दिया ताकि मरीजों को उसका लाभ मिल सके। इसके साथ ही सदर अस्पताल के उपर 100 बेड का वार्ड बनाना है। उन्होंने बताया कि कुल मिलाकर सदर अस्पताल को 350 बेड का करना है, ताकि मेडिकल कॉलेज खोला जा सके। इसके अलावा ब्लड बैंक, आईसीयू, डायलिसिस सेंटर, ऑक्सीजन प्लांट की सुविधा मानक के अनुसार है। ज्वाइंट सेक्रेटरी ने सदर अस्पताल में मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी लेने के साथ अस्पताल का निरीक्षण किया। उन्होंने सिविल सर्जन डॉ. साहिर पाल को कई दिशा निर्देश दिए ताकि मरीजों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके।

भाषा के नाम पर जनता को आपस में लड़ा रही हेमंत सरकार, बीजेपी नेता ने जयराम महतो को भी घेरा

रांची, एजेंसी। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता और पूर्व विधायक अमित मंडल ने शनिवार को प्रेस वार्ता कर कहा कि राज्य सरकार भाषा के नाम पर लोगों को लड़वाने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार युवाओं को रोजगार देना नहीं चाहती है। मंडल ने कहा कि झारखंड की मूल संस्कृति, भाषाओं और जनजातीय पहचान को खत्म करने की साजिश राज्य सरकार कर रही है। राज्य की स्थानीय भाषाओं को नजरअंदाज कर खूंटी से मुंडारी, पलामू-गढ़वा से भोजपुरी, गोड्डा से अंगिका जैसी भाषाओं को हटाया गया। उन्होंने कहा कि भाजपा किसी भाषा के विरोध में नहीं है। लेकिन अंगिका, भोजपुरी और मुंडारी जैसी भाषाओं को हटाने के इस कृत्य का पार्टी विरोध करती है।

प्रदेश में पहली बार एक साथ मिलकर काम करेंगे दो विभाग, अधिकारियों को मिला टास्क

चाईबासा, एजेंसी। राज्य में पहली बार वाणिज्य कर विभाग और खान एवं भूतत्व विभाग की संयुक्त टीमें राज्य की सभी कैप्टिव माइनिंग एवं अन्य खनन से संबंधित प्रमुख प्रतिष्ठानों में जाकर राजस्व संग्रहण से जुड़े विषयों का मिलान करेगी।

अलग-अलग कंपनियों के लिए दोनों विभागों के संयुक्त दलों का गठन सरकार की ओर से किया गया है। दोनों विभागों के संयुक्त पदाधिकारियों का यह दल मेसर्स दामोदर वेली कॉरपोरेशन, मेसर्स एनटीपीसी, मेसर्स सेल और मेसर्स टाटा स्टील लिमिटेड से प्राप्त होने वाले राजस्व का मिलान करेगा। इसके आलोक में संयुक्त दल पश्चिमी सिंहभूम जिले में संचालित मेसर्स सेल और मेसर्स टाटा स्टील लिमिटेड की खदानों पर में पहुंचा है।

नोवामुंडी में स्थित टाटा स्टील की विजया-2 आयरन ओर माइंस में कोल्हान अंचल के भूतत्व विभाग के उप निदेशक ज्योति शंकर सतपथी, पश्चिमी सिंहभूम जिला के जिला खनन पदाधिकारी मेघलाल टुडू, चतरा के जिला खनन पदाधिकारी मनोज टोप्पो, चाईबासा अंचल के राज्य कर सहायक आयुक्त अजय कुमार कच्छप, राज्य कर पदाधिकारी पंकज कुमार गोप शामिल हैं।

इसी तरह गुवा आयरन ओर माइंस में जांच के लिए उपनिदेशक खान गोपाल दास, जिला खनन पदाधिकारी मेघलाल टुडू, पूर्वी सिंहभूम के जिला खनन पदाधिकारी सतीश कुमार नायक, जमशेदपुर के अन्वेषण ब्यूरो के राज्य कर सहायक आयुक्त निलेश तिगगा, राज्य कर पदाधिकारी हरिनारायण भगत को जिम्मा दिया गया है।

इसी तरह सेल की चासनाला कोल माइंस में जांच के लिए उपनिदेशक खान गोपाल दास, धनबाद के उपनिदेशक खान सत्यजीत, भूतत्ववेता रितेश राज तिगगा, झरिया अंचल के राज्य कर सहायक आयुक्त मंगल उरांव व धनबाद के अन्वेषण ब्यूरो राज्य कर सहायक आयुक्त समीक कुमार को शामिल किया गया है। मेसर्स नेशन थर्मल पावर कारपोरेशन की पाकड़ी बरवाडीह कोल प्रोजेक्ट की जांच के लिए उपनिदेशक खान संजीव कुमार, हजारीबाग के जिला खनन पदाधिकारी अजीत कुमार, रामगढ़ के जिला खनन पदाधिकारी निशांत अभिषेक, हजारीबाग अंचल के राज्य कर सहायक आयुक्त नवनीत सिंह, राज्य कर पदाधिकारी फिरोज आलम को टीम में शामिल किया गया है।

वहीं, केरेनदारी कोल प्रोजेक्ट के लिए उपनिदेशक खान संजीव कुमार, हजारीबाग के जिला खनन पदाधिकारी अजीत कुमार, रामगढ़ के जिला खनन पदाधिकारी निशांत अभिषेक, हजारीबाग के राज्य कर सहायक आयुक्त विनोद कुमार मिंज व हजारीबाग अंचल के राज्य कर पदाधिकारी मो. सफीक को जिम्मेदारी दी गयी है। खान निदेशक की ओर से स्पष्ट किया गया है कि उपरोक्त गठित जांच दलों द्वारा निर्धारित खनन क्षेत्र से प्रेषित खनिजों से प्राप्त होने वाले राजस्व का मिलान करने के उद्देश्य से उक्त खनन क्षेत्र के करदाताओं अथवा एजेंसियों द्वारा किये जा रहे व्यवसाय संबंधी खनिजों की मात्रा, खनिजों का मूल्य, खनिजों के परिवहन एवं माइनिंग सपोर्ट सर्विसेज के साथ ही प्रावधानित करों से संबंधित गणना एवं अन्य बिंदुओं पर जांच करते हुए प्रतिवेदन समर्पित करने का निर्देश खान निदेशालय की ओर से दिया गया है।

झारखंड की इनामी सूची में अब 58 नक्सलियों के नाम शामिल

जमशेदपुर, एजेंसी। राज्य में नक्सल विरोधी अभियान को लेकर पुलिस मुख्यालय ने बड़ी कार्रवाई करते हुए नक्सलियों की इनामी सूची से 14 नाम को हटा दिया है। अब झारखंड में सक्रिय इनामी नक्सलियों की कुल संख्या घटकर 58 रह गई है। हटाए गए नाम में कुछ आत्मसमर्पण कर चुके हैं तो कुछ मारे जा चुके हैं या लंबे समय से निष्क्रिय हैं। कोल्हान प्रमंडल में इनामी नक्सलियों की संख्या और उनपर घोषित इनाम की राशि में वृद्धि की गई है। वर्तमान में यहां पांच नक्सलियों पर 25 लाख, 11 पर 15 लाख और नौ नक्सलियों पर 10 लाख तक का इनाम घोषित है।

यह क्षेत्र लगातार पुलिस और सुरक्षा बलों के लिए चुनौती बना हुआ है। कोल्हान के प्रमुख नक्सलियों में बीरेन सिंह उर्फ सागर पर 5 लाख, बेला सरकार उर्फ पंचमी पर 15 लाख का इनाम तय किया गया है। सूत्रों के अनुसार, पुलिस मुख्यालय द्वारा इनामी सूची में संशोधन एक नियमित प्रक्रिया के तहत किया गया है, जिसमें सक्रियता, खुफिया रिपोर्ट और घटनाओं में संलिप्तता के आधार पर समीक्षा होती है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य सुरक्षा एजेंसियों को अधिक प्रभावी रणनीति तैयार करने में मदद करना है। सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड में झारखंड पुलिस व अर्धसैनिक बल इनाम घोषित नक्सलियों की धरपकड़ के लिए लगातार अभियान चला रहे हैं।

इस सूची में शामिल नक्सलियों पर विशेष नजर रखी जा रही है। साथ ही नक्सल प्रभावित इलाकों में सघन तलाशी अभियान भी तेज कर दिए गए हैं। राज्य सरकार की मंशा है कि प्रभावी रणनीति और जन सहयोग से नक्सलवाद को जड़ से खत्म किया जाए। इनामी सूची में बदलाव इसी दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है। एक करोड़ के इनामी तीन नक्सली वर्तमान में एक करोड़ के तीन नक्सली बचे हैं, जिनमें पोलित ब्यूरो मेंबर मिसिर बेसरा उर्फ भास्कर उर्फ सुनिर्मल जी उर्फ सागर, सेंट्रल कमेटी मेंबर असीम मंडल उर्फ आकाश उर्फ तिमिर और अनल दा उर्फ तूफान उर्फ पतिराम मांझी उर्फ पतिराम मरांडी उर्फ रमेश का नाम है। नक्सलियों की पत्नियों पर बढ़े इनाम नक्सलियों की पत्नियों पर इनाम की राशि बढ़ाई गई है।

टीजीटी-पीजीटी पदनाम समाप्त कर घटा दिया वेतनमान, शिक्षकों ने किया विरोध

रांची, एजेंसी। राज्य के +2 हाईस्कूलों में टीजीटी और पीजीटी टीचर का पदनाम समाप्त कर माध्यमिक आचार्य के पद सृजित कर नियुक्ति की जा रही है। टीजीटी-पीजीटी से माध्यमिक आचार्य का वेतनमान भी कम है। झारखंड राज्य उर्दू शिक्षक संघ माध्यमिक आचार्य के पद पर नियुक्ति के लिए बनी नियमावली का विरोध किया है। महासचिव अमीन अहमद ने कहा कि नई नियमावली से शिक्षकों के सम्मान पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। टीजीटी शिक्षकों को पहले 4600 रुपए ग्रेड पे और 44,900 रुपए बेसिक वेतन मिलता था। वहीं जबकि पीजीटी शिक्षकों को 4800 रुपए ग्रेड पे और 47,600 रुपए बेसिक वेतन देने का प्रावधान था।

अब टीजीटी-पीजीटी की जगह माध्यमिक आचार्य की नियुक्ति की जा रही है। माध्यमिक आचार्य ग्रेड पे 4200 रुपए है। वहीं बेसिक वेतन 35,400 रुपए है। महासचिव अमीन अहमद ने बताया कि नई नियमावली के तहत एक ही शिक्षक को कक्षा 9 से 12 तक पढ़ाना होगा, जिससे शिक्षकों पर अनावश्यक कार्यभार बढ़ेगा। पहले 1वीं के 12वीं और आठवीं से 10वीं के लिए अलग शिक्षकों की नियुक्ति की जाती थी।

3712 रिक्त पदों पर शीघ्र हो नियुक्ति उर्दू शिक्षक संघ ने उर्दू सहायक शिक्षक के रिक्त 3712 पदों पर शीघ्र नियुक्ति मांग की है। कहा है कि इन पदों पर बहाली नहीं होने से एक ओर शिक्षा पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। हजारों योग्य अभ्यर्थी बेरोजगारी का सामना कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर वैकेंसी जारी होने का इंतजार कर रहे युवाओं में निराशा है।

पर्यटन मंत्री ने किया कांवरिया पथ का निरीक्षण, कहा- 5 जुलाई तक श्रावणी मेला की तैयारी पूरी करें

रांची, एजेंसी। झारखंड के पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने शुक्रवार को देवघर विधायक सुरेश पासवान के साथ श्रावणी मेला की तैयारियों का जायजा लिया। इस दौरान पर्यटन मंत्री ने कांवरिया पथ रूट लाइन, बाघमारा स्थित आइएसबीटी, कोठिया स्थित टेंट सिटी, वाहन पड़ाव स्थल, सरसा व परित्राण पार्किंग स्थल का निरीक्षण किया। इसके साथ ही उन्होंने अधिकारियों को कई आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

निरीक्षण के दौरान मंत्री सुदिव्य ने श्रद्धालुओं के लिए मूलभूत सुविधाएं बिजली, पानी, शौचालय व बेरिकेड्स व्यवस्था बेहतर करने का निर्देश दिया। साथ ही उन्होंने कांवरिया पथ का पैदल निरीक्षण कर पेयजल, स्नानागार, मोबाइल चार्जिंग, भक्तिमय मनोरंजन, स्वास्थ्य सुविधा, सूचना सह सहायता केंद्र, साफ-सफाई, रंगरोगन, शेड आदि का जायजा लिया। पर्यटन मंत्री ने पांच जुलाई तक श्रावणी मेला की सभी तैयारी पूरी करने का निर्देश दिया।

मंत्री सुदिव्य सोनू ने निरीक्षण के समय कांवरिया पथ में कई जगह गड्ढे पाये व कलवर्ट जर्जर पाया गया। उन्हें कांवरिया पथ के बीच में बिजली के पोल भी मिले। इस पर मंत्री ने इसे पूरी तरह से समतल कर गंगा की मिट्टी डालने के साथ-साथ कलवर्ट को दुरुस्त करने व बिजली पोल को किनारे शिफ्ट करने का निर्देश दिया।

इसके अलावा पर्यटन मंत्री ने खिजुरिया गेट, दर्शनियां मोड़ व क्यू कॉम्प्लेक्स का निरीक्षण कर संबंधित विभाग के कार्यपालक अभियंता को दुम्मा से खिजुरिया तक स्थायी शेड बनाने का प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश दिया। मंत्री ने टेंट सिटी व क्यू कॉम्प्लेक्स के समीप स्थायी रूप से शौचालय कॉम्प्लेक्स बनाने का निर्देश दिया है। इस मौके पर डीसी नमन प्रियेश लकड़ा, एसपी अजीत पीटर डुंगडुंग, एसडीओ रवि कुमार सहित अन्य पदाधिकारी थे।

इधर, देवघर सदर अस्पताल में भी श्रावणी मेले की तैयारी शुरू हो गयी है। इसे लेकर अस्पताल उपाधीक्षक डॉ प्रभात रंजन ने सभी वार्ड प्रभारी व चिकित्सा पदाधिकारी को निर्देश दिया कि मेले के दौरान अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले किसी भी श्रद्धालु को कोई असुविधा नहीं हो। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अस्पताल में श्रद्धालुओं के इलाज के लिए विशेष रूप से 25 बेड आरक्षित रहेंगे।

रांची में रथयात्रा मेला की तैयारियां शुरू, इन एजेंसियों को मिला टेंडर और सुरक्षा का जिम्मा

रांची, एजेंसी। रांची के धुर्वा स्थित जगन्नाथपुर मंदिर में आयोजित होनेवाले रथयात्रा मेला की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। इसी कड़ी में मेला की व्यवस्था और सुरक्षा के लिए शुक्रवार को जगन्नाथपुर थाना परिसर में निविदा निकाली गयी। इसमें सबसे अधिक बोली लगाने वाले 'आरएस इंटर प्राइजेज, मिदनापुर' को टेंडर दिया गया।

बताया जा रहा है कि आरएस इंटर प्राइजेज एजेंसी के संचालक राजेश चंद्रा की ओर से 51 लाख 51 हजार की बोली लगायी गयी। इस बार सात एजेंसियों ने निविदा डाली थी। जानकारी के अनुसार, इस साल पिछले साल के मुकाबले कम बोली लगी है, जो चर्चा का विषय बना हुआ है। ट्रस्ट के सदस्यों ने भी कम बोली लगाये जाने के सवाल पर कहा कम बोली क्यों लगी है, यह समझ नहीं आ रहा है।

ट्रस्ट के सदस्यों ने बताया कि इस साल हमने कंपनियों के लिए कई शर्तें रखी हैं। जैसे- छोटे-छोटे दुकानदारों से कम पैसे लेने के लिए कहा गया है। वहीं, परंपरागत उत्पाद बेचने वाले छोटे दुकानदारों और चटाई-दरी बिछाकर दुकान आदि लगाने वालों से भी कम राशि लेने के लिए कहा गया है। सदस्यों ने कहा कि कम बोली लगने का यह भी एक कारण हो सकता है। इस बार ट्रस्ट की ओर से मेले के लिए निविदा की राशि 31 लाख रुपये रखी गयी थी।

मालूम हो कि साल 2024 में एक करोड़ 92 लाख रुपये की बोली लगी थी। वहीं, वर्ष 2023 में 75 लाख रुपये की बोली लगायी गयी थी। निविदा खुलने के दौरा एलआरडीसी मुकेश कुमार, कोषाध्यक्ष विनोद कुमार, अशोक नारसरिया, डॉ सुभाष तेतरवे, डॉ अनिल कुमार मिश्रा, ठाकुर सुधांशु नाथ शाहदेव सहित अन्य उपस्थित थे।

इधर, मेले में सुरक्षा की जिम्मेदारी वीएसएफ को दी गयी है। उन्होंने लाठी बल के लिए 875 रुपये प्रति व्यक्ति और बंदूकधारी के लिए 1775 रुपये प्रति व्यक्ति की दर से निविदा डाली थी। उनके अलावा दो और एजेंसियों ने भी निविदा डाली थी। मंदिर ट्रस्ट द्वारा जल्द ही निविदा की शर्त आदि के साथ दोनों एजेंसियों को कागजात सौंप दिये जायेंगे।

18 जून तक मानसून का प्रवेश : झारखंड में बेहतर होगी मानसून वाली बारिश

रांची, एजेंसी। झारखंड में भीषण गर्मी से जल्द राहत मिलने वाली है। मौसम विज्ञान केंद्र, रांची के वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने बताया कि मानसून 16 से 18 जून के बीच संताल परगना के रास्ते राज्य में प्रवेश करेगा। 16 जून तक इसके ओडिशा पहुंचने की संभावना है। मानसून के प्रवेश के एक-दो दिन के भीतर यह पूरे राज्य में फैल जाएगा। इस बार मानसून की स्थिति बेहतर रहने की उम्मीद है और पूरे प्रदेश में अच्छी बारिश हो सकती है।

सितंबर तक रहेगा मानसून : मौसम विभाग ने संकेत दिया है कि मानसून इस बार सितंबर तक राज्य में बना रह सकता है। पिछले साल मानसून ने 21 जून को झारखंड में प्रवेश किया था, लेकिन इस बार इसके पांच दिन पहले ही आने की संभावना जताई गई है। मानसून की जल्दी एंट्री से किसानों में उत्साह है और उन्होंने धान का बिचड़ा डालना और खेत तैयार करने का कार्य आरंभ कर दिया है।

लातेहार में बारिश, मेदिनीनगर सबसे गर्म : शुक्रवार को लातेहार में 20 मिमी बारिश दर्ज की गई। वहीं पलामू प्रमंडल का मुख्यालय मेदिनीनगर सबसे गर्म रहा, जहां का अधिकतम तापमान 40.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से एक डिग्री अधिक है। इधर, पूर्वी सिंहभूम और पश्चिमी सिंहभूम के कुछ हिस्सों में शाम के समय हल्की बारिश हुई।

35 डिग्री रहा राजधानी का पारा : राजधानी रांची का अधिकतम तापमान शुक्रवार को 35.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 0.4 डिग्री कम रहा। हालांकि पिछले 24 घंटे में इसमें 1.2 डिग्री की बढ़ोतरी हुई है। जमशेदपुर में तापमान 36.5 डिग्री, बोकारो में 38.1 डिग्री, चाईबासा में 37.4 डिग्री और मेदिनीनगर में सबसे अधिक 40.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

रांची में स्कूल आने-जाने के समय अतिरिक्त जवानों की तैनाती होगी

रांची, एजेंसी। राजधानी रांची में जाम सबसे बड़ी समस्या है। अक्सर स्कूली बच्चों की बसें जाम में फंस जाती हैं। अब ट्रैफिक पुलिस ने इस समस्या से निपटने का प्लान तैयार कर लिया है। स्कूल बसों के आने-जाने के समय सुबह 6 से 9 बजे और दोपहर 1 से 3 बजे के लिए विशेष तैयारी की गई है। इस दौरान सड़क पर अतिरिक्त जवानों को तैनात किया जाएगा। जाम में फंसे स्कूल बसों को निकालने के लिए सिग्मा और अल्फा टीम को अलर्ट मोड पर रखा जाएगा। अधिकारी के साथ जवान बाइक पर शहर के अलग-अलग हिस्सों में तैनात रहेंगे। जाम की सूचना मिलते ही वे तत्काल पहुंचेंगे। जरूरत पड़ने पर एक टीम दूसरे टीम की मदद भी करेगी।

इसके लिए शहर को चार जोन में बांटा गया है। ट्रैफिक एसपी कैलाश करमाली ने शहर के सभी थानेदारों की जिम्मेदारी भी तय कर दी है। अगर जल्दी जाम नहीं हटा तो इसके लिए संबंधित थानेदारों को जिम्मेदार ठहराया जाएगा। सभी थानेदारों को स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि वे अपने इलाके के वैसी जगहों को चिह्नित करें, जहां अक्सर जाम की समस्या उत्पन्न होती है। जाम हटाने के लिए वे खुद के स्तर पर प्रयास करें, ताकि लोगों को परेशानी का सामना न करना पड़ा। इस संबंध में ट्रैफिक एसपी की रांची जोन के आईजी मनोज कौशिक के साथ बैठक हुई थी। इसके तत्काल बाद इसकी तैयारी शुरू कर दी गई है। रांची ट्रैफिक पुलिस जल्दी ही एक नया हेल्पलाइन और वॉट्सएप नंबर जारी करेगी। शहर में कहीं भी जाम लगने पर लोग इस नंबर पर फोन कर या वॉट्सएप पर मैसेज भेजकर जानकारी दे सकेंगे। सूचना मिलते ही ट्रैफिक पुलिस का बाइक दस्ता तत्काल मौके पर पहुंचेगा और जाम हटवाएगा। इस नंबर पर अतिक्रमण संबंधी जानकारी भी दी जा सकेगी। इसके बाद रांची नगर निगम की टीम के साथ मिलकर पुलिस टीम अतिक्रमण हटाएगी।

स्कूली बसों को जाम से राहत दिलाने की शुरुआत हरमू रोड और कांके रोड से किया जाएगा। यहां सिग्मा और अल्फा टीम मौजूद रहेगी। इसके बाद मेन रोड और कचहरी-लालपुर रोड में भी इस टीम को तैनात किया जाएगा। इन दोनों टीमों के अलावा एसक्यूआरटी को भी एक्टिव रखा गया है। इसके जिम्मे पूरा शहर होगा। जहां जरूरत होगी, एसक्यूआरटी को भेजा जाएगा। ताकि जाम से लोगों को तत्काल राहत दिलाई जा सके।

बरियातू रोड, हरमू रोड और कोकर-बूटी मोड़ सहित अन्य जगहों पर अनावश्यक रोड कट को भी चिह्नित करने का काम ट्रैफिक पुलिस ने शुरू कर दिया गया है। पुलिस का मानना है कि ऐसे कट के कारण भी जाम की समस्या उत्पन्न होती है। ट्रैफिक पुलिस ने अब ऐसे कट को चिह्नित करने का काम शुरू कर दिया गया है।

गुमला सदर अस्पताल से बच्चा चोरी, पुलिस की सक्रियता से मिली बच्ची

गुमला, एजेंसी। सदर अस्पताल गुमला में शुक्रवार की रात एसएनसीयू में भर्ती 14 दिन की एक बच्ची की चोरी कर ली गई. इस घटना की जानकारी के बाद सदर अस्पताल प्रबंधक के होश उड़ गए. तत्काल घटना की सूचना वरीय पदाधिकारी को दी गई. घटना की सूचना पर सिविल सर्जन नवल कुमार सदर अस्पताल पहुंचे और उन्होंने तत्काल सीसीटीवी फुटेज खंगालना शुरू कर दिया।

वहीं घटना की सूचना गुमला थाना को भी दी गई. सीसीटीवी फुटेज में महिला बच्चे को लेकर भागते दिखाई दी. जांच के क्रम में एक महिला को मुख्य गेट से अंदर आते हुए देखा गया जो नर्स के ड्रेस में थी. उसने अपने मुंह में उसने मास्क लगा रखा था. वह सीधे एसएनसीयू वार्ड पहुंची और बच्ची की मां जो सोई हुई थी उसे उठाई और पूछने लगी कि तुम्हारे बच्ची को टीका लगा है महिला ने हां में जवाब दिया इसके बाद वह बच्ची को उठाकर जाने लगी और बोली कि तुम्हारे पति को नीचे भेज देना तुम मत आना. जब 5 मिनट बाद बच्चे की मां नीचे आई तो वह महिला नहीं थी जिसके बाद वह उस महिला को खोजने लगी. उसके बाद जब उसका पति आया तो बच्चे की मां ने उसको पूरी बात बताई। जिसके बाद दोनों मिलकर अपने बच्ची को ढूंढने लगे. जब बच्ची नहीं मिली तो इसकी जानकारी अस्पताल प्रबंधक को दी गई. महिला रतनी इंदवार और पति नागो खड़िया सिसई प्रखंड के रेड़वा के रहने वाले हैं. 30 मई को बच्ची का जन्म सिसई रेफरल अस्पताल में हुआ था जिसके बाद सिसई से जच्चा बच्चा को गुमला रेफर कर दिया गया था. सदर अस्पताल में बच्ची को आईसीयू में रखा गया था. बच्ची की स्थिति में सुधार होने के बाद उसे एसएनसीयू वार्ड में रखा गया।

बच्ची को चोरी करने के बाद महिला तेजी से नीचे आई और सड़क की ओर भागी इसके बाद पहले से तैयार एक बाइक सवार की बाइक में जाकर बैठी और दोनों तेजी से फरार हो गए. बाइक का नंबरजेएच 01एफ क्यू 2072 है. सीसीटीवी कैमरा में फुटेज निकालने के बाद पुलिस शहर के सभी मुख्य मार्ग में नाकाबंदी कर दी. सदर अस्पताल पहुंचे गुमला थाना प्रभारी महेंद्र करमाली ने कहा जल्द ही चोरों को पकड़ लिया जाएगा।

केशव टाइम्स डिजिटल संस्करण

संपादकीय

बक्सर, 16 जून 2025
website:keshavtimes.com
e-mail:keshavtimes1@gmail.com

सुभाषितम्

महान सौंदर्य, अत्यधिक ताकत, बहुत धन का वास्तव में कुछ खास उपयोग नहीं है। एक सच्चा हृदय सबसे ऊपर है। - बेंजामिन फ्रेंकलिन

ईरान के जवाबी हमले से घबराया इजराइल

ईरान और इजराइल के बीच युद्ध तेज हो गया है, यह टकराव इतिहास में एक नया अध्याय लिखने जा रहा है। इजराइल ने ईरान पर सुनयोजित रूप से कई परमाणु ठिकानों पर हमले किए। रिफाइनरी, एयरबेस, न्यूक्लियर ठिकानों से लेकर रेजिडेंशियल इलाकों मे इजराइल ने ईरान के कई इलाकों में भारी तबाही मचाई थी। जैसे ही रात का अंधेरा फैला, ईरान ने इजरायल के ऊपर जवाबी कार्रवाई की। ईरान के हमले से इजराइल कांप उठा। इजराइल को इस तरह के हमले की जरा भी उम्मीद नहीं थी। खासकर हाइफा पर हुए मिसाइल हमलों ने इजरायल के आर्थिक और सैन्य ढांचे को हिलाकर रख दिया। हाइफा पर भारत के अडानी समूह का नियंत्रण है। जहां इजराइल की सबसे बड़ी रिफाइनरी और प्रमुख पोर्ट स्थित हैं। हाइफा मे अब चारो ओर आग धधक रही है। पूरा हाईफा आग में झुलस रहा है। इससे अडानी समूह को भारी नुकसान हुआ है। वहीं इजराइल को भी भारी नुकसान उठाना पड़ा है। ईरान ने पहली बार हाइपरसोनिक मिसाइल का प्रयोग किया। जिससे इजराइल के एयर डिफेंस सिस्टम की नाकामी उजागर हो गई है। इस हमले में इजरायल की कई इमारतें धराशायी हो गईं हैं। सैकड़ों लोग घायल हुए हैं। इजराइल के सभी क्षेत्रों में भय का माहौल देखने को मिल रहा है। इन हमलों से घबराए प्रधानमंत्री नेतन्याहू बंकर में जाकर छिप गये है। ईरान के जवाबी हमले इजराइल के लिए यह स्पष्ट संकेत है। ईरान के साथ यह लड़ाई अब आसान नहीं है। इजराइल कई वर्षों से हिजबुल्ला, हमास जैसे संगठनों से लड़ता आया है। ईरान का यह जो जवाबी हमला था, उसके सामने अब इजरायल पहली बार असहज हो गया है। अभी तक यह माना जाता था कि इजराइल का मुकाबला करने की स्थिति किसी के पास नहीं है। इजराइल के पास बाहरी हमलो को रोकने और दूसरे देशों में हमले करने की जो तकनीकी है। उसका कोई भी देश मुकाबला नहीं कर सकते हैं। ईरान के इस हमले से यह धारणा अब टूट गई है। अमेरिका की 7.4 अरब डॉलर की आपात मदद और मिसाइल आपूर्ति के बावजूद इजराइल के लिए यह युद्ध अब आसान नहीं रहा। चीन और रूस का खुला समर्थन ईरान को मिल रहा है। जिससे यह टकराव वैश्विक राजनीतिक लड़ाई में बदलता जा रहा है। भारत ऐतिहासिक रूप से ईरान का सहयोगी रहा है। भारत और ईरान के बीच हजारों वर्ष पुराने संबंध हैं। इस युद्ध में कूटनीतिक रूप से भारत निष्क्रिय और असमंजस की स्थिति में दिखाई दे रहा है। भारत की चुप्पी और ईरान से दूरी, चीन को मध्य-पूर्व में ताकतवर शक्ति के रूप में स्थापित कर रही है। भारत को समझना होगा, संतुलित और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति ही भारत की पहचान रही है। वर्तमान में भारत का इजरायल के प्रति एकतरफा झुकाव न केवल भारत की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचाएगा। हमारी क्षेत्रीय भूमिका को भी वैश्विक स्तर पर कमजोर करेगा। इसका फायदा चीन उठा रहा है। जरूरत इस बात की है, भारत स्पष्ट रुख अपनाए। वर्तमान में अमेरिका और इजरायल जिस तरह से एकजुट होकर सारी दुनिया के देशों को धमका रहे हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जिस तरह से सारी दुनिया के देशों को टैरिफ बार के जरिए कंट्रोल करना चाहते थे। उसको लेकर अमेरिका का विरोध सारी दुनिया में बढा है। अमेरिका के मुकाबले चीन सबसे सशक्त भूमिका में नजर आने लगा है। पिछले दो दशक में चीन ने बिना किसी विवाद में पड़े, अपने व्यापार और कारोबार को तेजी के साथ बढ़ाया है। एशियाई देशों में समझौते के माध्यम से बहुत बड़े भूभाग पर चीन ने कब्जा किया है। चीन आर्थिक सामरिक और कूटनीति मे बड़ा शक्तिशाली हुआ है। भारत ही एक ऐसा देश है जो चीन के मुकाबले में खड़ा हो सकता है। चीन की कोशिश हमेशा भारत को आगे बढ़ने से रोकने की होती है। डोनाल्ड ट्रंप जिस तरीके की दादागिरी कर रहे हैं। उसको रोकने के लिए अब चीन और रूस जैसे शक्तिशाली देश ईरान के समर्थन में आकर खड़े हो गए हैं। जिसके कारण ईरान की स्थिति मजबूत हुई है। भारत की ईरान को लेकर चुप्पी, इजराइल के प्रति असाधारण प्रेम, पिछले दो वर्षों से फिलिस्तीन पर इजराइल के हमले से लाखों लोगों की मौत पर भारत की अनदेखी से भारत वैश्विक मंच पर बहुत कमजोर हुआ है। भारत के अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध खराब हुए हैं।

चिंतन-मनन

उपाय भी ठीक से हो

एक सास ने बहू से कहा, बहूरानी! मैं अभी बाहर जा रही हूं। एक बात का ध्यान रहे, घर में अंधेरा न घुसने पाए। बहू बहुत भोली थी। सास चली गई, सांझ होने को आई। उसने सोचा कि अंधेरा कहीं घुस न जाए, सारे दरवाजे बंद कर दिए। सब खिड़कियां बंद कर दीं। दरवाजे के पास लाठी लेकर बैठ गई। सोचा- दरवाजा खुला नहीं है, कोई खिड़की खुली है, कहीं भी कोई छेद नहीं। आएगा तो दरवाजा खटखटाएगा, लाठी लिए बैठी हूं, देखती हूं कैसे अन्दर आएगा। पूरी व्यवस्था कर दी। अंधेरा गहराने लगा। सोचा, कहां से आ गया! कहीं भी तो कोई रास्ता नहीं है। हो न हो दरवाजे से ही आ रहा है। अन्धकार को पीटना शुरू कर दिया। काफी पीटा कि निकल जाओ मेरे घर से! मेरी सास की मनाही है कि तुम्हें भीतर घुसना नहीं है! खूब लाठियां बजाई। लाठी टूटने लगी। हाथ छिल गए। लहूलुहान हो गए। अंधेरा तो नहीं गया। परेशान हो गई। सास आई। दरवाजा खोला। कहा, यह क्या किया? मैंने कहा था कि अंधेरे को मत आने देना घर में। वह बोली, देखो, मेरे हाथ देख लो। लहूलुहान हो गए। लाठी टूट गई। मैंने बहुत समझाया, बहुत रोका, पर इतना जिद्दी है कि माना ही नहीं और यह तो घुस ही गया। सास ने सिर पर हाथ रखा। कहा, बहूरानी! अंधेरे को मिटाया जाता है? क्या अंधेरा मिटता है? समझी नहीं तुम बात को। सास ने दीया जलाया, अंधेरा समाप्त हो गया। उपाय के बारे में हमारी जानकारी सही नहीं होती तो हम प्रयत्न तो करते हैं, परिश्रम करते हैं, पर अंधेरा मिटता नहीं।

आईएसआई का चेहरा हैं मोहम्मद यूनुस

-बी पी गौतम

बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस के क्रिया-कलापों से अब स्पष्ट हो गया है कि वे पाकिस्तान और आईएसआई का चेहरा हैं। बांग्लादेश अब, उस राह पर चल रहा है, जिस राह पर कट्टरपंथी और आईएसआई चलाना चाहती थी, इसीलिये 1949 में गठित हुई, उस आवामी लीग को प्रतिबंधित कर दिया गया है, जिसने 1971 में मुक्ति संग्राम का नेतृत्व किया था और मुक्ति संग्राम के दौरान बांग्लाभाषियों की हत्या एवं महिलाओं का यौन उत्पीड़न करने वाली जमात-ए-इस्लामी से प्रतिबंध हटा दिया गया है, साथ ही फांसी की सजा पा चुके एटीएम अजहरुल इस्लाम को दोष मुक्त कर दिया गया है एवं मोहम्मद यूनुस चीन की गोद में बैठने को उतावले दिखाई दे रहे हैं। उदारवादी बांग्लादेश को कट्टरपंथी देश बनाने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे मोहम्मद यूनुस का चेहरा बेनकाब हो गया है, वे अलोकप्रिय होते जा रहे हैं, इसलिये वे जहां भी जाते हैं, वहां उनके विरुद्ध जमकर प्रदर्शन किये जाते हैं, इस स्टोरी में बांग्लादेश में चल रही गतिविधियों पर ही चर्चा कर रहे हैं बीपी गौतम...

बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस को ब्रिटेन के लंदन में प्रदर्शनकारियों के गुस्से का सामना करना पड़ा। सैकड़ों ब्रिटिश बांग्लादेशी मोहम्मद यूनुस के होटल के बाहर जमा हो गये और यूनुस गो बैक के नारे लगाने लगे। अवामी लीग की यूके शाखा और अन्य संबंधित संगठनों से जुड़े प्रदर्शनकारियों ने मोहम्मद यूनुस के प्रशासन पर मानवाधिकारों के उल्लंघन, लिंचिंग, हत्याओं और बांग्लादेश में कानून व्यवस्था बर्बाद करने का आरोप लगाया। प्रदर्शनकारियों ने तख्तियां पकड़ी हुई थीं, जिन पर लिखा था कि यूनुस भीड़तंत्र के निमार्ता, जिहादियों को मुक्त करने और देशभक्तों को जेल में डालने वाले हैं, उनके इस्तीफे की मांग भी की गई।

प्रदर्शनकारियों ने यूनुस के खिलाफ नारे लगाये और उनके पुतले को जूतों की माला पहनाई। मोहम्मद यूनुस और उनके प्रेस सचिव शफीकुल आलम की तस्वीरें कूड़ेदान में डाल दी गईं। अवामी लीग समर्थकों ने सड़कों पर बैनर और पोस्टर लेकर शेख हसीना के समर्थन में नारे लगाये। यूनुस के प्रेस सचिव शफीकुल आलम को भी भारी विरोध का सामना करना पड़ा है, उन्हें प्रदर्शनकारियों से बचने के लिये पिछले दरवाजे से होटल से बाहर निकलना पड़ा लेकिन, प्रवासी बांग्लादेशियों ने उनके साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया और पीछा करने की कोशिश की, वह ब्रिटिश पुलिस सुरक्षा से घिरे होने के कारण किसी तरह बच पाये, इसके पहले जापान दौरे के दौरान मोहम्मद यूनुस को इसी तरह के विरोध प्रदर्शन का सामना करना पड़ा था।

यूनुस की लोकप्रियता बांग्लादेश में भी लगातार कम होती दिख रही है। अंतरिम सरकार और बांग्लादेश की सेना के अंदर तनाव बढ़ गया है, कई लोगों ने पिछले साल शेख हसीना को हटाये जाने के बाद देश को बेहतर बनाने के लिये पर्याप्त प्रयास न करने के लिये यूनुस को दोषी ठहराया है।

मोहम्मद यूनुस ने बुधवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को भारत की धरती से राजनीतिक बयान देने पर रोक लगाने की उनकी मांग को अनसुना कर दिया। युनूस ने कहा कि जब अप्रैल में बैंकॉक में बिम्सटेक शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय बैठक हुई थी तो, उन्होंने भारतीय धरती से शेख हसीना को राजनीतिक बयान देने से रोकने के लिये पीएम मोदी से अपील की थी।

लंदन के चैटम हाउस में बातचीत के दौरान यूनुस ने कहा कि भारत से शेख हसीना के प्रत्यर्पण के प्रयास जारी रहेंगे, उन्होंने कहा कि भारत से हम बहुत अच्छा रिश्ता रखना चाहते हैं, वह हमारा पड़ोसी है, हम उनके साथ कोई समस्या नहीं चाहते हैं लेकिन, भारतीय प्रेस के फेक न्यूज के कारण हर समय कुछ न कुछ दिक्कतें हो जाती हैं।

उन्होंने कहा कि यह बांग्लादेश को आशंकित करता है और गुस्सा दिलाता है, हम इस पर बहुत काबू पाने की कोशिश करते हैं लेकिन, साइबर स्पेस में बहुत सी चीजें घटित होती रहती हैं और हम उससे अलग नहीं रह सकते हैं। मोहम्मद युनूस ने कहा कि हम शांत रहने की कोशिश करते हैं, अचानक कुछ घटित होता है और फिर गुस्सा लौट आता है, इस समय हमारे लिये शांति स्थापित करना ही बड़ा काम है। बांग्लादेश सरकार के मुख्य सलाहकार प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस ने शुक्रवार को घोषणा करते हुये कि अगला राष्ट्रीय चुनाव अप्रैल 2026 के पहले पखवाड़े में आयोजित किया जायेगा। ईद-उल-अजहा की पूर्व संध्या पर राष्ट्र को संबोधित करते हुये उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग जल्द ही चुनाव की विस्तृत रूपरेखा पेश करेगा। यूनुस ने अपने संबोधन में कहा कि अंतरिम सरकार तीन मुख्य उद्देश्यों सुधार, न्याय और चुनाव के आधार पर सत्ता में आई है। यूनुस ने कहा कि सरकार ने स्वतंत्र, निष्पक्ष, प्रतिस्पर्धी और स्वीकार्य चुनाव आयोजित करने के लिये सभी दलों के साथ चर्चा की है, इसके अलावा न्याय, सुधार और चुनाव से संबंधित चल रही सुधार गतिविधियों की समीक्षा के बाद मैं आज देशवासियों को घोषणा कर रहा हूं कि अगले राष्ट्रीय चुनाव अप्रैल 2026 के पहले पखवाड़े में होंगे। यूनुस ने कहा कि हमारा लक्ष्य भविष्य में संभावित संकट को रोकना है, इसके लिये संस्थागत सुधार की जरूरत है। चुनाव प्रक्रिया से सीधे जुड़े संस्थानों में सुशासन सुनिश्चित किये बिना, छात्रों और नागरिकों की ओर से दिये गये सभी बलिदान बेकार हो जायेंगे, उन्होंने दोहराया कि मौजूदा प्रशासन का गठन तीन चीजों के लिये किया गया है, जिनमें सुधार, न्याय और चुनाव शामिल हैं। उन्होंने कहा कि हम यह सुनिश्चित करने के लिये हर जरूरी उपाय कर रहे हैं कि देश इस अवधि के दौरान स्वतंत्र और विश्वसनीय चुनाव कराने के लिये तैयार हो। चुनावों में बार-बार हेर-फेर के द्वारा एक राजनीतिक दल फासीवादी शासन में बदल गया। जिन लोगों ने उन दिखावटी चुनावों का आयोजन किया, उन्हें लोगों ने अपराधी करार दिया। उनसे जो शासन उभरे, उन्हें आखिरकार जनता ने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय को लेकर जनता और राजनीतिक दलों में काफी उत्सुकता है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, चुनाव दिसंबर से जून के बीच होंगे।

माता-पिता की सेवा तुल्य कोई पुण्य नहीं

- किशन सनमुखदास भावनानी

भारत आदि-अनादि काल से ही संस्कारों की खान रहा है। यहां की मिट्टी में ही गॉड गिफ्टेड संस्कारों की ऐसी अदृश्य शक्ति समाई हुई है कि मानवजन्म से ही संस्कारों की प्रतिभा मानवीय जीवों में समाहित हो जाती है इसमें कोई दो राय नहीं है!! परंतु जीव की उम्र बढ़ने के साथ-साथ पाश्चात्य संस्कृति की ललक अनेक अपवाद स्वरूपी मनीषियों में समाहित हो जाती है,जो बड़े बुजुर्गों का सम्मान तो नहीं परंतु अनादर करने पर उतारू हो जाते हैं? जिससे समाज में यह दूषित भावना पनपने का संदेह बना रहता है। इसलिए हम आज के युग में देख रहे हैं कि शासन-प्रशासन सामाजिक संस्थाएं, बुद्धिजीवी वर्ग, बड़े बुजुर्गों का सम्मान सुनिश्चित करने हमारी हजारों वर्ष पुरानी परंपरा, धरोहर और वैचारिक शक्तिबल को संरक्षित, सुरक्षित करने के लिए अनेक वेबिनार, कार्यक्रम, अभियान चलाए जा रहे हैं।

साथियों बात अगर हम वर्तमान परिपेक्ष्य की करें तो हमारे बड़े बुजुर्गों का ध्यान रखनें की जवाबदारी व जिम्मेदारी युवा वर्ग की अधिक है जिन्हें भारतमाता की गोद से मिले संस्कारों को प्राथमिकता से सजग होकर रेखांकित करना अनिवार्य है। बड़े बुजुर्गों की सेवा का उन्हें मान-सम्मान देकर अत्यधिक पुण्य कमाना है। क्योंकि जब कोई बुजुर्ग निशब्द तुम्हारा तुम्हारे झुके सिर पर अपनी कंपकंपाती उंगलियां फिरादे तो समझो वरदान खुशी और आशीर्वाद एकसाथ तुम्हें यूं ही मिल गया क्योंकि बड़े बुजुर्गों में ईश्वर अल्लाह का एक रूप समाहित होता है।

साथियों बात अगर हम वरदान खुशी और आशीर्वाद की करें तो वैश्विक स्तरपर भारत सबसे पुरानां आध्यात्मिकता में गहरीआस्था रखने वाला देश है यहां आध्यात्मिकता का विस्तार तेजी से हुआ है जो एक अच्छी बात है परंतु मेरा मानना है कि उसी तेजी के साथ मनीषियों की आस्था माता-पिता, बड़े बुजुर्गों के मान सम्मान सेवाभाव के प्रति अपेक्षाकृत कम होकर संकुचित होने के संकेत हाल के पश्चात संस्कृति की घुसपैठ के चलते मिल रहे हैं।

कई परिवार टूट रहे हैं, वृद्धाआश्रमों में बुजुर्गों की तादाद बढ़ रही है आखिर ऐसा क्यों ? मैंने अनेक ऐसे मनीषियों को भी देखा है जो अपने माता-पिता बड़े बुजुर्गों से तो अलग रहते हैं, उनकी सेवा खुशी का ध्यान नहीं परंतु आध्यात्मिकता क्षेत्र में उनके नामपर बहुत बड़े सेवा भावी होंनें और आस्था का डंका बजता है यह देख मुझे बहुत हैरानी होती है!!!

साथियों बात अगर हम ऐसे बड़े बुजुर्गों की करें जिनको अपनों ने ठुकराया है तो मैंने स्वयंम कुछ बुजुर्गों से बात की तो उनका बड़प्पन देखिए कि अपने दुख दर्द बांटने की अपेक्षा उन्होंने अपनों की तारीफ ही की!!! वाह क्या बात है!!! आप ईश्वर अल्लाह के तुल्य हैं कहकर अनायास ही मेरे हाथ उनके चरणों में झुक गए तो उनकी आंखों में आंसू आ गए।

साथियों ऐसे अनेक पीड़ित हर मेट्रोसिटी, शहर, गांव में हैं ऐसे किस्से हमें अपने शहरों में भी जरूर देखने को मिलते होंगे जिसे हम सब को मिलकर इस स्थिति को बदलना की ओर कदम बढ़ाना ही होगा।

साथियों बात अगर हम बड़े बुजुर्गों के वरदान खुशी और आशीर्वाद की करें तो मेरा मानना है कि इनकी आशीर्वाद वरदान इस सृष्टि में सबसे बड़ा है इसके तुल्य किसी आध्यात्मिक आस्था में आशीर्वाद वरदान नहीं होंगे बस हम मनीषियों को यह बात अपने हृदय व मस्तिष्क में फिट करनी होगी।

साथियों बात अगर हम नई पीढ़ी, युवकों की करें तो, बूढ़े व्यक्ति के पास स्मृतियां, जवान के पास कल्पनाएं हैं, यदि घर-घर दोनों का मेल बने तो कमाल हो जायेगा। धरती पर स्वर्ग उतर आयेगा!!! जबकि नई पीढ़ी को चाहिए माता-पिता के उत्तम गुणों के वारिस बनें, अपने बड़ों को मान दें, क्योंकि वृद्धों का जो वर्तमान है, वही युवाओं का भविष्य है। इसलिए यदि नई पीढ़ी अपने बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वाद वरदान लेंने, उनका देवताओं की तरह पूजन करने, मिलकर रहने, सहयोग करने की सोच अपना ले, तो घरों के अन्दर प्रेम, सद्भाव जाग जाएगा और धरती में स्वर्ग उतर आयेगा।

साथियों जरूरत है युवा-वर्ग माँ-बाप की अवहेलना न करे। बड़ों के प्रति सम्मान की भावना रहे। क्योंकि बूढ़ी आंखों में जब आंसू आते हैं, हृदय पर जब व्यंग बाण लगते हैं, शरीर काम नहीं करता और नींद आती नहीं तो ऐसे में व्यक्ति का जीना कठिन हो जाता है। वैसे भी बड़े-बुजुर्ग हमारी अमूल्य सम्पत्ति हैं। उनके पास अनुभवों का खजाना है, अतः उनके अनुभवों का लाभ उठाएं। कभी भूलकर भी उनसे अपशब्द न कहें। साथ ही अपने बच्चों को बड़ों के पास बैठने का अवसर दिया करें, क्योंकि उनके आशीवार्दों से बच्चे फलते-फूलते हैं। अन्य लोग स्वयं भी बुजुर्गों के पास दो मिनट बैठकर उनकी बात सुनें, उनका हाल-चाल पूछें।

जिस व्यक्ति के सिर पर माँ-बाप का साया है, वह धन्य है। घर में बड़े बुजुर्गों का होना बहुत सौभाग्य माना जाता है और माँ-बाप की सेवा करने वाली सन्तान श्रेष्ठ। बच्चे को माता-पिता से आशीर्वाद माँगना नहीं पड़ता, अपने आप हृदय से मिल जाता है और माँ-बाप के हृदय से निकले हुए इस आशीष की कोई समानता नहीं है।

बड़ी विडंबना का समय है पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण आज के युवा माँ-बाप को नमन-वन्दन करने में लजाते हैं,जब कि कोई बच्चा व युवा जब अपने माता-पिता, दादा-दादी अथवा सद्गुरु के चरणों में शीष झुकाता है, तो उनके दिल में आनन्द की हिलोर उठने लगती है और तेजरूपी प्रकाश की किरणें विनर्म्र होते ही चरणों में झुके सुपुत्र, सदशिष्य के अन्दर प्रवेश कर जाती हैं। जिसके प्रतिफलस्वरूप उस युवा को आयु, विद्या, यश और बल की प्राप्ति होती है। ये चारों अनमोल उपहार किसी अन्य कीमत एवं किसी अन्य स्थान से प्राप्त नहीं हो सकते। इनका केन्द्र तो माता-पिता, वृद्धजन एवं गुरुजन ही हैं। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बुजुर्गों की सेवा का फल बहुत मीठा हैं, जब कोई बुजुर्ग निशब्द तुम्हारे झुके सिर पर अपनी कंपकंपाती उंगलियां फि रा दें समझो वरदान खुशी और आशीर्वाद एक साथ मिला!!! बड़े बुजुर्गों माता पिता की सेवा तुल्य कोई पुण्य नहीं जीवन का सुख इनके श्री चरणों में है।

(-संकलनकर्ता लेखक - कर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए(एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र)

विदेश में हिंदी सिखाने और सीखने की व्यावहारिक समस्याएं और संभावित समाधान

-डॉ. शैलेश शुक्ला

हिंदी भाषा केवल भारत की नहीं, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। वर्तमान में हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। लगभग 60 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं, जिनमें से करोड़ों प्रवासी और विदेशी नागरिक हैं। अमेरिका, इंग्लैंड, फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में हिंदी भाषी समुदायों की मौजूदगी के कारण वहाँ हिंदी के सिखने और सिखाने की मांग तेजी से बढ़ी है।

फिर भी, हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की भाषा के रूप में स्थायित्व प्रदान करने के लिए केवल उसकी सांख्यिकीय उपस्थिति पर्याप्त नहीं है। जरूरत है सुव्यवस्थित, तकनीक-सक्षम, रोजगार-उन्मुख और सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित शिक्षण व्यवस्था की। इस लेख में हम विस्तार से उन व्यावहारिक समस्याओं का अध्ययन करेंगे जो विदेशों में हिंदी सिखाने और सीखने के मार्ग में बाधा बनती हैं और साथ ही संभावित समाधानों की चर्चा भी करेंगे। विदेशों में हिंदी सिखाने की सबसे बड़ी समस्या प्रशिक्षित और प्रमाणित हिंदी शिक्षकों की कमी है। बहुत से देशों में हिंदी शिक्षा प्रवासी समुदाय के स्वयंसेवी प्रयासों पर निर्भर होती है, जहाँ शिक्षक शुद्धतापूर्वक पढ़ाने के लिए न तो पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त कर पाते हैं और न ही उन्हें संस्थागत सहयोग मिलता है। कई बार स्थानीय विश्वविद्यालयों में हिंदी को पढ़ाने के लिए केवल भाषा जानना ही योग्यता मान ली जाती है, जबकि भाषा शिक्षण एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके लिए विषय विशेषज्ञता, भाषाशास्त्र की समझ, और पद्धतिगत प्रशिक्षण आवश्यक होता है। इस स्थिति का समाधान तभी संभव है जब भारत सरकार या विश्व हिंदी सचिवालय जैसे संस्थान वैश्विक स्तर पर हिंदी शिक्षकों के लिए प्रमाणित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ करें। यह ऋ्र्ड्ढ' ळ्ल्ल्र ्व्रीं१ ड्ढ१३्रं३ङ्खल्ल ढ१ड्ढें१ न केवल शिक्षकों को प्रशिक्षित करेगा, बल्कि उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता भी प्रदान करेगा। साथ ही, विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों को भी यह उत्तरदायित्व दिया जाना चाहिए कि वे स्थानीय स्तर पर ऐसे शिक्षकों की पहचान कर उन्हें समय-समय पर आवश्यक प्रशिक्षण उपलब्ध कराएं। हिंदी सीखने वाले विदेशी छात्रों की भाषा पृष्ठभूमि, संस्कृति, और उद्देश्य भारत के छात्रों से भिन्न होते हैं। लेकिन वर्तमान में जो पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यक्रम उपयोग में लाए जा रहे हैं, वे अधिकतर भारतीय छात्रों को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। इससे विदेशी विद्यार्थियों के लिए न तो भाषा सीखना सुगम होता है, न ही उनकी रुचि लंबे समय तक बनी रह पाती है। उदाहरण के लिए, भारतीय व्याकरण की गहन संरचनात्मक पढ़ाई शुरूआती विदेशी छात्रों के लिए बोझिल हो सकती है। इसके अतिरिक्त, कई देशों में आधुनिक शिक्षण उपकरणों जैसे इंटरैक्टिव सामग्री, ऑडियो-विजुअल सहायता, ऑनलाइन अभ्यास, आदि की भी भारी कमी है। परिणामस्वरूप शिक्षण पारंपरिक ढाँचे में सीमित रह जाता है जो आज के युवाओं के लिए आकर्षक नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिए एक बहुस्तरीय और लचीला पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए जो विभिन्न स्तरों (शुरूआती, मध्यवर्ती, उन्नत) और उद्देश्य (सांस्कृतिक, रोजगारपरक, शैक्षणिक) के अनुसार अनुकूलित हो।

दैनिक पंचांग

16 जून 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मिथुन में	मिथुन	05.14 बजे से
चंद्र	मकर में	कर्क	07.28 बजे से
मंगल	सिंह में	सिंह	09.44 बजे से
बुध	मिथुन में	कन्या	11.56 बजे से
गुरु	मिथुन में	तुला	14.06 बजे से
शुक्र	मेष में	वृश्चिक	16.21 ब.से
शनि	मीन में	धनु	18.37 बजे से
राहु	कुंभ में	मकर	20.42 बजे से
केतु	सिंह में	कुंभ	22.29 बजे से
राहुकाल		मीन	00.02 बजे से
7.30 से 9.00		मेष	01.32 बजे से
बजे तक		वृष	03.12 बजे से

सोमवार 2025 वर्ष का 167 वा दिन
दिशाशूल पूर्व **ऋतु** वर्षा।
विक्रम संवत् 2082 **शक संवत्** 1947
मास आषाढ़ (दक्षिण भारत में ज्येष्ठ)
पक्ष कृष्ण
तिथि पंचमी 15.32 बजे को समाप्त।
नक्षत्र धनिष्ठा 01.14 बजे रात्र को समाप्त।
योग वैधृति 11.07 बजे को समाप्त।
करण तैतिल 15.32 बजे तदनन्तर गर 03.13 बजे रात्र को समाप्त।
चन्द्रायु 19.9 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 23° 21'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872377
जूलियन दिन 2460842.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना जिल्हेज **तारीख** 19

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक	चर	05.43 से	07.14 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक	रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक	काल	08.45 से	10.17 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक	लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक	उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक	शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक	अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक	चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

विशेष

केसीआर आये जनता के सामने

तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव पिछले कई महीनो से सार्वजनिक कार्यक्रमों में नहीं आ रहे थे। हाल ही में वह कोलावरम बांध परियोजना से जुड़े मामले की जांच में शामिल हुए। इसके लिए पार्टी ने बड़े पैमाने पर इंतजाम किए थे।भारी भीड़ जुटाई गई थी। जांच एजेंसी को उन्होंने सरकार के फैसले को सही बताया। कई महीनो के बाद के चंद्रशेखर राव भारी भीड़ के साथ अवतरित हुए हैं। परिवार में जो झगड़ा चल रहा है। भाई बहन के बीच के झगड़े को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं। पार्टी और परिवार को जो नुकसान हुआ है। उसके बाद अब समझौता ही एकमात्र रास्ता बचा है। चंद्रशेखर की पार्टी भारत राष्ट्रीय समिति एक बार पुनः सक्रिय होगी।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के चुनाव की तारीख पर तारीख

भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए संगठन द्वारा बार-बार तारीख पर तारीख का ऐलान किया जा रहा है। हर बार बिना किसी कार्रवाई के तारीख बढ़ जाती है। राष्ट्रीय अध्यक्ष का कार्यकाल लोकसभा के चुनाव तक के लिए बढ़ाया गया था। इसके बाद कहा गया था,21 जुलाई तक पार्टी को नया राष्ट्रीय अध्यक्ष मिल जाएगा। उसके बाद पूरा साल निकल गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव नहीं हुआ।संगठन ने अप्रैल 2025 की तारीख तय की थी। वह भी निकल गई है। इसके बाद कहा गया की 9 जून तक पार्टी को नया अध्यक्ष मिल जाएगा। 9 जून की तारीख भी निकल गई है। अब कहा जा रहा है, संसद सत्र के पहले भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिया जाएगा।

कार्टून कोना

आज का इतिहास

1869 आस्ट्रेलिया के भीतरी इलाकों की खोज करने वाले ब्रिटिश नागरिक चार्ल्स स्टुअर्ट का निधन हुआ. 1925 राष्ट्रवादी नेता चित्तरंजन दास का निधन . 1948 किसी विमान का पहला अपहरण मकाओ और हांगकांग के बीच उड़ान के दौरान हुआ. जिसमें विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और अपहरणकर्ता ही बचा. 1952 खोए हुए विमान की तलाश कर रहे स्वीडिश विमान को सोवियत लड़ाकू विमानों को मार गिराया. 1975 ब्रिटेन और दक्षिण अफ्रीका के बीच नौसैनिक सहयोग 169 वर्ष के बाद समाप्त हो गया. 1976 अश्वेतों के स्कूल में अफ्रीकी भाषा थोपने के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका में छात्रों ने जबरदस्त विरोध प्रदर्शन किया. 1977 जर्मनी के राकेट इंजीनियर बर्नर बानब्राउन का निधन हुआ, उसने वी-1 और वी-2 राकेटों का डिजाइन तैयार किया था.

आज का राशिफल

मेष आज कार्यक्षेत्र में कुछ बदलाव आपकी पदोन्नति या विभागीय स्थानांतरण से जुड़े हो सकते हैं।

तुला आज शिक्षा, प्रतियोगिता या किसी कोर्स की तैयारी कर रहे जातकों के लिए सफलता का दिन है।

वृषभ आज जीवन सुखद रहेगा और किसी नजदीकी सदस्य से वित्तीय सहयोग या सलाह मिल सकती है।

वृश्चिक धन, सम्मान और यश में वृद्धि होगी। यदि आप जॉब में हैं तो आपके काम की प्रशंसा होगी।

मिथुन आज धन सम्मान के मामले में पिता का आशीर्वाद और वरिष्ठों का सहयोग मिलेगा।

धनु विशेषकर फर्नीचर, इलेक्ट्रॉनिक्स या वाहन से संबंधित। धन संबंधी लेन-देन में सतर्क रहें।

कर्क आर्थिक क्षेत्र में शुभ संकेत मिलेंगे। अचानक कोई रुका हुआ या भूला हुआ धन वापस मिल सकता है।

मकर लाभ और वरिष्ठों से प्रशंसा मिलेगी। व्यापार में विस्तार की योजना बन रही है।

सिंह राजनीतिक या प्रशासनिक क्षेत्र में कार्यरत जातकों को अप्रत्याशित सफलता मिल सकती है।

कुंभ स्वास्थ्य को लेकर खर्च हो सकता है। दस्तावेजों की गंभीरता से जांच करें।

कन्या आज भाग्य में वृद्धि के योग हैं। कार्यक्षेत्र में कठोर परिश्रम का पूर्ण फल मिलेगा।

मीन आज व्यापार में नई प्रगति होगी और पुराने क्लाइंट से दोबारा ऑर्डर मिलने की संभावना है।

16-06-2025 Final_16-06-2025 Final.qxd 6/15/2025 10:56 PM Page 7

आई प्याज बहार लाई

प्याज एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। हमारे देश में कुल सब्जी उत्पादन क्षेत्रफल के 11.4 प्रतिशत भू-भाग पर प्याज की खेती हो रही है व इसकी खेती से कुल सब्जी उत्पादन में 10.4 प्रतिशत का योगदान मिल रहा है। स्थानीय खपत के अलावा निर्यात भी किया जाता है। मध्य पूर्व के बाजारों में भारतीय प्याज की मांग विशेषकर इसकी अच्छी गुणवत्ता के कारण सदैव बनी रहती है।

जलवायु

प्याज के लिए समसीतोष्ण जलवायु सर्वोत्तम समझी जाती है, प्याज मूलरूप से सर्दी में उगाया जाता है, लेकिन खरीफ की किस्में प्राप्त होने पर उनको खरीफ में भी लगाया जाने लगा है। सर्वोत्तम पैदावार के लिये 15–21 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तथा 10 घंटे वाले लम्बे दिन उपयोगी है।

भूमि

प्याज की खेती के लिए उपजाऊ बलुई दोमट या दोमट भूमि में उपयुक्त रहती है। खरीफ फसल हेतु खेत चयन में सावधानी रखें। खेत में उपयुक्त जल निकास की व्यवस्था हो।

किस्म

एन–53, एग्री फाउण्ड रेड डार्क,भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड, भीमा रेड,भीमा सुभ्रा,अर्का कल्याण

भूमि की तैयारी

खेत की गहरी जुताई करके खेत को भुर–भुरा बना लेना चाहिये।

बीज दर

खरीफ फसल हेतु 12–15 कि. प्रति हेक्टे. बीज पर्याप्त रहता है।

बुवाई समय

नर्सरी में बुवाई का उपयुक्त समय मई–जून है।

नर्सरी तैयार करना

प्याज की नर्सरी हेतु उपजाऊ, जल निकास युक्त तथा सिंचाई की सुविधा युक्त भूमि का चयन करें। एक हेक्टेयर में प्याज लगाने हेतु 500 वर्ग मीटर में नर्सरी तैयार करनी चाहिये, नर्सरी क्यारी 1 मीटर चौड़ी व 15 सेमी. ऊंची बनाये। क्यारी में सिंचाई हेतु बूंद–बूंद सिंचाई का स्प्रिंकलर का उपयोग भी किया जा सकता है। अधिक गर्मी से बचाने के लिये शेड नेट का उपयोग किया जा सकता है।

रोपाई की दूरी

प्याज की पौध को पंक्तियों में 15–20 सेमी की दूरी पर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखते हैं।

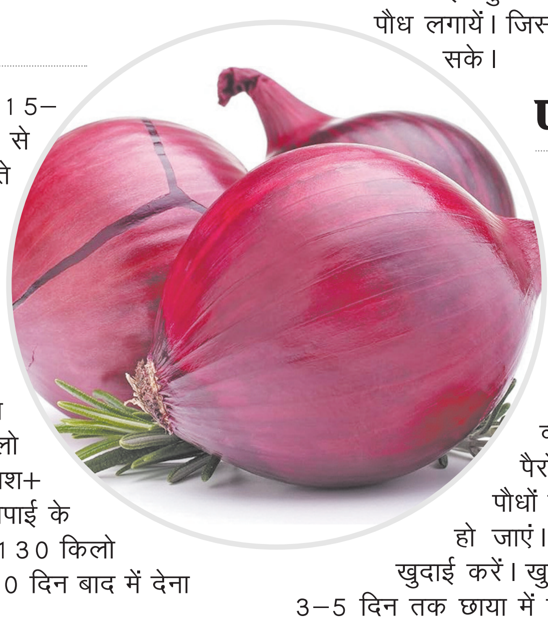

खाद एवं उर्वरक

खेत तैयार करते समय 25–30 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद मिट्टी में मिलाये तथा 130 किलो यूरिया+310 किलो फास्फोरस +100 किलो पोटाश+ 20किलो सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व मिट्टी में मिलायें। शेष यूरिया 130 किलो प्रति हेक्टेयर को रोपाई में 30–40 दिन बाद में देना चाहिये।

पौध रोपण

वर्षा में रोपाई हेतु ऊंची क्यारी या मेड़ नाली पद्धति से ही पौध लगायें। जिससे जल निकास सुगमता पूर्वक हो सके।

प्याज की खुदाई

सामान्यत: रबी फसल में तैयार होने पर पत्तियों के शीर्ष पीले पड़कर सूख जाते हैं। तब सिंचाई रोक दें तथा इसके 10–15 दिन बाद सिंचाई करें। खरीफ मौसम में पत्तियां गिरती नहीं हैं अत: गांठों का आकार 6–8 सेमी. व्यास का हो जायें तो पत्तियों को पैरों से जमीन पर गिरा दें। जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाये तथा गांठें ठोस हो जाएं। इससे 15 दिन बाद खुरपी से खुदाई करें। खुदाई के बाद कंदों को पत्तों सहित 3–5 दिन तक छाया में रखें, इसके बाद 2.0–2.5 सेमी, डंठल छोड़कर पत्तों को काटें तथा अच्छी तरह सुखा लें।

जल प्रबंधन

साधारणत: खरीफ फसल हेतु सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी वर्षा नहीं होने परखेत में नमी बनाये रखने हेतु हल्की सिंचाई करें। खरीफ प्याज में जल निकास का उचित प्रबंध करना महत्वपूर्ण है।

निंदाई-गुड़ाई

प्याज के अच्छे उत्पादन के लिये खेत का खरपतवारों से मुक्त रखें। अच्छी फसल के लिए शुरू में 2–3 बार खरपतवार निकालना आवश्यक है। खरपतवारनाशक के रूप में बासालिन 2–2.5 लीटर/हेक्टर रोपाई के तुरन्त बाद छिड़काव करें तथा 40–45 दिन बाद निंदाई–गुड़ाई करें।

उपज

200–250 क्वि/हेक्टेयर तक उपज मिल जाती है।

पौध नर्सरी महिलाओं की आय का स्त्रोत

पौध तैयार करने के लिए वैज्ञानिक सूझ–बूझ का ध्यान दें ताकि मेहनत, लागत, खर्च व समय की बचत हो सके।

नर्सरी में पौध तैयार करने की विधि

अ : पॉली बैग में पौध तैयार करना

इस विधि के लिए 200 गेज मोटी पालीथिन शीट के बने 20×10 सेमी आकार वाले पाली बैगों की आवश्यकता होती है। इन पालीबैगों में नीचे तथा बगल में छेद कर दें। जिससे वायु का संचार व उचित जल निकास बना रहता है। इन थैलियों में छनी हुई सड़ी गोबर की खाद तथा मोटी बालू का समानुपाती मिश्रण भरा जाता है मिश्रण भरने से पहले मिट्टी का निजर्मीकरण कर लिया जाता है। कद्दूवर्गीय (करेला, लौकी, स्कवाश, कद्दू, तरबूज आदि) बीजों का आवरण सख्त होने के कारण बोने से पहले रातभर पानी में भिगा दें। प्रत्येक बैग में आधा से एक सेमी की गहराई पर दो से तीन बीज बोकर हल्की सिंचाई कर दें मुख्यत: वर्षा ऋतु में पौध तैयार करने के लिए 3 से 5 मीटर चौड़ी तथा जमीन की सतह से 15 से 20 से.मी. ऊंची उठी हुई क्यारियों के बीच में 30 से.मी. स्थान अवश्य छोड़ें इससे वर्षा का पानी इस स्थान से होता हुआ बाहर निकल जाता है तथा क्यारी ऊंची करने के लिए मिट्टी इसी स्थान से मिल जाती है। इसके साथ–साथ खरपतवार निकालने और कीट व फफूंदनाशक दवा के प्रयोग करने में सुविधा होती है

ऊंची उठी हुई क्यारी विधि

मुख्यत: वर्षा ऋतु में पौध तैयार करने के लिए 3 से 5 मीटर चौड़ी तथा जमीन की सतह से 15 से 20 से.मी. ऊंची उठी हुई क्यारियों के बीच में 30 से.मी. स्थान अवश्य छोड़ें इससे वर्षा का पानी इस स्थान से होता हुआ बाहर निकल जाता है तथा क्यारी ऊंची करने के लिए मिट्टी इसी स्थान से मिल जाती है। पौधशाला का स्थान थोड़ा ऊंचाई व ढालू हो ताकि वहां पानी न भरे। सूर्य का प्रकाश पूरे दिन मिले। 1 वर्ग मी. में 2 किग्रा. पकी गोबर की खाद तथा भारी मिट्टी में 2–3 किग्रा. बालू मिला दें। मिट्टी में फफूंद नाशक जैसे कैप्टान 5–6 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर मिट्टी तर कर दें। इसी प्रकार कीटनाशक के रूप में फ्यूराडान की 5 ग्राम मात्रा प्रति वर्ग मीटर पौधशाला की क्यारी में मिलायें।

बीजोपचार

बीजों को 2 ग्राम थाइरम कैप्टान तथा 1 ग्राम बाविस्टीन प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बोयें।

मृदा सौर्यन या आतपन द्वारा

यह निजर्मीकरण की सबसे सस्ती विधि है। इस विधि में क्यारियां बुवाई के 7.8 सप्ताह पूर्व तैयार की जाती है तथा इनको पानी से पूरी तरह तर करके नम करते हैं। इसके पश्चात 200 से 300 गेज मोटी पारदर्शी प्लास्टिक से क्यारियों को चारों तरफ भली–भांति ढककर गीली मिट्टी से दबाकर वायुरोधित कर देते हैं। इस प्लास्टिक आवरण को 7.8 सप्ताह पश्चात एवं बीज बोने से 2.3 दिन पूर्व ही हटायें। यह विधि उसी दशा मे पूर्णतया प्रभावकारी होती है। जब दिन का तापमान 35 से 40 डिग्री सैल्सियस या इससे अधिक हो तथा मौसम शुष्क एवं सूर्य चमकदार हो। पौधशाला में आर्द्रगलन बीमारी अधिक लगती है। इस बीमारी की रोकने के लिये ट्राईकोडर्मा

6–8 ग्राम 1 किग्रा बीज के लिये ओर 10–20 ग्राम 1 कि.ग्रा. कम्पोस्ट या गोबर की खाद मिलाकर एक वर्गमीटर मृदा के शोधन के लिए प्रयोग करें।

नर्सरी से उपज व आमदनी –पौध नर्सरी की 3×10 मीटर क्षेत्र में नर्सरी स्थापना (भूमि की तैयारी, समतलीकरण, क्यारियों का निर्माण, पौध संरक्षण दवायें, बीज, गोबर खाद हेतु) के प्रारम्भ में लगभग 3000 रुपये व्यय आता है जो बाद में 2000–3000 प्रति 30 वर्ग मीटर आता है जिससे 2,00,000 पौधे प्राप्त किये जा सकते है सब्जियों की पौध बिक्री 25 रू. प्रति सैकड़ा करने से 8000–10000 रुपये की आमदनी होती है।

स्थान एवं भूमि का चुनाव

- अच्छी नर्सरी के लिए उचित जल निकास वाली बलुई दोमट भूमि अच्छी होती है।
- क्यारी का चयन ऊंचे स्थान पर करें जहां पर पानी का जमाव बिल्कुल न हो। इसके साथ ही प्रत्येक वर्ष पौधशाला नई जगह पर उगायें।
- सूर्य के प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था हो तथा सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था हो।
- आवास से कम दूरी पर नहीं हो ताकि पौधशाला की देखरेख व निरीक्षण समय–समय पर हो सके।

16-06-2025 Final_16-06-2025 Final.qxd 6/15/2025 10:56 PM Page 8

तेल, टिकट और टमाटर सब महंगे! भारत को लगेगा सबसे बड़ा झटका

नई दिल्ली/तेहरान। मध्य-पूर्व में तनाव एक बार फिर विस्फोटक स्थिति में पहुंच गया है। अमेरिका की ओर से ईरान को परमाणु संधि के लिए मनाने के तमाम प्रयास विफल होने के बाद, इजरायल ने बीते गुरुवार देर रात 'ऑपरेशन राइजिंग लॉयन' के नाम से बड़ा हवाई हमला किया। इसके जवाब में ईरान ने भी कड़ा रुख अपनाते हुए ड्रोन और मिसाइल हमलों की झड़ी लगा दी। हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि अब इसे एक खुला युद्ध माना जा रहा है, और इसका असर सिर्फ इन दो देशों तक सीमित नहीं है – इसका सीधा असर भारत और दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है।

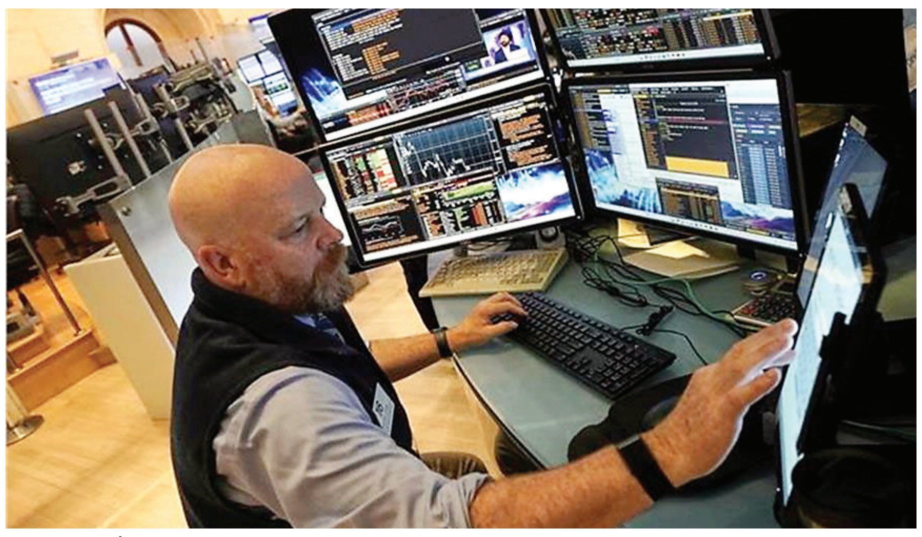

क्या हुआ अब तक युद्ध का पहला अध्याय

- **इजरायल के हमले:** इजरायल ने ईरान की सैन्य और परमाणु ठिकानों को निशाना बनाकर हमला किया। इसका मकसद था ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रोकना।
- **ईरान का जवाब:** ुक्रवार देर रात ईरान ने इजरायल पर पलटवार करते हुए 200 से ज्यादा मिसाइलें दाग दीं। ड्रोन हमले पहले ही किए जा चुके थे।
- **ईरान का बयान:** ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने कहा किइजरायल ने अपनी तबाही खुद तय कर ली है।
- **अमेरिकी चेतावनी:** पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चेतावनी दी है कि अगर हालात नहीं सुधरे, तो यह युद्ध बड़े पैमाने पर वैश्विक संघर्ष में बदल सकता है।
- **हवाई यात्रा होगी महंगी:** ईरान और इराक के एयरस्पेस बंद हो चुके हैं, और पाकिस्तान का रास्ता पहले से ही बंद है। अब भारत से यूरोप, अमेरिका और कनाडा की उड़ानों को लंबा रास्ता लेना पड़ेगा। इससे यात्रा का समय और खर्च दोनों बढ़ेंगे, और हवाई टिकट महंगे हो जाएंगे।
- **तेल के दामों में आग:** युद्ध शुरू होते ही कच्चे तेल की कीमतें 9 प्रतिशत तक बढ़ गईं। कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया है कि अगर हालात और बिगड़े, तो क्रूड की कीमतें और 8-9 प्रतिशत बढ़ सकती हैं। भारत अपनी जरूरत का 85 प्रतिशत तेल आयात करता है, इसलिए दाम बढ़ने का सीधा असर मंहगाई और आम जनता की जेब पर पड़ेगा।
- **आयात बिल बढ़ेगा:** कमोडिटी विशेषज्ञों का मानना है कि दो दिनों में क्रूड की कीमतों में 15 प्रतिशत उछाल आया है। अगर यह रफ्तार जारी रही, तो भारत का आयात बिल कई अरब डॉलर तक बढ़ सकता है। इससे सरकार पर आर्थिक दबाव बढ़ेगा।
- **महंगाई का खतरा:** तेल महंगा होने से परिवहन, माल ढुलाई, निर्माण सामग्री, टायर, पेंट्स और ल्यूब्रिकेंट जैसे उत्पाद भी महंगे हो जाएंगे। इसका असर रोजमर्रा की चीज़ों पर पड़ेगा, और खुदरा महंगाई में 0.5 प्रतिशत तक इजाफा हो सकता है।
- **रुपये पर दबाव:** जैसे ही संकट बढ़ता है, निवेशक 'डॉलर' जैसे सुरक्षित विकल्पों की तरफ भागते हैं।
इससे रुपया कमजोर होता है, जिससे आयात और महंगा हो जाता है और ट्रेड और करंट अकाउंट डेफिसिट पर दबाव आता है।
- **खाड़ी में काम कर रहे भारतीयों पर संकट:** लगभग 1 करोड़ भारतीय खाड़ी देशों में काम करते हैं। अगर यह युद्ध और फैला, तो उनकी सुरक्षा और नौकरी दोनों पर संकट आ सकता है।

1,900 रुपए बढ़ गया पीली धातु का रेट, निवेशकों को मिल रहा जबरदस्त रिटर्न

नईदिल्ली, एजेंसी। इस हफ्ते सोना–चांदी निवेशकों को शानदार रिटर्न दे रहे हैं। कीमतों में लगातार तेजी देखी जा रही है और दोनों धातुएं

रिकॉर्ड स्तर के करीब पहुंच गई हैं। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन के ताजा आंकड़ों के अनुसार, सोना और चांदी दोनों की कीमतों में इस सप्ताह अच्छी–खासी बढ़त दर्ज की गई है। पिछले शनिवार यानी 7 जून को सोना 97,145 रुपए पर था, जो अब (14 जून) को 99,058 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 1,913 रुपए बढ़ी है। 13 जून को सोने ने 99170 रुपए का ऑल टाइम हाई बनाया था। वहीं, चांदी पिछले शनिवार को 1,05,285 रुपए पर थी, जो अब 1,06,167 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई है। इस तरह इस हफ्ते इसकी कीमत 882 रुपए बढ़ी है। वहीं 10 जून को चांदी ने 1,07,000 का ऑल टाइम हाई बनाया था।

4 महानगरों में सोने की कीमत– दिल्ली : 24 कैरेट सोने की कीमत 1,01,830 और 22 कैरेट सोने की कीमत 93,350
मुंबई : 24 कैरेट सोने की कीमत 1,01,680 और 22 कैरेट सोने की कीमत 93,200
कोलकाता : 24 कैरेट सोने की कीमत 1,01,680 और 22 कैरेट सोने की कीमत 93,200
चेन्नई : 24 कैरेट सोने की कीमत 1,01,680 और 22 कैरेट सोने की कीमत 93,200

पेन कार्ड यूजर्स के लिए बड़ी खबर, देना पड़ सकता है 10,000 का जुर्माना

नईदिल्ली, एजेंसी। अगर आपका पेन कार्ड इनएक्टिव हो गया है और आप अब भी इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, तो सतर्क हो जाइए। आयकर विभाग ने ऐसे पेन कार्ड धारकों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है। विभाग ने स्पष्ट किया है कि इनएक्टिव पेन कार्ड का उपयोग करने पर आयकर अधिनियम की धारा 272क्च के तहत 10,000 तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। कई करदाता इस बात से अनजान हैं कि उनका पेन कार्ड वैध नहीं रहा है और वे पहले की तरह उसका इस्तेमाल बैंकिंग, वित्तीय या आयकर संबंधी कामों में कर रहे हैं। ऐसे मामलों में यह लापरवाही अब महंगी साबित हो सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि जिन लोगों ने अब तक अपने पेन को आधार से लिंक नहीं कराया है, उनका पेन इनएक्टिव हो चुका है। ऐसे लोगों को तुरंत अपना पेन आधार से लिंक कराना चाहिए ताकि कानूनी कार्रवाई और जुर्माने से बचा जा सके।

इन काम में आता है पेन कार्ड

पेन कार्ड का इस्तेमाल सिर्फ आयकर रिटर्न भरने के लिए ही नहीं बल्कि बैंकिंग, निवेश, प्रॉपर्टी की खरीद–फरोख्त, लोन लेने और अन्य वित्तीय लेन–देन के लिए भी जरूरी होता है। यदि किसी का पेन इनएक्टिव हो गया है और वह व्यक्ति इसे जानबूझकर या अनजाने में इस्तेमाल करता है, तो आयकर विभाग की धारा 272क्चके तहत उस पर 10,000 रुपए तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। अगर आप जानना चाहते हैं कि आपका पेन कार्ड एक्टिव है या नहीं, तो आप घर बैठे यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए आपको आयकर विभाग की ई–फाइलिंग वेबसाइट पर जाकर विकल्प पर क्लिक करना होगा।

कर्मचारियों को बड़ा झटका

8वां वेतन आयोग जनवरी 2026 में नहीं होगा लागू

नईदिल्ली, एजेंसी। देशभर में केंद्र सरकार के करीब 1 करोड़ कर्मचारी और पेंशनभोगी इस वक्त एक सवाल को लेकर सबसे ज्यादा उत्सुक हैं ङ्क क्या आठवां वेतन आयोग समय पर लागू होगा इस आयोग से ना सिर्फ सैलरी में बढ़ोतरी की उम्मीद जुड़ी है, बल्कि पेंशन और अन्य भत्तों में भी बड़े बदलाव की संभावना है। लेकिन मौजूदा हालात को देखते हुए यह सपना फिलहाल टलता हुआ नजर आ रहा है।

जनवरी 2026 की डेडलाइन खतरे में– एक रिपोर्ट के अनुसार, 8वें वेतन आयोग की शुरुआत तय समय से टल सकती है। याद दिला दें कि 7वां वेतन आयोग फरवरी 2014 में गठित हुआ था और उसकी सिफारिशें जनवरी 2016 में लागू की गई थीं। अब अगर सरकार जून 2025 तक नए आयोग के टीओआर यानी दिशा-निर्देश और अधिकार तय नहीं करती, तो जनवरी 2026 से लागू कर पाना लगभग असंभव माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर प्रक्रिया जल्द शुरू नहीं हुई, तो इसका अमल 2026 के आखिर या 2027 की शुरुआत तक खिसक सकता है।

सरकार से क्या कर रही है कर्मचारी वर्ग की उम्मीद

कर्मचारी यूनियन और पेंशनर्स संगठन लगातार सरकार से 8वें वेतन आयोग की जल्द घोषणा की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि मुद्रास्फीति और जीवनयापन की लागत तेजी से बढ़ रही है, ऐसे में मौजूदा वेतन ढांचा वास्तविक खर्चों को कवर करने में नाकाम हो रहा है। अब तक सरकार की ओर से ना कोई आधिकारिक घोषणा हुई है और ना ही कोई स्पष्ट संकेत। ऐसे में ये कहना मुश्किल है कि आयोग कब तक गठित होगा और उसकी सिफारिशें कब लागू होंगी। पर इतना जरूर है कि देश के करोड़ों कर्मचारियों और पेंशनभोगियों की निगाहें सरकार के अगले कदम पर टिकी हैं।

ईरान–इजरायल संघर्ष का असर रहेगा जारी

नईदिल्ली, एजेंसी। स्थानीय शेयर बाजार की दिशा इस सप्ताह ईरान-इजरायल संघर्ष, ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतों, मुद्रास्फीति के आंकड़ों और अमेरिकी केंद्रीय बैंक के ब्याज दर पर निर्णय से तय होगी। एक्सपर्ट्स ने यह राय जताते हुए कहा है कि शुल्क से जुड़ी खबरें भी बाजार की दिशा को प्रभावित करेंगी।

इन कंपनियों के शेयरों में 3–5 प्रतिशत टूटा– निफ्टी50 कल 1.14 प्रतिशत और सेंसेक्स 1.30 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। बीएसई मिडकैप इंडेक्स में 0.90 प्रतिशत, बीएसई स्मॉलकैप में 0.13 प्रतिशत, निफ्टी बैंक इंडेक्स में 1.9 प्रतिशत की गिरावट बीते हफ्ते देखने को मिली थी। निफ्टी इंडेक्स में इटरनल, अडानी पोर्ट्स, टाइटन कंपनी, पावर ग्रिड, टाटा स्टील, टाटा कंज्यूमर, महिंद्रा एंड महिंद्रा, ट्रेंट, एचडीएफसी बैंक, श्रीराम फाइनेंस, आईसीआईसीआई बैंक और हिंदुस्तान यूनिलीवर के शेयरों में 3 से 5 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुआ है।

इजारयल–ईरान तनाव का दिखा असर– पिछले सप्ताह शेयर बाजारों में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिला और भू-राजनीतिक तनाव बढ़ने के बीच बाजार नुकसान के साथ बंद हुआ। बाजार में जोखिम से बचने की भावना दिखाई दी। कच्चे तेल की कीमतों में उछाल और आपूर्ति में अड़चन की आशंका से निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई। फाइनेंशियल सर्विसेज कंपनी अल्मंड्ज़ इंस्टिट्यूशनल इक्विटीज के बिक्री प्रमुख केतन विकम ने कहा,इजरायल-ईरान संघर्ष के बीच पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बाद भारतीय शेयर बाजारों का रुख वैश्विक बाजारों से तय होने की संभावना है। बाजार में निराशा देखने को मिल सकती है, जिससे निवेशक जोखिम वाली संपत्तियों से दूरी बना सकते हैं। इसके अलावा कारोबारी बुधवार को फेडरल रिजर्व के ब्याज दर पर निर्णय से पहले सतर्कता बरतेंगे। जापान और ब्रिटेन के केंद्रीय बैंक भी अपनी ब्याज दरों की अलग-अलग घोषणा करेंगे। पिछले सप्ताह शुक्रवार को सेंसेक्स और निफ्टी में करीब एक प्रतिशत की गिरावट आई। कमजोर वैश्विक बाजारों और ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतों में उछाल ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया।

फेडरल रिजर्व की बैठक पर भी रहेगी निगाह– जियोजीत इन्वेस्टमेंट लिमिटेड के रिसर्च हेड विनोद नायर ने कहा,आगे की ओर देखें, तो ऊंचे मूल्यांकन और भू-राजनीतिक जोखिमों के बीच निवेशक सतर्कता बरतेंगे। अब सभी की निगाहें आगामी फेडरल रिजर्व की बैठक पर है। भविष्य के नीतिगत संकेतों के लिए फेडरल रिजर्व की टिप्पणी और आर्थिक अनुमान पर सभी की नजर रहेगी। रेलिगेयर ब्रोकिंग लिमिटेड के सीनियर वाइसप्रेसीडेंट (रिसर्च) अजित मिश्रा ने कहा,आगामी दिनों में भू-राजनीतिक अनिश्चितता और केंद्रीय बैंक की महत्वपूर्ण बैठकों के बीच बाजार में उतार-चढ़ाव रहने की आशंका है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के आगामी नीतिगत निर्णय पर कड़ी नजर रखी जाएगी। उन्होंने कहा कि घरेलू मोर्चे पर मानसून की प्रगति, कच्चे तेल की कीमतों के रुझान, थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़ों और एफआईआई (विदेशी संस्थागत निवेशकों) की गतिविधियों पर सभी का ध्यान रहेगा। एक्सपर्ट्स ने कहा कि वैश्विक बाजार का रुख और डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल पर भी निवेशक नजर रखेंगे। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के रिसर्च हेड सिद्धार्थ खेमका ने कहा,कुल मिलाकर, हम उम्मीद करते हैं कि कमजोर वैश्विक संकेतों के कारण बाजार में सुस्ती बनी रहेगी, जबकि उद्योग आधारित खबरों से विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियां प्रभावित होंगी।

इस्राइल-ईरान तनाव से होर्मुज जलडमरूमध्य पर संकट, भारत को क्यों करनी चाहिए चिंता

नईदिल्ली, एजेंसी। इस्राइल ने शुक्रवार तड़के ईरान की राजधानी तेहरान पर हमला किया। इस्राइली सेना ने ईरान के परमाणु ठिकानों को निशाना बनाया। जवाबी कार्रवाई करते हुए शनिवार को ईरान ने भी इस्राइल पर हमला शुरू कर दिया। ईरान-इस्राइल के बीच बढ़ते तनाव की स्थिति पश्चिम एशिया के अलावा भारत जैसे देशों पर भी असर डाल सकती है।

वैश्विक चिंता का मुख्य कारण होर्मुज जलडमरूमध्य है।होर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया के महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में से एक है क्योंकि यह फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी को जोड़ता है। दुनिया के तेल परिवहन का एक बड़ा हिस्सा इसी रास्ते से गुजरता है। यह ईरान और ओमान के बीच स्थित है। अगर यहां तनाव और बढ़ता है तो तेल की आपूर्ति पर असर पड़ेगा और कीमतें बढ़ जाएंगी। इससे भारत सहित दुनिया भर में ईरान और इस इलाके से आने वाले ईंधन पर निर्भर रहने वाली कई देशों की अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित हो सकती हैं। वेल्थ मैनेजमेंट फर्म जूलियस बेयर के अर्थशास्त्री नॉबर्ट रकर ने कहा कि भू-राजनीति वापस आ गई है। ईरान पर इस्राइल के हमले से क्षेत्रीय तनाव बढ़ने की आशंका बढ़ गई है।

ऐसी स्थिति में तेल को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है और कीमतें बढ़ सकती हैं। स्थिति अब भी अस्थिर हैं। आने वाले दिनों और हफ्तों में पता चलेगा की तनाव कितना बढ़ा है। इसका विशेष रूप से भारत पर असर पड़ रहा है। भारत के दो-तिहाई से अधिक तेल आयात और लगभग आधे तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) आयात होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर ही गुजरते हैं।

24 कंपनियां इस हफ्ते ट्रेड करेंगी एक्स-डिविडेंड

मुंबई। शेयर बाजार में इस हफ्ते 24 कंपनियां एक्स-डिविडेंड स्टॉक के तौर पर ट्रेड करेंगी। इन 24 कंपनियों में बजाज ऑटो लिमिटेड, रिलायंस इंडस्ट्रियल इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड, टाटा कम्युनिकेशन्स लिमिटेड भी एक है। आइए डीटेल्स में जानते हैं इन कंपनियों के विषय में -

16 जून 2025 को एक्स–डिविडेंड ट्रेड करने वाली कंपनियां–टाटा टेक्नोलॉजीज की तरफ से एक शेयर पर 8.35 रुपये का डिविडेंड, एलकेपी सिक्योरिटीज लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 30 पैसे, टाटा टेक्नोलॉजीज लिमिटेड की तरफ से हर एक शेयर पर 3.35 रुपये और हनीवेल ऑटोमेशन इंडिया लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 105 रुपये का डिविडेंड दिया जाएगा।

17 जून को 3 कंपनियां ट्रेड करेंगी एक्स–डिविडेंड– हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड ने एक शेयर पर 10 रुपये, शंकर बिल्डिंग प्रोडक्ट्स लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 3 रुपये का डिविडेंड दिया जाएगा।

18 जून को कौन सी कंपनियां ट्रेड करेंगी एक्स–डिविडेंड– द्रस्ल्ह्वस्द्धह्ल्ड्ड स्ह्लस्न ने 6 मई को बताया था कि एक शयेर पर निवेशकों को 1.25 रुपये का डिविडेंड दिया जाएगा। इस डिविडेंड के लिए कंपनी ने 18 जून को रिकॉर्ड डेट तय किया है।

19 जून को एक्स–डिविडेंड ट्रेड करने वाली कंपनियां– रिलायंस इंडस्ट्रियल इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड ने एक शेयर पर 3.5 रुपये और पैनासॉनिक कॉर्बन इंडिया कंपनी लिमिटेड ने एक शेयर पर 12 रुपये का डिविडेंड देने का फैसला किया है।

20 जून को एक्स–डिविडेंड ट्रेड करने वाली कंपनियां– बजाज ऑटो लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 210 रुपये, एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 2.1 रुपये, टाटा पावर कंपनी लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 2.25 रुपये, टॉरेंट फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 6 रुपये, सुप्रीम इंडस्ट्रीज लिमिटेड की तरफ से एक शेयर पर 24 रुपये, ट्रांसकॉर्प इंटरनेशनल लिमिटेड 0.30 रुपये, रॉजरी बॉयोटेक लिमिटेड ने एक शेयर पर 50 पैसे का डिविडेंड देने का फैसला किया है।

....और महंगा हो सकता है ड्राई फ्रूट्स, ईरान-इजरायल तनाव और पाक रूट बंद होने से सप्लाई पर दोहरी मार

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत में ड्राई फरूट्स और नट्स की कीमतें और बढ़ सकती हैं। व्यापारियों ने

आशंका जताई है कि ईरान और इजरायल के बीच बढ़ते तनाव के कारण अफगानिस्तान और ईरान से होने वाली आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। भारत में अधिकांश बादाम, अंजीर, पिस्ता और किशमिश जैसे सूखे मेवे इन्हीं देशों से आते हैं। पहले से ही इन उत्पादों की कीमतों में 15 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो चुकी है, जिसकी एक वजह पाकिस्तान के रास्ते ट्रांसपोर्ट पर रोक लगना है। यह रोक 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद लगी थी। उद्योग से जुड़े लोगों ने सरकार से ईरान के जरिए आने वाले माल पर टैक्स की स्थिति स्पष्ट करने की मांग की है। जानकारों के मुताबिक, ईरान-इजरायल संघर्ष लंबा खिंच सकता है और अगर ऐसा हुआ तो सूखे मेवों की कीमतें और चढ़ सकती हैं। इसका असर आम उपभोक्ताओं पर पड़ेगा, जिन्हें त्योहारों या नियमित उपयोग के लिए इन उत्पादों को अधिक दामों पर खरीदना पड़ेगा।

दुर्लभ खनिज ऑक्साइड निर्यात पर पुनर्विचार

भारत-जापान समझौते की नई शर्तों पर मंथन

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत सरकार जापान के साथ 2012 में हुए दुर्लभ खनिज ऑक्साइड निर्यात समझौते की शर्तों पर नए सिरे से विचार कर रही है। यह कदम ऐसे समय उठाया जा रहा है जब घरेलू उद्योगों को चीन से मैग्नेट की आपूर्ति में रुकावट के चलते कच्चे माल की कमी का सामना करना पड़ रहा है। समझौते के तहत, भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई आईआरइएल इंडिया लिमिटेड जापान की टोयोटा त्सुशो को दुर्लभ खनिज ऑक्साइड निर्यात करती है, जिसे बाद में परिष्कृत कर मैग्नेट के रूप में जापान को आपूर्ति किया जाता है। इन मैग्नेट का उपयोग इलेक्ट्रिक वाहनों, पवन टर्बाइनों, एयरोस्पेस और रक्षा उपकरणों में होता है। सूत्रों के मुताबिक, अब भारत इस समझौते को अधिक संतुलित और पारस्परिक लाभकारी बनाना चाहता है। सरकार से जुड़े एक अधिकारी ने कहा,हमने सालों से निर्यात किया है, लेकिन बदले में

कुछ खास नहीं मिला। अब हमारी मांग है कि अगर जापान हमारे दुर्लभ खनिज ले रहा है, तो वह बदले में हमें मैग्नेट की आपूर्ति करे या तकनीक साझा करे।

घरेलू उद्योगों की मांग और रणनीतिक दबाव– वाहन उद्योग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा,भारत मैग्नेट उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं है और हमारी लगभग 30-40 प्रतिशत जरूरतें आयात से पूरी होती हैं। जापान इस मामले में हम पर निर्भर है, इसलिए हमें एक ऐसी साझेदारी चाहिए जिसमें तकनीकी सहयोग और स्थानीय उत्पादन दोनों शामिल हों। भारत सरकार की योजना है कि जापान के साथ मिलकर मैग्नेट निर्माण का संयुक्त ढांचा तैयार किया जाए। प्रस्ताव यह भी है कि जापान कुछ मैग्नेट खुद बनाए और शेष का उत्पादन भारत में किया जाए।

भविष्य की संभावनाएं और उत्पादन क्षमता

भारत में दुर्लभ खनिजों का मुख्य स्रोत मोनाजाइट रेत है, जो आंध्र प्रदेश, केरल, ओडिशा और तमिलनाडु में पाई जाती है। विशेष रूप से केरल की रेत अत्यधिक समृद्ध मानी जाती है। मोनाजाइट में नियोडिमियम और प्रेजोडिमियम जैसे खनिज मौजूद होते हैं, जो उच्च गुणवत्ता के मैग्नेट के लिए जरूरी हैं।
फिलहाल भारत का वार्षिक मोनाजाइट उत्पादन लगभग 5,000 टन है, जबकि आईआरइएल की परिष्कृत करने की क्षमता 10,000 टन तक है। सरकार ने 2032 तक इस क्षमता को 5 करोड़ टन तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है।

केशव टाइम्स
डिजिटल संस्करण

खेल

बक्सर, 16 जून 2025
website:keshavtimes.com
e-mail:keshavtimes1@gmail.com

भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने ऑस्ट्रेलिया को 2-1 से हराकर यूरोप में अपना अपराजेय अभियान जारी रखा

कोटिंच, एजेंसी। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने यूरोप दौरे में अपना अपराजेय अभियान जारी रखते हुए चौथे मैच में ऑस्ट्रेलिया को 2-1 से हरा दिया। मेजबान बेल्जियम को लगातार तीन मैच हराने के बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय टीम का मैच मुश्किल माना जा रहा था। लेकिन ऑस्ट्रेलिया पर जीत दर्ज कर भारतीय टीम ने अपनी मजबूती का एहसास कराया और बताया कि बेल्जियम के खिलाफ जीत कोई तुक्का नहीं थी। भारतीय महिला जूनियर टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उस दिन जीत हासिल की है, जिस दिन पुरुष और महिला सीनियर टीम को इसी टीम के खिलाफ 2-3 से हार का सामना करना पड़ा। ऑस्ट्रेलिया की जोसी लॉटन ने पांचवें मिनट में गोल कर बढ़त बनाई। यह गोल पेनल्टी कॉर्नर के जरिए हुआ। भारतीय टीम ने सिर्फ तीन मिनट बाद इसका जवाब दिया। नंदिनी ने आठवें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर के जरिए ही गोल कर स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया। पहले क्वार्टर के अंत में भारत की उप कप्तान हिना बानो ने 14वें मिनट में एक और पेनल्टी कॉर्नर का फायदा उठाकर गोल किया और टीम को 2-1 से आगे कर दिया। शेष तीन क्वार्टर में दोनों टीमों ने कई मौके बनाए, लेकिन कोई भी टीम गोल नहीं कर सकी। भारतीय टीम ने अपनी रक्षात्मक क्षमता को मजबूत बनाए रखी और निर्धारित समय सीमा में ऑस्ट्रेलिया को गोल का मौका न देते हुए एक शानदार जीत हासिल की। यह दौरे पर भारत की लगातार चौथी जीत है। इससे पहले भारत ने लगातार तीन मैच बेल्जियम के खिलाफ जीते थे। भारतीय टीम 17 जून को इस दौरे का अपना आखिरी मैच नीदरलैंड के खिलाफ खेलेगी। इस मैच में जीत के साथ भारतीय टीम अपने दौरे का समापन यादगार तरीके से करना चाहेगी।

सनराइजर्स हैदराबाद की मालकिन काव्या मारन की होने जा रही है शादी?

नई दिल्ली, एजेंसी। सनराइजर्स हैदराबाद की मालकिन काव्या मारन को लेकर एक खबर सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि काव्या जल्द ही शादी करने जा रही हैं. उनके होने वाले पति अनिरुद्ध रविचंदर हैं, जो फेमस म्यूजिक कंपोजर हैं. अब इस पर किसी और की नहीं बल्कि खुद अनिरुद्ध की प्रतिक्रिया आई है. उन्होंने इसकी सच्चाई सबको बता दी है. काव्या मारन सनराइजर्स हैदराबाद के मालिक की बेटी हैं, जो आईपीएल के ऑक्शन से लेकर टीम के हर मैच में नजर आती हैं. 2024 की रनर-अप हैदराबाद इस बार लीग स्टेज से ही बाहर हो गई थी. काव्या की बात करें तो इंस्टाग्राम या किसी अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उनका कोई आधिकारिक अकाउंट नहीं है. वह सिर्फ आईपीएल मैचों के दौरान ही नजर आती हैं. सोशल मीडिया पर दावा किया गया कि दोनों को एक डिनर डेट पर देखा गया. कहा गया कि पिछले 1 साल से काव्या और अनिरुद्ध डेट कर रहे हैं और जल्द ही शादी करने जा रहे हैं.

भारत-न्यूजीलैंड वनडे और टी-20 सीरीज के शेड्यूल का ऐलान

● 15 साल बाद इस शहर को मिली मेजबानी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने शनिवार (14 मई) को न्यूजीलैंड के खिलाफ जनवरी 2026 में होने वाली वनडे और टी20 सीरीज के लिए शेड्यूल का ऐलान कर दिया। वडोदरा 15 वर्षों से अधिक समय के बाद पहले पुरुष अंतरराष्ट्रीय मैच की मेजबानी करेगा। न्यूजीलैंड के भारत दौरे की शुरुआत 11 जनवरी को होने वाला पहला वनडे नवनिर्मित कोटम्बी स्टेडियम में होगा, जिसने पहले ही दिसंबर 2024 में भारत और वेस्टइंडीज के बीच तीन महिला वनडे मैचों की मेजबानी की। साथ ही वुमेंस प्रीमियर लीग 2025 के दौरान छह मैचों की मेजबानी की है। वडोदरा ने दिसंबर 2010 में रिलायंस स्टेडियम में अपना आखिरी पुरुष अंतरराष्ट्रीय मैच की मेजबानी की थी, भारत-न्यूजीलैंड एकदिवसीय मैच की मेजबानी की थी। वर्तमान भारतीय मुख्य कोच गौतम गंभीर उस मैच में प्लेयर ऑफ द मैच रहे थे। उन्होंने शतक बनाया था और विराट कोहली ने नाबाद 63 रन बनाए थे।

दिल्ली जीएम ओपन

अभिजीत गुप्ता ने चौथा खिताब जीतकर रचा इतिहास

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय ग्रैंडमास्टर अभिजीत गुप्ता 21वें दिल्ली इंटरनेशनल ओपन ग्रैंडमास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट (दिल्ली जीएम ओपन) 2025 के निर्विवाद चैंपियन बनकर उभरे। उन्होंने 10 में से 8.5 अंक हासिल कर एशिया के सबसे प्रतिष्ठित ओपन शतरंज इवेंट में रिकॉर्ड चौथा खिताब जीता। 36 वर्षीय गुप्ता ने 10 राउंड में अजेय रहते हुए शानदार प्रदर्शन किया। बेलारूसी जीएम मिहेल निकितेंको पर राउंड 9 में उनकी निर्णायक जीत ने उन्हें बढ़त दिलाई और आईएम अरोण्यक घोष के खिलाफ अंतिम राउंड में ड्रॉ ने उन्हें सीधे खिताब पर पहुंचा दिया। निकितेंको (2520, बेलारूस) 8 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहे, उन्होंने भारतीय जीएम दिप्तयान घोष (2573) को टाईब्रेक में पछाड़ दिया। घोष ने तीसरे स्थान पर कब्जा किया, उन्होंने अपने शानदार खेल और जीएम कार्तिक वेंकटरमन पर अंतिम राउंड में महत्वपूर्ण जीत से प्रभावित किया। 8 अंक पर समाप्त होने के बावजूद, आईएम अरोण्यक घोष और जीएम आदित्य एस सामंत टाईब्रेक पर क्रमशः चौथे और पांचवें स्थान पर रहे। शीर्ष 10 में अनुभवी पेशेवरों और उभरते सितारों का सम्मोहक मिश्रण था। वियतनाम के

जीएम गुयेन डुक होआ ने 7.5 अंकों के साथ छठा स्थान हासिल किया, उसके बाद भारत के शीर्ष वरीयता प्राप्त जीएम एसएल नारायणन 7वें स्थान पर रहे। अर्मेनियाई जीएम मैमिकोन घारिब्यान और मैनुअल पेट्रोसियन क्रमशः 8वें और 9वें स्थान पर रहे, दोनों ने 7.5 अंक हासिल किए। शीर्ष 10 में किर्गिस्तान के आईएम टोलोगोन टेगिन सेमेटेई भी शामिल रहे, जिन्होंने भी 7.5 अंक हासिल किए - जो टूर्नामेंट के विविधतापूर्ण और प्रतिस्पर्धी क्षेत्र को दर्शाता है।

दिल्ली शतरंज संघ द्वारा आयोजित, इस वर्ष के संस्करण में 20 से अधिक देशों के 2,500 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिसमें 24 ग्रैंडमास्टर शामिल थे, और इसमें 1.21 करोड़ रुपये का रिकॉर्ड पुरस्कार पूल था। नई दिल्ली में आयोजित इस टूर्नामेंट ने एक बार फिर शीर्ष और उभरते शतरंज खिलाड़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को मजबूत किया।

इस बीच, छतरपुर के टिवोली गार्डन में आयोजित श्रेणी सी में 1,250 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया और कुल पुरस्कार राशि 35 लाख रुपये थी। इस खंड के विजेता तमिलनाडु के दिनेश कुमार एच थे, जिन्होंने 4,00,000 रुपये का शीर्ष पुरस्कार जीता। उनके बाद नैतिक सेठी (3,00,000 रुपये) और सिबी एम (2,00,000 रुपये) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। अन्य उल्लेखनीय पुरस्कार विजेताओं में गीतेश फोगट, साई कृष्णा एस. और एजीएम योगेश कुमार गुप्ता शामिल थे, जो भारतीय शतरंज सर्किट की उल्लेखनीय जमीनी ताकत को दर्शाते हैं। इस ऐतिहासिक संस्करण के समापन के साथ, अभिजीत गुप्ता का चौथा खिताब न केवल एक व्यक्तिगत मील का पत्थर है, बल्कि वैश्विक शतरंज पारिस्थितिकी तंत्र में भारत के बढ़ते प्रभुत्व का प्रमाण भी है - शीर्ष और जमीनी स्तर दोनों पर।

चार गुणा 100 मीटर रिले स्पर्धा एशिया खेलों के लिए अहम खेलों में शामिल, भारतीय एथलेटिक्स महासंघ का फैसला

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत ने 2018 और 2022 एशियाई खेलों में चार गुणा 100 मीटर के रिले स्पर्धा के लिए टीमों नहीं भेजी थी। एएफआई के शीर्ष अधिकारियों को 19 सितंबर से चार अक्तूबर 2026 तक ऐची-नागोया में आयोजित होने वाले एशियाई खेलों में इन दोनों स्पर्धाओं में पदक की उम्मीद है। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने महत्वपूर्ण फैसला लेते हुए जापान में 2026 एशियाई खेलों के लिए पुरुषों और महिलाओं की चार गुणा 100 मीटर रिले को प्राथमिकता वाली स्पर्धाओं में शामिल किया है। एएफआई के शीर्ष अधिकारियों को 19 सितंबर से चार अक्तूबर 2026 तक ऐची-नागोया में आयोजित होने वाले एशियाई खेलों में इन दोनों स्पर्धाओं में पदक की उम्मीद है। भारत ने 2018 और 2022 एशियाई खेलों में चार गुणा 100 मीटर के रिले स्पर्धा के लिए टीमों नहीं भेजी थी। एएफआई के पूर्व अध्यक्ष आदिल सुमरिवाला ने कहा, एएफआई ने 2026 एशियाई खेलों के लिए पुरुष और महिला चार गुणा 100 मीटर रिले टीमों को प्राथमिकता वाली स्पर्धा में शामिल किया है। रिले टीमों द्वारा लगातार शानदार प्रदर्शन भविष्य के लिए शुभ संकेत है। इस वर्ष अप्रैल में गुरिंदरवीर सिंह, अनिमेष कुजूर, मणिकांत होबलीधर और अमलान बोरगोहेन की चार गुणा 100 मीटर रिले टीम ने 38.69 सेकेंड का समय लेकर 2010 दिल्ली राष्ट्रमंडल खेलों में बनाए गए 38.89 सेकेंड के एक दशक पुराने राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ दिया था। पिछले एशियाई खेलों में चीन (38.29 सेकेंड), जापान (38.44 सेकेंड), दक्षिण कोरिया (38.74 सेकेंड) ने शीर्ष तीन में जगह बनाई थी। महिलाओं की चार गुणा 100 मीटर रिले में अभिनय राजराजन, श्राबनी नंदा, स्नेहा एसएस और नित्या गंधे की टीम ने हाल ही में दक्षिण कोरिया के गुमी में आयोजित एशियाई चैंपियनशिप में 43.86 सेकेंड का समय लेकर रजत पदक जीता।

स्टीव स्मिथ ने उंगली की चोट पर दिया अपडेट, वापसी की योजना का किया खुलासा

लंदन, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने अपनी चोट और क्रिकेट में वापसी पर अपडेट दिया है। आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के दौरान उन्हें उंगली में चोट लग गई थी। स्मिथ को उम्मीद है कि वे वेस्टइंडीज के खिलाफ कैरेबियाई दौरे पर होने वाली तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में खेलेंगे। स्टीव स्मिथ के कैच लेने के प्रयास में अपनी उंगली में चोट लग गई और बाद में तीसरे दिन के खेल के दौरान अपनी दाहिनी छोटी उंगली में कम्पाउंड डिस्लोकेशन के बाद उन्हें पास के अस्पताल में एक्स-रे के लिए भेजा गया। स्मिथ के लिए प्रारंभिक रिकवरी काफी अच्छी रही है और 36 वर्षीय खिलाड़ी सर्जरी से बच गए। उनके वेस्टइंडीज के खिलाफ 25 जून से शुरू होने वाली आगामी तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में खेलने का मौका है।

स्मिथ ने कहा, मैं अब आठ सप्ताह तक स्प्लिंट में रहूंगा और शायद कुछ सप्ताह में मैं इसके साथ खेल सकूं। यह मेरी कार्यक्षमता और मैं क्या कर सकता हूं, इस पर निर्भर करेगा, इसलिए यह शायद सबसे अच्छा परिणाम था जिसकी मैं उम्मीद कर सकता था। जब दक्षिण अफ्रीका के कप्तान टेम्बा बावुमा ने बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क की गेंद पर गेंद को घेरे में ले लिया, तब स्मिथ हेलमेट पहने हुए पहली स्लिप में खड़े थे और ऑस्ट्रेलिया के इस अनुभवी खिलाड़ी ने उस समय बावुमा के केवल दो रन पर होने के बावजूद मौका गंवा दिया।

बेटी का सपना, पिता का त्याग, अंडे की रेहड़ी लगा बनाया क्रिकेटर, बनी पंजाब टीम की कप्तान

नई दिल्ली, एजेंसी। मजबूत इरादे, कड़ी मेहतन और अपनो का साथ यह कुछ ऐसा मिश्रण है जो सफलता की नई कहानी लिख सकता है। फाजिल्का की प्रियंका रानी जो पंजाब अंडर-23 क्रिकेट टीम की कप्तान बन चुकी है, की कहानी भी कुछ ऐसी है जो उनके मजबूत इरादे, कड़ी मेहतन और पिता टेक चंद की तपस्या ने कर दिखाया है। अंडे की रेहड़ी लगाकर बेटी के क्रिकेट के सपने के लिए उसने अपनी ख्वाहिशों को भुला दी। ताकि बेटी के लिए क्रिकेट किट, जूते या कोचिंग की फीस जुटाई जा सके। फाजिल्का के जटियां मोहल्ले की गलियों से निकलकर राष्ट्रीय क्रिकेट के मंच तक पहुंची प्रियंका की कहानी प्रेरणादायक है। उनके पिता टेक चंद ने एक समाचार पत्र को बताया कि जब उन्होंने बेटी की आंखों में क्रिकेट के लिए वही चमक देखी, जो कभी खुद के भीतर थी तो उन्होंने ठान लिया कि बेटी को पीछे नहीं हटने देंगे। उन्होंने बताया जब प्रियंका को पहली बार 18,000 रुपए की महंगी क्रिकेट किट की जरूरत पड़ी तो घर में हालात अच्छे नहीं थे। ऐसे में उन्होंने तीन घंटे अतिरिक्त रेहड़ी लगाई, ताकि बेटी की जरूरत पूरी हो सके। कभी जूतों के लिए तो कभी आने-जाने के खर्च के लिए उन्हें ओवरटाइम करना पड़ा।

टेक चंद ने कहा कि लोगों ने कहा कि बेटा है, उसी पर ध्यान दो, लेकिन मैंने प्रियंका को ही अपना बेटा मान लिया था। दो साल पहले सड़क हादसे में पैर फ्रैक्चर हुआ तो डाक्टरों ने आराम की सलाह दी। लेकिन बेटी की ट्रेनिंग ना रूके इसलिए रेहड़ी लगाना बंद नहीं किया। यह त्याग ही था, जिसने प्रियंका को पंजाब क्रिकेट का चेहरा बना दिया।

- **महिला प्रीमियर लीग अगला लक्ष्य** - बरनाला क्रिकेट एसोसिएशन की ओर से खेल रही प्रियंका चार साल से वहां का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। उनके खेल को पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन का भी समर्थन मिला है। जनवरी 2025 में बीसीसीआइ की अंडर-23 इंटर स्टेट टी-20 प्रतियोगिता में उन्होंने कप्तानी करते हुए सबका ध्यान खींचा। अब वह वूमेन प्रीमियर लीग में जगह बनाकर देश के लिए खेलने का सपना देख रही है।
- **मेरे पापा मेरे हीरो: प्रियंका** - प्रियंका अपने पिता को अपना हीरो मानती हैं। उन्होंने कहा पापा ने कभी मुझे बेटे से कम नहीं समझा। बचपन से लेकर आज तक उन्होंने मेरी हर जरूरत पूरी की। जब-जब मैं टूटी, उन्होंने संभाला। मेरी पहली किट हो या पहला टूर्नामेंट, सब पापा की वजह से ही संभव हो सका। मेरी कोशिश है कि एक दिन विश्व में अपने पापा का नाम रोशन करू।

बोरसे-बाबूता की जोड़ी ने वर्ल्डकप में गोल्ड जीता

● 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड इवेंट में पहले स्थान पर रहे; भारत तीसरे स्थान पर

नई दिल्ली, एजेंसी। बोरसे और अर्जुन बाबूता की भारतीय जोड़ी ने वर्ल्ड कप में 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड इवेंट में चीनी जोड़ी को 17-7 से हरा कर गोल्ड मेडल जीता। आर्य बोरसे और अर्जुन बाबूता की भारतीय जोड़ी ने शनिवार को बर्लिन में खेले जा रहे ढ्रुस्स्न(इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट्स फेडरेशन) वर्ल्ड कप में भारत को दूसरा गोल्ड दिलाया। उन्होंने 10 मीटर एयर राइफल के मिक्स्ड इवेंट में चीन के जिफेई वांग और लिहाओ शेंग को 17-7 से हराकर गोल्ड मेडल जीता। नॉर्वे के जीनेट हेग ड्यूस्टैड और जॉन-हरमन हेग ने के सेगेन मैडालेना और पीटर मैथ्यू फियोरी को 16-14 से हरा कर ब्रॉन्ज मेडल जीता। बोरसे और बाबूता क्वालिफिकेशन में 635.2 के साथ फाइनल में अपना स्थान पक्का किया बोरसे और बाबूता ने पहले 635.2 के क्वालिफिकेशन स्कोर के साथ फाइनल के लिए स्थान पक्का किया। वह दूसरे स्थान पर रहे। बबूता ने क्वालिफिकेशन में

317.7 का स्कोर बनाया जबकि बोरसे ने 317.5 का स्कोर कर। अन्य भारतीय जोड़ी, एलावेनिल वलारिवन और अंकुश जाधव, 631.8 के स्कोर के साथ क्वालिफिकेशन में छठे स्थान पर रहे। इस साल की शुरुआत में, बोरसे ने पेरू के लीमा में वर्ल्ड कप में 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड टीम इवेंट में रुद्राक्ष पाटिल के साथ मिलकर सिल्वर मेडल हासिल किया था। भारत पॉइंट टेबल में तीसरे स्थान पर बर्लिन में खेले जा रहे वर्ल्ड कप में भारत ने चार मेडल के साथ पॉइंट टेबल में तीसरे स्थान पर है। भारत के लिए आर्य बोरसे और अर्जुन बाबूता की जोड़ी ने जहां 10 मीटर राइफल मिक्स्ड इवेंट में गोल्ड जीता, वहीं सुरुचि ने 10 मीटर एयर पिस्टल में गोल्ड जीता। जबकि सिफ्ट कौर समरा और एलावेनिल वलारिवन ने अपने-अपने व्यक्तिगत इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीते थे।

17 जून से क्रिकेट में होंगे बड़े बदलाव, आईसीसी ने कर दी घोषणा

नई दिल्ली, एजेंसी। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने पुरुषों के अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के लिए खेल की परिस्थितियों में बड़े बदलावों की घोषणा की है। टेस्ट मैचों के लिए 17 जून, वन-डे इंटरनेशनल के लिए 2 जुलाई और टी20 इंटरनेशनल के लिए 10 जुलाई को नियम परिवर्तन लागू किए जाएंगे। इन बदलावों की सिफारिश आईसीसी पुरुष क्रिकेट समिति ने की थी और रिपोर्ट के अनुसार मुख्य कार्यकारी समिति ने इन्हें मंजूरी दी थी। मुख्य अपडेट में ओडीआई में गेंदों के इस्तेमाल के बारे में एक नया नियम और कन्कशन सब्सटीट्यूट के लिए एक अपडेटेड प्रोटोकॉल शामिल है।

वनडे मैचों में 34 ओवर के बाद सिर्फ एक गेंद का इस्तेमाल - अब तक वनडे में दोनों छोर से दो नई गेंदों का इस्तेमाल किया जाता रहा है। लेकिन नए नियम के तहत 34वें ओवर के बाद बदलाव होगा। पारी की शुरुआत से लेकर 34वें ओवर के अंत तक दो गेंदों का इस्तेमाल किया जाएगा, दोनों छोर से एक-एक। हालांकि 35वें ओवर से लेकर पारी के अंत तक, गेंदबाजी टीम द्वारा दो में से केवल एक गेंद का चयन किया जाएगा और दोनों छोर से उसका इस्तेमाल किया जाएगा। अगर मैच शुरू होने से पहले 25 ओवर या उससे कम का हो जाता है, तो शुरू से केवल एक नई गेंद का इस्तेमाल

किया जाएगा। बल्लेबाजी और गेंदबाजी के बीच बेहतर संतुलन लाने के लिए आईसीसी ने यह बदलाव किया है।

सभी प्रारूपों में कन्कशन रिप्लेसमेंट के लिए नए नियम - आईसीसी ने कन्कशन सब्सटीट्यूट नियम को भी संशोधित किया है ताकि इसे और अधिक संरचित बनाया जा सके और मैचों के दौरान किसी भी तरह की उलझन से बचा जा सके। अब से टीमों को खेल शुरू होने से पहले मैच रेफरी को पांच संभावित सब्सटीट्यूट खिलाड़ियों की सूची सौंपनी होगी। इस सूची में प्रत्येक विशिष्ट भूमिका के लिए एक खिलाड़ी, एक बल्लेबाज, एक विकेटकीपर, एक तेज गेंदबाज, एक स्पिनर और एक ऑलराउंडर शामिल होना चाहिए। यह बदलाव हाल के मैचों में कुछ विवादास्पद क्षणों के बाद आया है। उदाहरण के लिए इस साल जनवरी में भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ एक टी20आई मैच के दौरान बल्लेबाजी ऑलराउंडर शिवम दुबे की जगह गेंदबाजी ऑलराउंडर हर्षित राणा को शामिल किया था। राणा ने तीन विकेट लिए जिससे इस तरह के प्रतिस्थापन की निष्पक्षता के बारे में बहस छिड़ गई। नया नियम ऐसी स्थितियों को रोकेगा क्योंकि यह सुनिश्चित किया जाएगा कि केवल समान विकल्प की अनुमति दी जाए। यदि नामित कन्कशन विकल्प भी घायल हो जाता है, तो मैच रेफरी मूल पांच में से किसी एक प्रतिस्थापन को मंजूरी दे सकता है, लेकिन केवल तभी जब वह उसी खेल भूमिका से मेल खाता हो।

तलाक को लेकर

बॉलीवुड के भाईजान ने बताया कड़वा सच

हाल ही में बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें उन्होंने तलाक और रिश्तों को लेकर बात की है। द ग्रेट इंडियन कपिल शो का तीसरा सीजन जल्द शुरू होने वाला है। लेकिन शो से जुड़ा एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी वायरल हो रहा है, जिसमें सलमान खान स्टेज पर नजर आ रहे हैं। वीडियो में अभिनेता ने आज के समय में आए दिन तलाक और रिश्तों में तकरार की खबरों को लेकर टिप्पणी की है।

छोटी-छोटी बातों पर हो जाता है तलाक

सोशल मीडया पर वायरल हो रहे वीडियो में सलमान खान ने कहा, 'पहले लोग एक दूसरे के लिए त्याग करते थे और उन्हें समझते थे। अब रात को एक टांग आ जाती है तो उस पर तलाक हो जाता है। खर्राटे ले लेते हैं तो तलाक हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर लोग तलाक का फैसला ले लेते हैं। इतना ही नहीं, उसके बाद वो आधे पैसे लेकर भी चली जाती हैं।' अभिनेता के इतना कहने पर शो में मौजूद अर्चना पूरन सिंह नवजोत सिंह सिद्धू खूब ठहाके लगाते नजर आते हैं।

नेटिजंस की आ रहीं प्रतिक्रियाएं

सलमान खान के इस वीडियो के वायरल होते ही इस पर सोशल मीडिया यूजर्स के रिएक्शंस आने लगे हैं। एक यूजर ने लिखा कि सिकंदर भाई ने करारा जवाब दिया है। वहीं एक यूजर ने बोला कि अभिनेता अपने करियर के शुरुआत से ही अपने विचारों को लेकर स्पष्ट रहे हैं, लेकिन उन्होंने कभी समझदार होने का दिखावा नहीं किया। इसके अलावा एक अन्य यूजर ने लिखा कि सही है आजकल के विवाह और रिश्ते ऐसे ही हैं।

कब आ रहा कपिल शर्मा शो का नया सीजन?

द ग्रेट इंडियन कपिल शर्मा का तीसरा सीजन 21 जून से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगा। इस शो में इस बार सुनील ग्रोवर, कृष्णा, कीकू शारदा, अर्चना पूरन सिंह और नवजोत सिंह सिद्धू नजर आने वाले हैं।

रजनीकांत की कुली में नजर आएंगे आमिर खान

बोले मैं उनका बहुत बड़ा फैन हूं

सुपरस्टार रजनीकांत की बहुप्रतीक्षित फिल्म कुली में अब आमिर खान भी नजर आएंगे। आमिर ने खुद एक इंटरव्यू में इस बात की पुष्टि की है कि वह फिल्म में कैमियो कर रहे हैं और इसके पीछे की वजह है रजनीकांत के प्रति उनका जबरदस्त सम्मान और दीवानगी। जब एक फैन ने आमिर से कुली में उनके कैमियो को लेकर सवाल किया, तो उन्होंने खुलकर जवाब दियाङ्क मैंने इसे बहुत एन्जॉय किया। मैं रजनी सर का बहुत बड़ा फैन हूं... बेहद बड़ा। जब लोकेश (कनागराज) ने कहा कि यह रजनी सर की फिल्म है और उन्हें मेरे कैमियो की जरूरत है, मैंने कहाङ्क हो गया!

स्क्रिप्ट नहीं सुनी, सिर्फ कहा कि जो भी रोल हो, मैं कर रहा हूं।

फिल्म कुली में है धमाकेदार स्टारकास्ट

फिल्म 'कुली' एक तमिल एक्शन-थ्रिलर है जिसका निर्देशन लोकेश कनागराज कर रहे हैं और निर्माण सन पिक्चर्स द्वारा किया जा रहा है। इस फिल्म में रजनीकांत मुख्य भूमिका में नजर आएंगे और उनके साथ नजर आएंगे नागार्जुन, श्रुति हासन, सौबिन शाहिर, सत्यराज और उपेंद्र जैसे बेहतरीन कलाकार। स्टारकास्ट की यह शानदार फेहरिस्त फिल्म को और भी खास बना रही है।

फिल्म का टीज़र पहले ही दर्शकों के बीच सनसनी मचा चुका है। इसमें रजनीकांत को एक फैक्ट्रीनुमा सेटअप में विलनों से लड़ते हुए दिखाया गया है। टीज़र को खास तौर पर मोनोक्रोम और गोल्ड टोन में दिखाया गया, जो इसकी स्टाइलिंग को अलग बनाता है। दर्शकों ने इस पर बेहद सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है।

फिल्म का म्यूजिक और तकनीकी पक्ष भी दमदार

तकनीकी रूप से भी 'कुली' बेहद मजबूत नजर आ रही है। फिल्म का संगीत अनिरुद्ध रविचंदर ने तैयार किया है, जबकि सिनेमैटोग्राफी का जिम्मा गिरीश गंगाधरन ने संभाला है और एडिटिंग फिलोमिन राज द्वारा की जा रही है।

'सितारे ज़मीन पर' को लेकर आमिर का भावनात्मक पक्ष

हाल ही में आमिर खान ने बताया कि 'सितारे ज़मीन पर' को मिली ठंडी प्रतिक्रिया ने उन्हें भावनात्मक रूप से झकझोर दिया। इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में उन्होंने खुलासा किया कि उन्होंने निर्देशक आर.एस. प्रसन्ना से फिल्म के लिए फरहान अख्तर को कास्ट करने की भी सिफारिश की थी। लाल सिंह चड्ढा के बाद मैं डिप्रेशन में चला गया था। वो झटका मेरे लिए बहुत बड़ा था क्योंकि मुझे खुद फिल्म पसंद आई थी।
मुझे लगा लोग भी पसंद करेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आमिर खान और रजनीकांत जैसे दो दिग्गजों का एक साथ स्क्रीन पर आना दर्शकों के लिए किसी ट्रीट से कम नहीं है। 'कुली' अब और भी ज्यादा चर्चित हो गई है और फिल्म प्रेमियों को इस मेगा प्रोजेक्ट का बेसब्री से इंतजार रहेगा।

इम्तियाज अली एक बार फिर करेंगे दिलजीत दोसांझ के साथ काम, अगले साल बैसाखी पर होगी फिल्म रिलीज

फिल्म निर्माता इम्तियाज अली अमर सिंह चमकीला के बाद एक बार फिर दिलजीत दोसांझ के साथ एक और फिल्म बनाने को तैयार हैं। फिल्म प्यार और लालसा की कहानी होगी और साल 2026 में रिलीज होगी। इस फिल्म में दिलजीत के साथ नसीरुद्दीन शाह, वेदांग रैना और शरवरी जैसे सितारे स्क्रीन स्पेस साझा करेंगे। फिल्म की शूटिंग अगस्त 2025 से शुरू होगी और 2026 में बैसाखी पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी। लेखक-निर्देशक इम्तियाज अली ने एक बयान में कहा- तुम मेरे पास होते हो गोया, जब कोई दूसरा नहीं होता - मोमिन। क्या वाकई प्यार खो सकता है? क्या किसी के दिल से घर छीना जा सकता है? अली ने बताया कि फिल्म बहुत बड़ा दिल रखती है। डायरेक्टर ने आगे कहा, इसका कैनवास बड़ा है, फिर भी यह बहुत निजी है। यह एक लड़के और लड़की की कहानी है, हमें उम्मीद है कि अगले साल आपके नजदीकी थिएटर में यह कहानी आपको काफी पसंद आएगी। फिल्म के बारे में अभी सारी बातों को गुप्त रखा गया है। यह पहली बार होगा जब दिलजीत, वेदांग और शरवरी के साथ स्क्रीन शेयर करते नजर आएंगे। वहीं, इम्तियाज, ए.आर. रहमान और इरशाद कामिल की जादुई तिकड़ी एक बार फिर साथ में काम करेगी। इससे पहले भी तीनों ने रॉकस्टार, हाईवे, तमाशा, अमर सिंह चमकीला में साथ काम किया है। फिल्म निर्माता और दिलजीत के साथ काम करने के बारे में बात करें तो, दोनों ने 2024 की ब्लॉकबस्टर फिल्म अमर सिंह चमकीला में साथ काम किया था, यह एक बायोग्राफिकल ड्रामा फिल्म थी, जो कि संगीतकार अमर सिंह चमकीला के जीवन पर आधारित थी। इसका निर्देशन, निर्माण और सह-लेखन इम्तियाज अली ने किया।

बेपरवाई के जरिए लोगों को मेरा मैसेज, दुनिया के लिए खुद को मत बदलोः जोनिता गांधी

प्लेबैक सिंगर जोनिता गांधी ने अपना नया गाना बेपरवाई रिलीज किया है। उन्होंने बात करते हुए इस गाने के बारे में विस्तार से बताया। सिंगर ने बताया कि यह गाना उस एहसास को दिखाता है जब इंसान बेफिक्र हो जाता है, उसे इसकी परवाह बिल्कुल भी नहीं होती कि दुनिया उसके बारे में क्या सोचती है। जोनिता गांधी ने बात करते हुए बताया कि उनका गाना बेपरवाई कैसे बना। उन्होंने कहा, इस गाने का विचार टोरंटो में एक म्यूजिक सेशन के दौरान आया था। उस दिन मेरा मूड कुछ ऐसा था, मैं दुनिया को लेकर थोड़ी निराशा और चिढ़ सी महसूस कर रही थी। मुझे लग रहा था कि हम कई बार दूसरों की राय में उलझ जाते हैं, और खुद को भूल जाते हैं। फिर मेरे मन में ख्याल आया कि अब और नहीं, अब बेफिक्र होकर जीना है, बिना इस डर के कि लोग क्या कहेंगे। इसी सोच से गाने का कोरस बना, जो कहता है, अब मैं बस बेपरवाह हूं, मैं यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि यह गाना मेरी पहचान से जुड़ा हो, ताकि सुनने वालों को लगे कि हां, ये एक जोनिता गांधी का गाना है। जोनिता गांधी ने आगे कहा, इस गाने को मैंने अपने अंदाज में गाया और पेश किया है। इसमें मैंने अपनी पहचान और गाने की खास स्टाइल को बनाए रखा, ताकि यह गाना भी बाकी उनके गानों की तरह ही लगे। गाने में भी मैंने सॉफ्ट टोन का इस्तेमाल किया, जैसे मैं हर गाने में करती हूं। इस गाने को बनाने में मेरे साथ म्यूजिक प्रोड्यूसर एरिजा ने काम किया। मैंने पहले भी उनके साथ कई बार काम किया है। उन्होंने गाने के म्यूजिक को इस तरह तैयार किया, जो हर एक शब्द के फील को बढ़ाता है। जोनिता ने बताया कि उनका गाना पूरी तरह से इलेक्ट्रॉनिक तरीके से बनाया गया है। इसमें कोई लाइव इंस्ट्रूमेंट, जैसे गिटार, तबला, ड्रम वगैरह इस्तेमाल नहीं किए गए हैं। इसमें म्यूजिक और बीट्स कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर से तैयार किए गए हैं। उन्होंने कहा, जहां तक मुझे पता है, इस गाने में कोई भी लाइव इंस्ट्रूमेंट का इस्तेमाल नहीं हुआ है।

मेट्रो... इन दिनों में हर किसी को दिखेगा अपनी जिंदगी का अक्स

अभिनेता आदित्य रॉय कपूर अपनी आने वाली फिल्म मेट्रो... इन दिनों की रिलीज का इंतजार कर रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि दर्शक इस फिल्म की शामिल कहानियों से भावनात्मक रूप से जुड़ेंगे। आदित्य का कहना है कि अगर लोग इस फिल्म से खुद को जोड़ पाते हैं और इसे पसंद करते हैं, तो यह फिल्म की सफलता होगी। साथ ही उन्होंने दावा किया कि लोगों को फिल्म में अपनी कहानी जरूर मिलेगी। मेट्रो... इन दिनों साल 2007 में आई फिल्म लाइफ इन ए... मेट्रों का सीक्वल है, जिसने बॉक्स ऑफिस पर जमकर धमाल मचाया था।

आईएएनएस को दिए इंटरव्यू के दौरान जब आदित्य से पूछा गया कि उनकी आने वाली फिल्म से क्या उम्मीदें हैं, तो उन्होंने कहा, सच कहूं तो, जब भी आप कोई फिल्म बनाते हैं, तो उम्मीद होती है कि सब लोग उसे पसंद करें और प्यार करें। लेकिन मैं नतीजों के बारे में ज्यादा नहीं सोचता। आदित्य ने कहा, सबसे बड़ी बात यह है कि लोग फिल्म को समझें और उससे अपने आप को जोड़ पाएं। उन्होंने कहा, उम्मीद है कि लोग इन कहानियों से जुड़ पाएंगे। इस फिल्म की खास बात यह है कि हर किसी को कोई न कोई कहानी अपनी लगती है। फिल्म का टैगलाइन भी है- आपकी अपनी कहानी। एक्टर का दावा है कि हर किसी को फिल्म की किसी न किसी कहानी में अपनी जिंदगी का अक्स जरूर दिखेगा। आदित्य ने कहा, फिल्म में ऐसी कोई न कोई कहानी होगी, जिससे आप खुद को जोड़ पाएंगे। मैं बस उम्मीद करता हूं कि लोग फिल्म से जुड़ें और इसे पसंद करें।

किताबों से नहीं, असली अभ्यास से बेहतर होती है एक्टिंगः सौंदर्या शर्मा

हाउसफुल 5 की एक्ट्रेस सौंदर्या शर्मा का मानना है कि एक्टिंग सीखने का सबसे अच्छा तरीका है असलियत में एक्टिंग करना। आईएएनएस से बात करते हुए उन्होंने कहा कि चाहे कितनी भी किताबें पढ़ लो या बातें सुन लो, लेकिन अभिनय की समझ और कला सिर्फ अभ्यास से ही बेहतर होती है। सौंदर्या ने इंटरव्यू में बताया कि उन्होंने थिएटर और सिनेमा, दोनों में काम किया है। साथ ही दोनों जगहों के अनुभव को साझा किया।

सौंदर्या ने दिल्ली के नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) में वर्कशॉप किया है। इसके अलावा, उन्होंने अमेरिका के लॉस एंजेलिस में ली स्ट्रासबर्ग थिएटर में पढ़ाई की और वहां एनवाईएफए से एक्टिंग का कोर्स भी किया है। उन्होंने कहा कि वह थिएटर और सिनेमा दोनों में अभी नई हैं। वह अभी भी सीख रही हैं कि इस इंडस्ट्री में काम कैसे होता है और चीजें कैसे चलती हैं। बात करते हुए एक्ट्रेस ने कहा, थिएटर और सिनेमा पर काम करना अलग होता है। थिएटर में जब आप एक्टिंग करते हो, तो आपको स्टेज के आखिरी कतार में बैठे लोगों तक अपनी बात पहुंचानी होती है। वहां हर भावना, हर किरदार को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना होता है। उन्होंने आगे कहा, भावनाएं तो वही होती हैं, लेकिन उन्हें दिखाने का तरीका अलग होता है। हाउसफुल 5 पूरी तरह से अलग फिल्म है। इसमें ज्यादा अलग-अलग भावनाएं नहीं हैं। इसमें खुशी और मस्ती का माहौल रहता है जैसे रोजमर्रा की जिंदगी में होता है। लेकिन हां, जब मैं और काम करूंगी, तो बहुत कुछ सीख पाऊंगी। इंसान सिर्फ काम करके ही अच्छा बनता है। एक्टिंग सीखने से नहीं, बल्कि असलियत में करने से आती है और अभ्यास से बेहतर होती है। यह मेरी राय है। इंटरव्यू में सौंदर्या ने बताया था कि उनके लिए लाल परी का खिताब क्या मायने रखता है। उन्होंने अपने जवाब में कहा था, जब कहीं से कोई अचानक कहता है, अरे देखो, लाल परी सौंदर्या, तो यह सुनकर अच्छा लगता है। इस टाइटल ने मुझे नई पहचान दी है। इससे ऐसा लगता है जैसे लोग मेरे काम को सच में पसंद कर रहे हैं। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं। जब उनके लाल परी टाइटल की तुलना मलाइका अरोड़ा की मुन्नी बदनाम और कैटरीना कैफ की शीला की जवानी से की गई थी, तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा था, आप जिन दो कलाकारों की बात कर रहे हैं, वे मेरी सीनियर्स हैं। उनसे मेरी तुलना होना बहुत बड़ी बात है। मेरा सफर तो अभी शुरू ही हुआ है। मैं ज्यादा अच्छा काम करना चाहती हूं, ताकि लोगों से मुझे ऐसे ही ढेर सारा प्यार मिलता रहे।

कार्तिक आर्यन की फिल्म चंदू चैंपियन शंघाई फिल्म फेस्टिवल में पहुंची

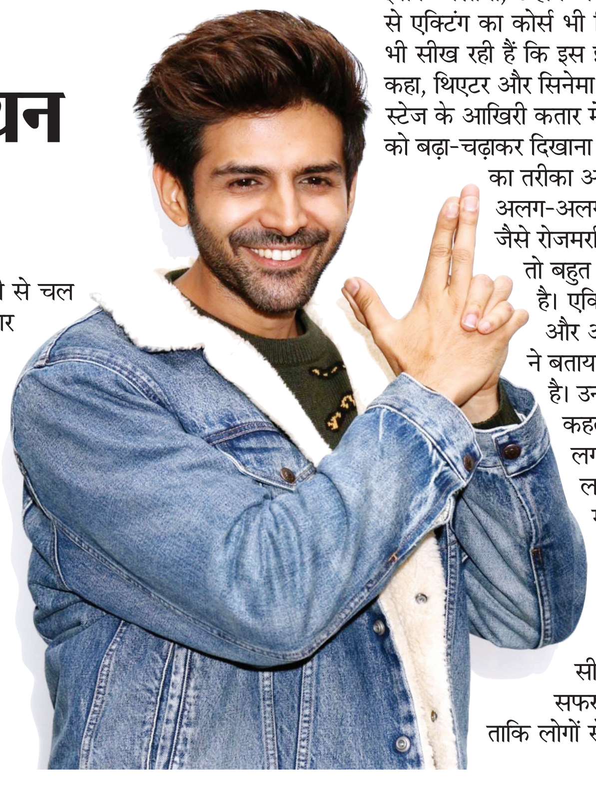

फिल्म के निर्देशक कबीर खान ने इंस्टाग्राम पर लिखा, एक साल और चैंपियन अभी भी मजबूती से चल रहा है। चंदू चैंपियन को शंघाई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के लिए चुना गया और इसने दो पुरस्कार जीत लिए। कबीर खान निर्देशित फिल्म में कार्तिक आर्यन ने भारत के पहले पैरालिंपिक स्वर्ण पदक विजेता मुरलीकांत पेटकर की भूमिका निभाई थी, जिसने हाल ही में संपन्न न्यूयॉर्क इंडी फिल्म फेस्टिवल अवार्ड्स में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता, जबकि कार्तिक ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीता। यह बायोग्राफिकल स्पोर्ट्स ड्रामा एक असाधारण व्यक्ति की कहानी है, जो अडिग दृढ़ संकल्प के साथ लगातार चुनौतियों का सामना करता है। उनकी भावना ऐतिहासिक उपलब्धि की राह पर ले जाती है। कबीर की बात करें तो उन्होंने डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में काम करके अपना करियर शुरू किया और फिर 2006 में एडवेंचर थ्रिलर काबुल एक्सप्रेस के साथ फीचर फिल्म निर्देशन में कदम रखा। उन्हें न्यूयॉर्क, एक था टाइगर, बजरंगी भाईजान और 83 के निर्देशन के लिए जाना जाता है। इस बीच, कार्तिक वर्तमान में अभिनेत्री अनन्या पांडे के साथ तू मेरी मैं तेरा, मैं तेरा तू मेरी की शूटिंग कर रहे हैं, जो 13 फरवरी, 2026 को सिनेमाघरों में आने वाली है। करण जौहर ने 2 जून को अपने इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर शेयर की, जिसमें कार्तिक और अनन्या भारतीय पासपोर्ट के पीछे एक-दूसरे को देखते हुए नजर आ रहे हैं। उन दोनों की यह जोड़ी साल 2019 में रिलीज हुई फिल्म पति पत्नी और वो के बाद दर्शकों को देखने को मिलेगी। दोनों की आगामी फिल्म 13 फरवरी 2026 को सिनेमा घरों में आएगी।

-साभार एजेंसी